आर.एन.आई. पंजीयन क्रमांक 45215/86

ज्योतिष ,स्वास्थ्य एवं सुसंस्कार की शिक्षाप्रद पत्रिका

जीवन वैभव

स्थापना वर्ष : 37 वर्ष अंक : 1 जनवरी से मार्च 2023

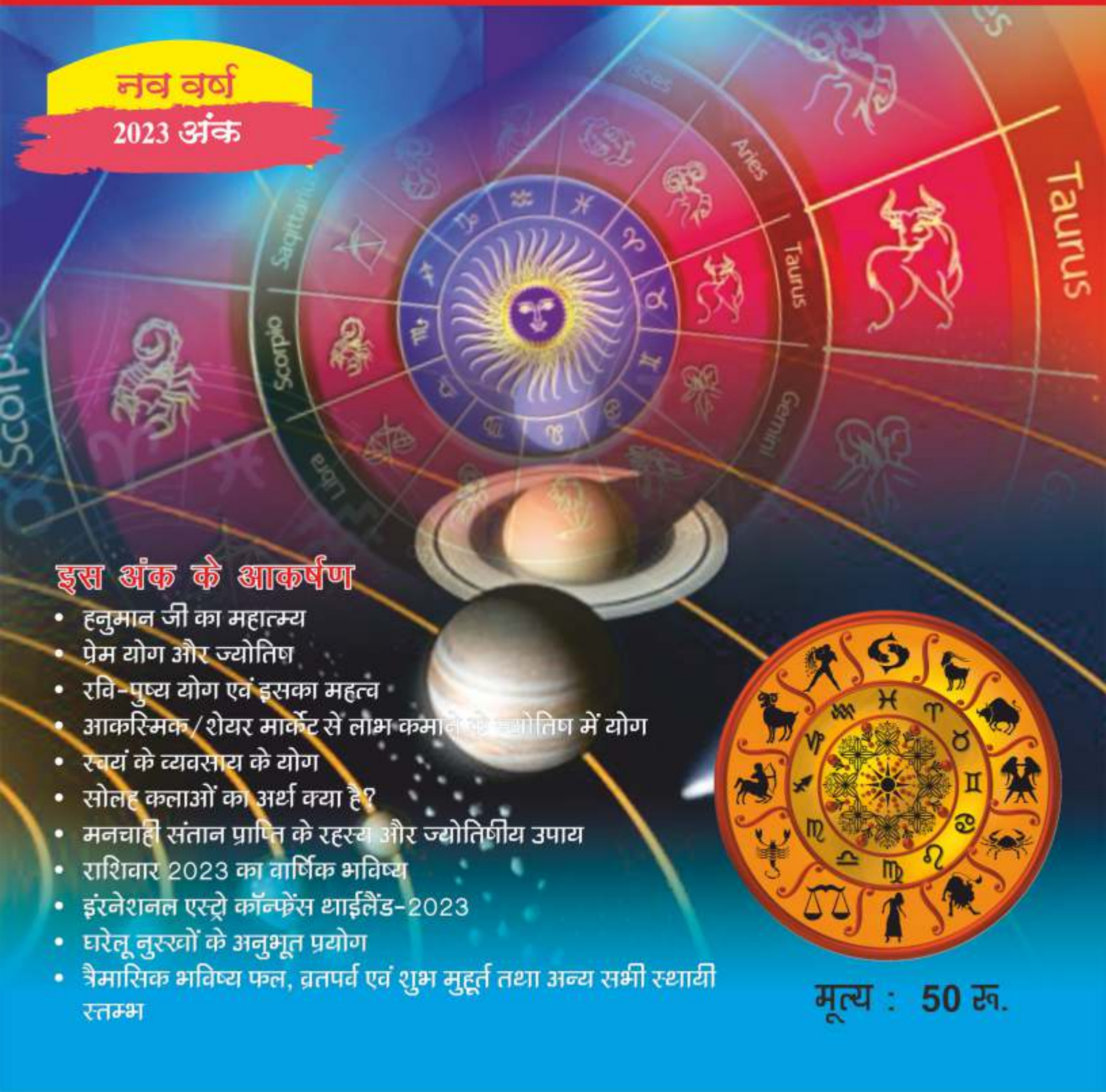

इस अंक के आकर्षण

- हनुमान जी का महात्म्य
- प्रेम योग और ज्योतिष
- रवि-पुष्य योग एवं इसका महत्व
- आकस्मिक/शेयर मार्केट से लाभ कमाने के ज्योतिष में योग
- स्वयं के व्यवसाय के योग
- सोलह कलाओं का अर्थ क्या है?
- मनचाही संतान प्राप्ति के रहस्य और ज्योतिषीय उपाय
- राशिवार 2023 का वार्षिक भविष्य
- इंटरनेशनल एस्ट्रो कॉन्फ्रेंस थाईलैंड-2023
- घरेलू नुस्खों के अनुभूत प्रयोग
- त्रैमासिक भविष्य फल, व्रतपर्व एवं शुभ मुहूर्त तथा अन्य सभी स्थायी स्तम्भ

मूल्य : 50 रु.

जीवन मूल्य और नैतिक शिक्षा

लेखक – डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

मूल्य 70 रूपये

अपनी प्रति सुरक्षित करावें –

फलित ज्योतिष शिक्षा के लिए

पाराशरी ज्योतिष फलित कोर्स

बेसिक कक्षा हेतु सम्पर्क करें

व्यवस्थापक जीवन वैभव

15 ए, प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी.नगर भोपाल, म.प्र.

मोबाईल– 9425008662

परिवार के सभी सदस्यों के लिए उपयोगी एवं मार्गदर्शक पुस्तक

सुप्रभात की अमृतवाणी

मूल्य : 50/- केवल

शिक्षाप्रद-जीवनोपयोगी
सदुपदेशों पर आधारित पुस्तक
डाक/ कोरियर से जीवन वैभव
कार्यालय से प्राप्त करें।

ज्योतिष मित्र

ज्योतिष के प्रारंभिक ज्ञान के
लिए ज्ञानवर्द्धक पुस्तक है।
एक प्रति 150 रुपये + वी. पी. डाक/
कोरियर 50 रुपये इस प्रकार 200 रुपये
भेजकर अपनी प्रति आज ही प्राप्त करें।
लेखक - डॉ. पं. हेमचन्द्र पाण्डेय

व्यवस्थापक

जीवन वैभव

15 ए, जोन–1, प्रेस कॉम्पलेक्स

संपर्क : 9425008662 ईमेल : hcp2002@gmail.com

जीवन वैभव

ज्योतिष, स्वास्थ्य एवं सुसंस्कार
की शिक्षाप्रद पत्रिका

स्थापना वर्ष : 37, अंक-1, जनवरी से मार्च 2023

●

संपादक
डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

●

सहायक संपादक
अरविन्द पाण्डेय
आशुतोष पाण्डेय

●

कानूनी सलाहकार
श्री अजय दुबे, श्री बी.एस. शुक्ल

●

सलाहकार मण्डल
डॉ.श्रीमती पुष्पा चौहान, श्री मनोज अग्निहोत्री, सुनील भण्डारी (मुम्बई), सौरभ पुरोहित, विनोद जोशी, डॉ. अरविंद राय

●

प्रकाशन कार्यालय : 15-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल मोबा. : 9425008662

(सम्पादक मण्डल के सभी सदस्य मानसेवी हैं।)
प्रकाशित लेखों से संपादक की सहमति आवश्यक नही है।
सभी प्रकार के विवाद का न्याय-क्षेत्र भोपाल रहेगा।

मूल्य

एक प्रति - 50 रूपये
वार्षिक - 200 रूपये
त्रैवार्षिक - 500 रूपये
आजीवन - 4500 रूपये

अनुक्रमणिका

क्रं.	विवरण	पृष्ठ क्रं.
1.	वंदना	2
2.	सम्पादक की कलम से	3
3.	वैभव दर्शन	5
4	हनुमान जी का महात्म्य	6
5	प्रेम योग और ज्योतिष	7
6	रवि-पुष्य योग एवं इसका महत्व	8
7	आकस्मिक/शेयर मार्केट से लाभ कमाने के ज्योतिष में योग	9
8	स्वयं के व्यवसाय के योग	11
9	सोलह कलाओं का अर्थ क्या है?	13
10	मनचाही संतान प्राप्ती के रहस्य और ज्योतिषीय उपाय	15
11	राशिवार 2023 का वार्षिक भविष्य	19
12	'इंटरनेशनल एस्ट्रो कॉन्फ्रेंस थाईलैंड-2022' सम्पन्न हुआ	30
13	फलित करने में ग्रहगोचर के संबंधित महत्वपूर्ण बिन्दु	32
14	घरेलु नुस्खों के अनुभूत प्रयोग	33
15	त्रैमासिक राशि भविष्य फल	35
16	त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त	39
17	आपके पत्र	42

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।

स्वामित्व, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती प्रेमलता पाण्डेय, 15-ए, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल से प्रकाशित एवं मेश प्रिंट्स, 105-ए, सेक्टर-एफ, गोविन्दपुरा, भोपाल-462011(म.प्र.) से मुद्रित, संपादकः डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय।

संस्थापक-संपादकः स्वर्गीय श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय, स्वर्गीय श्री व्यंकटराव जी यादव

वन्दना

प्रातः श्री राम स्मरणम्

प्रातः स्मरामि रघुनाथ मुखारविन्दं
मन्दस्मितं मधुरभाषि विशालभालम् ।
कर्णावलम्बिचलकुण्डल शोभिगण्डं
कर्णान्तदीर्घनयनं नयनाभिरामम् ॥1॥

जो मधुर मुस्कानयुक्त, मधुरभाषी और विशाल भाल से सुशोभित हैं; कानों में लटके हुए चंचल कुण्डलों से जिनके दोनों कपोल शोभित हो रहे हैं तथा जो कर्णपर्यन्त विस्तृत बड़े-बड़े नेत्रों से शोभायमान और नेत्रों को आनन्द देने वाले हैं, श्रीरघुनाथ जी के ऐसे मुखार विन्दका मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ ॥1॥

प्रातर्भजामि रघुनाथ करारविन्दं
रक्षोगणाय भयदं वरदं निजेभ्यः ।
यद्राजसंसदि विभज्य महेशचापं
सीताकर ग्रहण मङ्गलमापसद्यः ॥2॥

प्रातर्नमामि रघुनाथपदारविन्दं
वज्राङ्कुशादि शुभरेखि सुखावहं मे ।
योगीन्द्र मानसमधुव्रत सेव्यमानं
शापापहं सपदि गौतमधर्मपत्न्याः ॥3॥

प्रातर्वदामि वचसा रघुनाथनाम
वाग्दोषहारि सकलं शमलं निहन्ति ।
यत्पार्वती स्वपतिना सहभोक्तुकामा
प्रीत्या सहस्रहरि नामसमं जजाप ॥4॥

मैं प्रातः काल श्रीरघुनाथजी के करकमलों का स्मरण करता हूँ, जो राक्षसों को भय देने वाले और भक्तों के वरदायक हैं तथा जिन्होंने राजसभा में शंकर का धनुष तोड़कर शीघ्र ही सीताका मंगलमय पाणिग्रहण किया था ॥2॥ मैं प्रातः काल श्रीरघुनाथजी के चरणकमलों को नमस्कार करता हूँ, जो वज्र अंकुश आदि शुभ रेखाओं से युक्त मेरे लिए सुखदायी योगियों के मन-मधुप द्वारा सेवित और गौतम पत्नी अहल्या के शाप को दूर करने वाले हैं॥ 3॥ मैं प्रातःकाल अपनी वाणीसे श्रीरघुनाथजीके नामका जप करता हूँ, जो वाणीके दोषोंको नाश करनेवाला और सर्व पापो को हरनेवाला है तथा जिसे पार्वतीजीने अपने पति (शंकर) के साथ भोजन करनेकी इच्छासे भगवान के सहस्रनाम के सदृश प्रीतिसहित जपा था ॥4॥

प्रातः श्रये श्रुतिनुतां रघुनाथमूर्ति
नीलाम्बुजोत्पल सितेतररत्ननीलाम् ।
आमुक्तमौक्तिक विशेषविभूषणाढ्यां
ध्येयां समस्तमुनिभिः र्जनमुक्तिहेतुम् ॥5॥

यः श्लोक पञ्चकमिदं प्रयतः पठेद्धि
नित्यं प्रभातसमये पुरुषः प्रबुद्धः ।
श्रीरामकिङ्कर जनेषु स एव मुख्यो
भूत्वा प्रयाति हरिलोकमनन्य लभ्यम् ॥6॥

मैं प्रातः काल श्रीरघुनाथजी की वेदवन्दित मूर्ति का आश्रय लेता हूं, जो नीलकमल और नीलमणि के समान नीलवर्ण, लटकते हुए मोतियों की माला से विभूषित, समस्त मुनियों की ध्येय तथा भक्तों को मोक्ष प्रदान करने वाली है ॥5॥ जो पुरुष प्रातः काल नींद से जगकर जितेन्द्रिय भाव से इन पाँचों श्लोकों का नित्य पाठ करता है, वह श्रीरामजी के सेवकों में मुख्य होकर श्रीहरि के लोक को, जो दूसरों के लिये दुर्लभ है, प्राप्त होता है ॥ 6॥

सम्पादक की कलम से...

जीवन वैभव परिवार के सभी पाठकों को

नववर्ष 2023 की शुभ कामनाएं

जीवन वैभव प्रकाशन अपनी स्थापना के 36 वर्ष पूर्ण कर इस अंक से 37 वर्ष में प्रवेश कर रहा है। जीवन वैभव परिवार की बढ़ोत्तरीऔरइसकी निरंतरता रहने का हमारे विद्वान लेखक शुभ चिंतक तथा पाठक वर्ग को इसका श्रेय जाता है यह जीवन वैभव के प्रति सबके असीम प्यार को दर्शाता है।

पाठकों का आगामी वर्ष उत्तम रहे इस को दृष्टिगत रखते हुए इस्वी 2023 केलेण्डर वर्ष के लिए वार्षिक भविष्य जिसमें स्वास्थ्य, धन समृद्धि, केरियर, नए कार्य के लिए भावी योजना का समय और वर्ष में शुभ फल वृद्धि हेतु सार्थक उपाय का विवरण भी प्रत्येक राशि के लिए दिया गया है।

ज्योतिष तथा स्वास्थ्य हेतु विद्वान लेखकों के रुचिकर जीवनोपयोगी आलेख भी दिए गए है। इसके साथ ही स्थाई स्तंभ अमृतघट और वैभवदर्शन तथा व्रत पर्व मुहूर्त आदि को बहुत ही सटीकता के साथ दिये गये हैं। आशा है यह अंक आपके लिए वर्षभर सहयोगी और मार्गदर्शक रहेगा। इस नववर्ष की शुभ वेला में इस उत्तम ज्ञान का लाभ अपने मित्रों और परिजनों को प्रदान करने के लिए जीवन वैभव परिवार में जोड़कर उत्तम कार्य के सहभागी जरुर बनें।

पुनः शुभ कामनाओं सहित

आपका शुभेच्छु

आपका सदैव शुभेच्छु

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

संपादक

अमृत घट

1. श्रेष्ठ जीवन ज्ञान और भावनाओं का तथा बुद्धि और सुख दोनों का सम्मिश्रण होता है

-सुकरात

2. जो मनुष्य अपने मन का गुलाम बना रहता है वह कभी प्रभावशाली पुरुष नहीं हो सकता।

- स्वेट मार्डन

3. उदारता, मृदु भाषण, धैर्य और औचित्य बोध ये अभ्यास जन्य नहीं बल्कि जन्मजात गुण है।

- चाणक्य

4. फूलों की खुशबू वायु के विपरीत नहीं जाती पर मानवीय गुणों की खुशबू चारों ओर फैलती है।

- महात्मा बुद्ध

5. जीवन एक कहानी के सदृश्य है, वह कितनी लंबी है यह नहीं ,वरन कितनी अच्छी है, यह विचारणीय विषय है ।

- सेनेका

6. अपना मन ही सर्वश्रेष्ठ तीर्थ है, यदि वह विशेष रूप से शुद्ध किया हुआ हो।

- स्वामी शंकराचार्य

7. जीवन की सार्थकता इसी में है कि वह किसी अच्छे कार्य में लगाया जाये।

- रविन्द्रनाथ ठाकुर

8. जिंदगी में सबसे बड़ी गलती हम तब करते हैं जब हम दूसरों की राय पर ही खुश रहने लगते हैं।

- बर्टन

9. सामाजिक जीवन की पहली शर्त त्याग है, और त्याग की पहली शर्त कर्तव्य अनुभव।

- फ्रेंकलिन

10. जब कोई दूसरों की जिन्दगी को खुशहाल बनाता है, तब उसकी जिन्दगी अपने आप खुशहाल बन जाती है।

- जेम्स बेरी

वैभव दर्शन

न्याय प्रिय बने

स्व. श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय
संस्थापक संपादक

प्रत्येक व्यक्ति के संतोष एवं सुखी जीवन का आधार है कि वह परिश्रम की कमाई से उपार्जित सम्पत्ति से सुखी सम्पत्तिवान बने। हमें सदैव न्याय प्रिय बनना चाहिए किसी की सदाचारिता पर लांछन नहीं लगाना चाहिए। प्रसिद्ध महापुरुष सोफोकिल्स का मत है कि - **''न्याय की बात कहने के लिए हर समय ठीक है।''** इससे यह शिक्षा लें कि अपने प्रत्येक कार्यों में न्याय एवं मर्यादा का अनुसरण करना चाहिए। जिस व्यवहार को आप अपने लिए अपेक्षा रखते हैं। ठीक उसी प्रकार का व्यवहार औरों के प्रति करना चाहिए, यह स्वप्रेरित न्याय प्रियता है। अपने साथ या अधीनस्थ जो भी कार्य करते हैं। उनके प्रति अत्याचार नहीं किया जाए। उन्हें उनके लिए किए गए कार्यों के लिए निर्धारित श्रम मूल्य प्राप्त हो इसका ध्यान रखा जाना चाहिए।

यदि आप कोई व्यवसायी हैं तो अपने लाभ के लिए जिस वस्तु को बेचते हैं उस पर उतना ही लाभ लेना चाहिए, जो कि व्यवहारिक है। समय एवं परिस्थितिवश यदि किसी वस्तु का अभाव है तो उस पर विक्रयमूल्य अधिक नहीं लगाना चाहिए अन्यथा और अभाव होने लगेगा तथा यह ग्राहक की अनभिज्ञता एवं उसकी आवश्यकता होने के कारण ग्राहक के साथ धोखा है। इसलिए मन में अपने आप स्वप्रेरणा के साथ न्यायोचित कार्य करना चाहिए। यह मानवधर्म में है तथा धर्म के बारे में भगवान कृष्ण कहते हैं कि-

यतो धर्मस्ततो जयः।

जहाँ धर्म है वहां विजय निश्चित है। वह व्यक्ति जीवन में जय एवं विजय से विभूषित होता है।

यदि किसी व्यक्ति ने आपके साथ कोई उपकार किया है तो उसके प्रति सदैव कृतज्ञ रहें। उस उपकार का कहीं न कही किसी अर्थ में ऋण चुकाएं। यदि वास्तव में किसी व्यक्ति से किसी प्रकार ऋण प्राप्त किया है तो उसका ऋण निर्धारित समय पर चुकाना चाहिए ताकि आपके प्रति उस व्यक्ति के मन में जो सज्जनता एवं साधुता है वह बनी रहे एवं ऋण देने वाले को भी यथासमय वापसी हो जाए। इस प्रकार हमें चाहिए कि **हम अपने व्यवहारिक जीवन में न्यायप्रिय बनकर सुखी बने। एक अच्छे नागरिक बने ।**

हनुमान जी का महात्म्य

संतोष श्रीवास्तव, भोपाल

हनुमान जी भारतीय समाज के अन्तर्गत पूज्य हैं। हनुमान जी भगवान राम के प्रिय भक्त होकर जन मानस के संकटमोचक, रोग-दुख नाशक भी है। तुलसीदास जी ने रामचरितमानस के साथ हनुमान चालीसा, हनुमान बाहुक और बजरंग बाण की भी संरचना की है, जिसका नियमित पाठ करके मानव संकटों से अपनी रक्षा करता है। हनुमान चालिसा का महात्म्य बहुत अधिक है। इसका पाठ करते समय ही हमें राम भक्त हनुमान जी की शक्ति और पुरूषार्थ का आभास होता है। हनुमान चालिसा जहाँ हमें आनन्द देता है वहीं उससे तत्काल फल भी प्राप्त होता है। हनुमान जी की कीर्ति तीनों लोकों में है -

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर
जय कपीस तिहुं लोक उजागर

हनुमान जी के रूप की प्रशंसा करते हुए उल्लेख है-

कंचन बरन बिराज सुबेसा
कानन कुण्डल कुंचित केशा

याने आप सुनहरे रंग, सुन्दर वस्त्रों , कानों में कुण्डल और घुंघराले बालों से सुशोभित हैं। हनुमान जी शंकर जी के अवतार हैं, इसी कारण उनमें महान पराक्रम और यश है, इसीलिए सम्पूर्ण जगत उनकी निरंतर वन्दना करता है -

शंकर सुवन केसरी नंदन
तेज प्रताप महा जग वंदन

हनुमान जी अपने स्वामी श्री राम की सेवा सदा तत्पर रहते हैं , इसी कारण वह राम जी के परम प्रिय है

लाय संजीवन लखन जियाये
श्री रघुवीर हरषि उर लाये

हनुमान जी के त्याग, परम गुणों के कारण सभी उनके गुणों का बखान करते हैं

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा
नारद, सारद सहित अहीसा

हनुमान जी ने निःस्वार्थ भाव से सभी का मार्गदर्शन किया , यथासंभव सहयोग दिया और सहायता की

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा
राम मिलाय राजपद दीन्हा।

इसी तरह उन्होंने विभीषण को भी सहयोग दिया और राम की शरण में स्थान दिलवाया।

हनुमान जी की शरण में जो भी जन आता है, उस परम आनन्द प्राप्त होता है, क्यों कि फिर उसे जगत में किसी का डर नहीं रहता है।

सब सुख लहैं तुम्हारी सरना
तुम रक्षक काहू को डर ना

हनुमान जी के स्मरण से भूत पिशाच का भय दूर हो जाता है।

मानव जीवन से संकट और पीड़ा दूर हो जाती है -

संकट कटै मिटै सब पीरा
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा

माता सीता ने आपको आठों सिद्धियां यथा - **अणिमा** - इसमें साधक किसी को दिखाई नहीं देता और वह प्रथ्वी आकाश पाताल में प्रवेश कर सकता है

महिमा - इसमें साधक अपने को बहुत बड़ा बना लेता है

गरिमा - इसमें साधक अपने को जितना चाहे भारी बना सकता है

लघिमा - इसमें साधक अपने आपको हल्का बना सकता है

प्राप्ति - इसमें साधक इच्छित वस्तु की प्राप्ति कर सकता है

प्राकाम्य- इसमें साधक इच्छा के अनुसार आकाश में उड़ान भर सकता है और पृथ्वी में समा सकता है

ईशित्व - इसमें साधक को सब पर नियंत्रण और शासन करने की सामर्थ्य आ जाती है

वशित्व - इसमें साधक को दूसरों को वश में करने की शक्ति आ जाती है।

इस तरह से माता सीता ने हनुमान जी को शक्तियां दी

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता
अस वर दीन जानकी माता

हनुमान जी की अराधना करने से मानव में साहस, पराक्रम, निडरता आती है क्योंकि हनुमान जी अपने सज्जनों की रक्षा करते हैं और दुष्टों का नाश करते हैं

साधु संत के तुम रखवारे
असुर निकंदन राम दुलारे।

हनुमान चालिसा का महात्म्य ऐसा है कि जो भी नियमित इसका पाठ करता है उसे सभी स्थानों पर सफलता मिलती है और वह सब बंधनों से छूट जाता है।

हर व्यक्ति को निष्काम भाव से प्रतिदिन हनुमान चालिसा का पाठ करना चाहिए।

आने वाली पीढ़ी को संस्कारवान बनाने और जीवन में सफलता पाने के लिए हनुमान चालिसा का पाठ करने हेतु प्रेरित करना चाहिए ।

क्योकि तुलसीदास जी ने लिखा भी है-

जो यह पढ़ै हनुमान चालिसा
होय सिद्धि साखी गौरीसा
तुलसीदास सदा हरि चेरा
कीजै नाथ हृदय मॅह डेरा

कलयुग में जीवन से तरने और मोक्ष प्राप्त करने का सरल , सर्वमान्य उपाय हनुमान चालिसा का नियमित पाठ करना है।

प्रेम योग और ज्योतिष

डॉ. राजेंद्र भट्ट

प्रेम के लिए ना कोई उम्र होती है ना कोई सामाजिक सीमा होती है। कभी भी कहीं भी किसी से भी हो सकता है। सजीव निर्जीव का भेद नहीं रहता है। प्रेम का अपना एक अलौकिक जगत होता है। ज्योतिष शास्त्र में शुक्र ग्रह को इसका मुख्य कारक माना गया है। जातक के शुक्र से हम उसकी प्रेम करने की क्षमता, प्रकार आदि का आकलन सही कर सकते हैं शुक्र जातक की जन्मकुंडली में सबल निर्दोष हो अशुभ पापी ग्रह से संबंधित ना हो तो जातक का प्रेम शुद्ध रहता है। अन्यथा प्रेम में कुछ ना कुछ कमी शुद्धता में बनी रहती हैं। विवाह की सफलता के लिए पति पत्नी में प्रेम होना आवश्यक होता है, अन्यथा वैवाहिक जीवन कष्टमय हो जाता है। पति पत्नी में विभेद हो जाता है। वैवाहिक जीवन सुखमय हो इसलिए कुंडली मिलान के समय शुक्र के बलाबल, स्थिति आदि का आकलन अवश्य कर लेना चाहिए। ज्योतिष मनीषियों द्वारा प्रेम की विभिन्न स्थितियों परिस्थितियों के संदर्भ में ज्योतिष ग्रंथों में सविस्तार लिखा गया है। जन्म कुंडली में ग्रहों भावों आदि की स्थितियां जातक के प्रेम के बारे में बहुत कुछ स्पष्ट कर देती है। नवग्रहों में शुक्र ग्रह को प्रेम का मुख्य कारक माना गया है। शुक्र प्रेम का बीज है। पंचम भाव, पंचमेश प्रेम भाव प्रेम योग में सहयोगी एवं प्रेम उत्पत्ति की भूमि भी कह सकते हैं। शुक्र और पंचमेश और यदि उच्च भावों में हो, युति में हो तो ऐसे जातक के मन में प्रेम करने की अभिलाषा रहती है तथा वह प्रेम अवश्य करता है। चंद्र मन का कारक है। चंद्र ग्रह की योग के बिना प्रेमाकुर प्रस्फुटित होकर पल्लवित होना असंभव होता है। अतः चंद्र का योगदान प्रेम योग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शुक्र चंद्र पंचम भाव पंचमेश के साथ-साथ लग्नेश सप्तमेश के संबंध, दृष्टियों के संबंध प्रेम योग की स्थितियों को प्रभावित करते हैं। जातक की कुंडली में प्रेम योग का आकलन करते समय प्रेमी भाव प्रथम, पंचम, सप्तम, द्वादश, प्रेमी राशियां वृषभ, तुला, मीन, मिथुन कन्या कर्क एवं प्रेमी नक्षत्र रोहिणी, मृगशिरा , पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, रेवती। इसी प्रकार हर्षल, शनि मंगल, गुरु, राहु ग्रह अभी अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं। जिस प्रकार एक बीज को वृक्ष बनने एवं फलने तक सृष्टि के सभी तत्वों का योग दान रहता है।

प्रेम संबंध किस प्रकार के होंगे यह कुंडली में चंद्रमा के पक्ष बल से ज्ञात होता है। चंद्र पक्ष बल से हीन होगा और उस पर शुक्र का प्रभाव होगा तो जातक के प्रेम में वासना अधिक होगी। वासनात्मक प्रेम होगा। चंद्र का पक्ष बल मजबूत होगा तो प्रेम कलात्मक होगा भावुकता ज्यादा होगी। प्रेम योग में अन्य ग्रहों के संबंधों के प्रभाव से देखें। चंद्र शुक्र के साथ मंगल जैसे गर्म ग्रह के संबंध हो तो प्रेम में वासना अत्यधिक होगी। यदि बुध से संबंध होता है तो प्रेम में व्यापारिक दृष्टिकोण अवश्य दिखाई देगा। बृहस्पति के प्रभाव होने पर प्रेम प्राप्त करने में बहुत भागदौड़ होगी। शुक्र गुरु के प्रबल विरोधी है। ऐसे ही यदि शनि के प्रभाव होने पर प्रेमियों में उम्र से अधिक अंतर होगा। कुछ ना कुछ स्वार्थ निहित होगा। सूर्य का संबंध पंचम भाव पंचमेश आदि से हो तो उच्च श्रेणी से संबंध व्यक्ति से होता है। मंगल से हो तो पुलिस, सेना, इंजीनियर मेहनतकश खिलाड़ी आदि से प्रेम संबंध होते हैं। प्रेम कभी कभी एकतरफा होता है। शुक्र या चंद्र प्रेमी नक्षत्र या राशि में अकेला रहता है तो यह स्थिति बनती है। कभी-कभी प्रेमी राशि, नक्षत्र में चंद्र या शुक्र अकेले हो या युति में हो और इनका 2 ग्रहों से संबंध हो रहा हो तो एक से अधिक प्रेम संबंध हो सकते हैं।

उदाहरणार्थ दो कुंडलियां प्रस्तुत हैं

1. जातक जन्म दिनांक 20 जनवरी 1989 जन्म समय 20.15 रात्री स्थान इंदौर

लग्न कुंडली

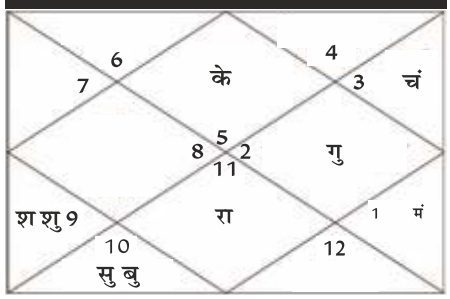

इस जातक की कुंडली मे सप्तमेश शनि बनता है जोकि विवाह में देरी करवाता है जातक का विवाह 2015 में 30 वर्ष पूर्ण होने पर हुवा सप्तमेश शनि शुक्र के साथ पंचम स्थान में स्थित है। चंद्र लाभ स्थान से शनि शुक्र एवं पंचम भाव पर पूर्ण दृष्टि दे रहा है प्रेमयोग निर्मित हुवा प्रेम विवाह में परिणीत हुआ पंचमेश बृहस्पति है। अतः शुद्ध व सात्विक प्रेम हुवा परिवार की सहमति से विवाह सम्पन्न हुआ।

कुंडली 2 यह एक जातिका की कुंडली है जन्म दिनांक 1 अप्रैल 1984 जन्म समय 10.45 प्रातः रतलाम

लग्न कुंडली

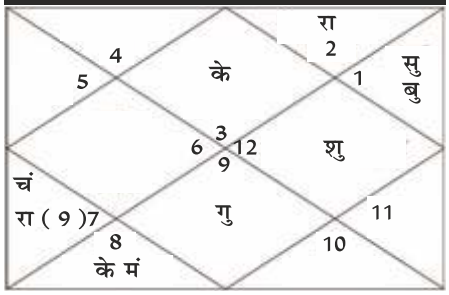

जातिका की कुंडली में शुक्र पंचमेश एवं व्ययेश होकर उच्च राशि मीन में स्थित है। बृहस्पति सप्तमेश है। सप्तमेश पंचमेश का संबंध स्थापित हुआ। चंद्र द्वितीयेश होकर अष्टमेश नवमेश शनि के साथ हैं।

रवि-पुष्य योग एवं इसका महत्व

डॉ. आर के पाठक 'मयंक'
धर्म शिक्षक भारतीय सेना

रवि-पुष्य नक्षत्र को सभी नक्षत्रों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। ज्योतिष शास्त्र में नक्षत्रों की गणना में पुष्य नक्षत्र आठवां नक्षत्र होता है जो सभी नक्षत्रों में श्रेष्ठ स्थान रखता है। रविवार के दिन पड़ने वाले इस संयोग को रवि-पुष्य योग के नाम से जाना जाता है।

पौराणिक शास्त्रों के अनुसार रवि-पुष्य नक्षत्र का शुभ संयोग समस्त शुभ कार्यों के शुभारंभ के लिए अतिउत्तम माना गया है। इस योग में सोने-चांदी के आभूषण, प्रॉपर्टी, वाहन आदि की खरीदारी करना लाभदायक होता है। इस नक्षत्र में कलश चक्र शोधन होने पर गृहप्रवेश करना भी शुभ माना जाता है।

आपको कोई नया कार्य आरंभ करना हो और यदि अच्छा मुहूर्त नहीं मिल रहा हो तो ऐसी स्थिति में भी रवि-पुष्य का यह शुभ संयोग सभी कार्यों के लिए लाभकारी माना गया है। पुष्य नक्षत्र के दौरान विवाह छोड़कर बाकी सारे शुभ कार्य किए जा सकते है। 5 फरवरी 2023 रविवार को रवि-पुष्य का शुभ महासंयोग बन रहा है। सूर्योदय से लेकर दोपहर में 12:12 तक पुष्य नक्षत्र रहेगी और रवि पुष्य नक्षत्र का महा संयोग रहेगा।

पुष्य नक्षत्र का महत्व

पाणिनी संहिता में लिखा है - पुष्य सिद्धौ नक्षत्रे सिध्यन्ति अस्मिन् सर्वाणि कार्याणि सिध्यः। पुष्यन्ति अस्मिन् सर्वाणि कार्याणि इति पुष्य।। अर्थात पुष्य नक्षत्र में शुरू किए गए सभी कार्य पुष्टि दायक, सर्वार्थसिद्ध होते ही हैं, निश्चय ही फलीभूत होते हैं।

वेदों में पुष्य नक्षत्र

पुष्य को ऋग्वेद में तिष्य अर्थात शुभ या मांगलिक तारा कहते हैं। वैदिक ज्योतिष के अनुसार गाय के थन को पुष्य नक्षत्र का प्रतीक चिन्ह माना जाता है तथा ये प्रतीक चिन्ह भी हमें पुष्य नक्षत्र के स्वभाव के बारे में बहुत कुछ बताता है। गाय को भारतवर्ष में प्राचीन तथा वैदिक काल से ही पूज्या माना जाता है तथा गाय के दूध की तुलना वैदिक संस्कृति में अमृत के साथ की जाती थी। पुष्य नक्षत्र गाय के थन से निकले ताजे दूध जैसा पोषणकारी, लाभप्रद व देह और मन को प्रसन्नता देने वाला होता है। इसलिए ऋग्वेद में पुष्य नक्षत्र को मंगल कर्ता, वृद्धि कर्ता और सुख समृद्धि देने वाला भी कहा गया है।

ज्योतिष शास्त्र में पुष्य नक्षत्र

सत्ताइस नक्षत्रों में पुष्य आठवां नक्षत्र है। इस नक्षत्र के उदय होने पर ज्योतिषी शुभ कार्य करने की सलाह देते हैं। सभी नक्षत्रों में इसे सबसे अच्छा माना जाता है। पुष्य नक्षत्र के दौरान चंद्रमा कर्क राशि में स्थित होता है। बारह राशियों में एकमात्र कर्क राशि का स्वामी चंद्रमा है। इसके अलावा चंद्रमा अन्य किसी राशि का स्वामी नहीं है। चंद्रमा धन का देवता है। इसलिए पुष्य नक्षत्र को धन अर्जन/संचय के लिए अत्यन्त पवित्र माना जाता है। इसलिए सोना, चांदी और नए सामानों की खरीदारी के लिए पुष्य नक्षत्र को सबसे पवित्र माना जाता है। सूर्य जुलाई के तीसरे सप्ताह में पुष्य नक्षत्र में गोचर करता है। उस समय यह नक्षत्र पूर्व में उदय होता है। मार्च महीने में रात्रि 9 बजे से 11 बजे तक पुष्य नक्षत्र अपने शिरोबिन्दु पर होता है। पौष मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र में रहता है। इस नक्षत्र का स्वामी ग्रह शनि है। इस नक्षत्र के देवता बृहस्पति देव है.

यह नक्षत्र इन कार्यों के लिए होता है शुभ

इस नक्षत्र में मंत्र दीक्षा, उच्च शिक्षा ग्रहण, भूमि, क्रय-विक्रय, आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना, यज्ञ अनुष्ठान और वेद पाठ आरंभ करना, गुरु धारण करना, पुस्तक दान करना और विद्या दान करना और विदेश यात्रा आरंभ करने के लिए श्रेष्ठ होता है । इस शुभ संयोग में किए गए मंत्र जाप का कई गुना अधिक फल मिलता है। इतना ही नहीं धन लाभ और कर्ज के मुक्ति के लिए भी यह शुभ संयोग बेहद खास है।रवि-पुष्य नक्षत्र में नया व्यापार-व्यवसाय शुरू करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

पुष्य नक्षत्र में किए जा सकने वाले उपाय

बहुत ही अजमाया हुआ उपाय है की बरगद के पत्ते को भी पुष्य नक्षत्र में लाकर उस पर हल्दी से स्वस्तिक बनाकर उसे चांदी की डिब्बी में घर में रखें, यह बहुत ही शुभ माना जाता है । पुष्प नक्षत्र के दिन दक्षिणावर्ती शंख में केसर मिला दूध भरकर भगवान विष्णु का अभिषेक करें। इससे धन लाभ मिलेगा। माता लक्ष्मी के साथ-साथ भगवान विष्णु की पूजा करने से भी मां की कृपा आप पर बनी रहती है । इसके साथ ही रवि-पुष्य योग के दिन से अथाह धन लक्ष्मी की प्रप्ति के लिए विष्णु और लक्ष्मीजी की मूर्ति या फोटो के आगे ॐ लक्ष्मी नारायणाय नमः मंत्र का 3 माला का जप स्फटिक माला से करें।

अन्य उपाय- 1- रवि पुष्य योग में सुबह सूर्यदेव की पूजा और जल जरूर अर्पित करें। सूर्य देव की पूजा करने से मान-सम्मान और पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

2- जिन लोगों की कुंडली में सूर्य की स्थिति कमजोर है वह सूर्य को जल जरूर चढ़ाएं और किसी पंडित को तांबे का दान करें।

3- रवि पुष्य नक्षत्र के दिन चांदी और सोने के आभूषण खरीदना बहुत ही शुभ होता है। मान्यता है इस दिन खरीदारी करने से सुख और सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

4- रवि पुष्य योग में सूर्य से संबंधित मंत्रों का जाप करना अत्यंत शुभफलदायी रहेगा।

5- रवि पुष्य योग में भगवान विष्णु संग माता लक्ष्मी की पूजा करें और लघु नारियल को लाल कपड़े में बांध कर धन

आकस्मिक/शेयर मार्केट से लाभ कमाने के ज्योतिष में योग

डॉ. श्रीमती पुष्पा चौहान
(अध्यक्ष, आय.ए.एस.आय)

ज्योतिष शास्त्र के अंतर्गत फलित ज्योतिष में अचानक धन संपत्ति कमाने के योग जिसमें वर्तमान में शेयर मार्केट का अधिक महत्व है कुछ महत्वपूर्ण योग विद्वान ज्योतिषज्ञ डॉ पुष्पा सिंह चौहान द्वारा दिए गए हैं पहले इन बिंदुओं का अध्ययन करें इसके बाद अनुभव में लाने के पूर्व विद्वानों से परामर्श उपरांत अमल में लाएं ताकि किसी प्रकार की आर्थिक लाभ के बजाय आर्थिक क्षति ना हो सके। पाठकों के लाभार्थ कुछ मुख्य बिंदु निम्नानुसार दिए जा रहे हैं।

- सम्पादक

शेयर मार्केट के बारे में

हमारे प्राचीन ग्रंथों में तो कोई विशेष उल्लेख नहीं मिलता है, परन्तु इस शेयर मार्केट से लाभ अर्जित करने हेतु आधुनिक ज्योतिष ज्ञाताओं ने कुछ योगों को ढूढ़ने का प्रयास किया है। आइये देखें कि ऐसे कौन से ग्रहयोग हैं, जिनके कारण जातक इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर धनार्जन करता है- हमारे प्राचीन ग्रंथों में तो कोई विशेष उल्लेख नहीं मिलता है, परन्तु इस शेयर मार्केट से लाभ अर्जित करने हेतु आधुनिक ज्योतिष ज्ञाताओं ने कुछ योगों को ढूढ़ने का प्रयास किया है। आइये देखें कि ऐसे कौन से ग्रहयोग हैं, जिनके कारण जातक इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर धनार्जन करता है-

1. शेयर मार्केट के द्वारा धनार्जन हेतु कुंडली का पंचम भाव प्रमुख माना गया है। सफलता के लिए व्यक्ति का लाभ एवं भाग्य स्थान भी विशेष महत्व रखता है, क्योंकि जब तक कुंडली में ये दोनों स्थान प्रबल नहीं होंगे, तब तक व्यक्ति इस क्षेत्र में लाभान्वित नहीं हो सकता।
2. शेयर मार्केट से जुड़ने हेतु मंगल ग्रह को प्रमुख कारक माना गया है, साथ ही राहु इस क्षेत्र हेतु उत्प्रेरक का काम करता है।
3. यदि कुंडली में पंचम भाव का स्वामी मंगल हो और यह मंगल लग्न, लाभ, भाग्य स्थान में हो तो भी जातक इस व्यवसाय द्वारा लाभ अर्जन कर सकता है।
4. यदि कुंडली के धन भाव में मंगल राहु के साथ बैठकर पंचमेश, भाग्येश से संबंध स्थापित करे, तो जातक इस क्षेत्र में सफल हो सकता है।

5. यदि धन भाव पर पंचमेश, लाभेश, भाग्येश व लग्नेश की शुभ दृष्टि हो साथ ही इन भावों का मंगल एवं राहु जैसे कारक ग्रहों से संबंध हो, तो इस क्षेत्र विशेष में सफलता अर्जित कर

जन्म कुण्डली 15 जुलाई 1958 04:00:00

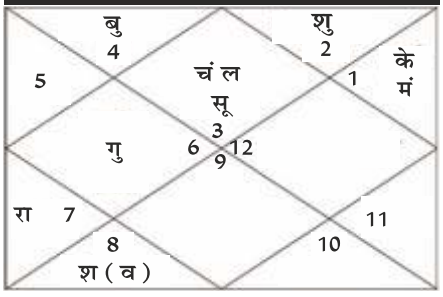

सकता है।

6. यदि कुंडली में लग्न में मंगल व राहु तथा लाभ भाव में मंगल की राशि हो, तो भी जातक इस क्षेत्र में रुझान रखता है।
7. कुंडली के धन भाव में लग्नेश मंगल के साथ बैठकर दसवें घर के राहु की दृष्टि पर हो तो जातक इस क्षेत्र से लाभान्वित हो सकता है।
8. कुंडली में धनेश, लाभेश मंगल की राशि उसके नक्षत्र या नवांश में हो तथा भाग्य स्थान में भाग्येश बली होकर इनको प्रभावित करता हो तो जातक इस क्षेत्र में सफल हो सकता है।
9. यदि कुंडली के लाभ भाव में राहु बैठकर पंचम में स्थित धनेश, लाभेश, लग्नेश व भाग्येश को देखे, तो जातक इस क्षेत्र में सफल हो

जन्म कुण्डली 16 जुलाई 1979 18:00:00

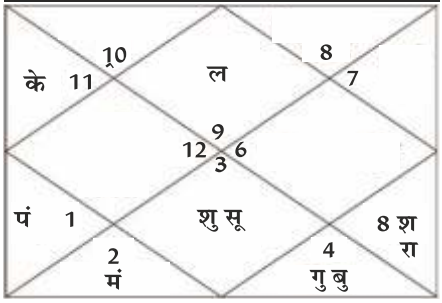

सकता है।

10. यदि कुंडली के लग्न अथवा चतुर्थ भाव में धनेश लाभेश की युति हो तथा इन पर भाग्येश, मंगल या राहु जैसे ग्रहों का प्रभाव हो, तो भी जातक

नवांश जीवन साथी कुण्डली नं.1

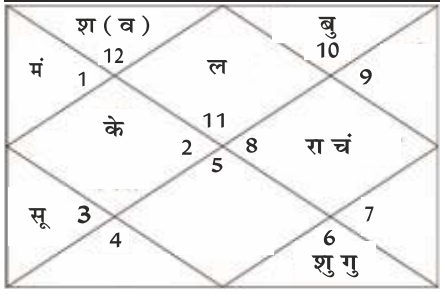

इस क्षेत्र में रुझान रखता है।

11. यदि लाभेश या धनेश किसी भी तरह से राहु जैसे अचानक धन दाता ग्रह से संबंध इन्हीं घरों या भाव 5 में किसी रूप से करे, तब भी जातक इतर लोगों की संगत में फस कर शेयर मार्केट से धन लाभ कमाने का प्रयत्न करता है।
12. यदि अचानक धन कारक राहु लग्नेश और पंचमेश से संबंध किसी भी रूप में किसी भी केन्द्र या त्रिकोण में बनाता हो और लाभेश का संबंध शनि या मंगल जैसे ग्रह के साथ होता हो, तो भी जातक शेयर या लाटरी जैसे माध्यमों से पैसा कमा कर धनवान होता है।

जो उक्त अजमाये हुए ग्रह योग दिये गये हैं वे विभिन्न संबंधित व्यक्तियों की कुंडलियों में अधिकांशतः पाये गये हैं।

नवांश जीवन साथी कुण्डली नं.2

इस व्यवसाय से जुड़े लोगों की कुंडलियों का विवेचन आगे दिया जा रहा है जिन्हें पाठक स्वयं देखें-

उपरोक्त कुंडली 1 के पंचम भाव का स्वामी शुक्र स्वगृही होकर बारहवें स्थान में स्थान बल प्राप्त कर रहा है। साथ ही पंचम भाव में राहु बैठकर लाभ स्थान में बैठे लाभेश मंगल एवं केतु के साथ परस्पर दृष्टि संबंध बनाये हुए है। देखें कि भाग्येश शनि पंचमेश शुक पर मित्र दृष्टि देते हुए पंचम भाव को भाग्यशाली बना रहा है। साथ ही लग्नेश धन भाव में व धनेश लग्न में होकर राशि परिवर्तन कर रहे हैं तथा राहु की दृष्टि लग्न में बैठे धनेश चंद्र एवं पराक्रमेश सूर्य पर होने से जातक को अचानक धन लाभ की रुचि दे रहा है। पुनः लाभेश मंगल धन भाव, पंचम भाव एवं भाग्येश शनि को दृष्टि द्वारा प्रभावित कर धन लाभ कराने का संकेत दे रहा है। इन्हीं सब ग्रह योगों के कारण जातक शेयर मार्केट में ब्रोकर का कार्य करते हुए धनार्जन कर रहा है।

उक्त कुंडल 2 भी एक शेयर ब्रोकर की है। कुंडली में लाभेश शुक्र भाग्येश सूर्य के साथ सप्तम भाव में बैठकर लग्न पर पूर्ण दृष्टि दे रहे हैं। साथ ही धनेश शनि राहु के साथ भाग्य भाव में बैठकर लाभ स्थान पर उच्च दृष्टि, पराक्रम पर स्वगृही दृष्टि, मंगल पर दशम दृष्टि दे रहे हैं पंचमेश मंगल स्वतः कारक होकर भाग्यस्थान में बैठे धनेश, राहु एवं लग्न को प्रभावित कर रहे है। नवांश कुंडली में अचानकता का कारक राहु, केतु, सूर्य, चंद्रमा वर्गोत्तम स्थिति में है और लाभेश शुक्र उच्च नवांश के होकर धन नवांश को देख रहे हैं। इन्हीं कारणों से जातक शेयर मार्केट का सफल धनी ब्रोकर है।

स्वयं के व्यवसाय के योग

श्री एस.एस. लाल, आई.पी.एस
से.नि डायरेक्टर जनरल पुलिस

आजकल व्यक्ति स्वयं के कार्य करने की ओर अग्रसर हो रहा है क्योंकि नौकरी में स्थाईत्व नहीं होने से संयुक्त परिवार के साथ नहीं रह पाता इसे दृष्टिगत रखते हुए विद्वान लेखक द्वारा स्वयं के व्यवसाय के मुख्य योग निम्नानुसार उल्लेख किए है आशा है पाठक वर्ग इसका लाभ उठाकर अपने व्यापार की ओर प्रेरित होंगे।

- डॉ. हेमचंद्र पाण्डेय, सम्पादक

जातक के जन्म कुंडली में यह योग संबंधित व्यवसाय करने के नहीं होंगे, तब तक जातक इस और उन्नति नहीं कर पाएगा। यदि यह मालूम हो जाए कि जातक के ग्रह योग उसे इस तरह के व्यवसाय से संबंधित कार्य करने हेतु इंगित कर रहे हैं, तो जातक उस तरह के व्यवसाय करने में अधिक सफल होगा। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए कुंडली में बनने वाले प्रयोग के आधार पर व्यवसाय चयन हेतु कुछ योगों को आगे दिया जा रहा है। इसके पहले यह देखना अनिवार्य है, कि व्यवसाय के लिए कौन-कौन से संबंधित भाव व भाव अधिपत्य एवं ग्रह होते हैं। **निम्नानुसार देखें:-**

1. भाव 7 और 10 व्यवसाय से संबंधित, भाग 2,10,11 धन संबंधित होते हैं और बुध ग्रह को व्यवसाय से संबंधित ग्रह माना गया है।
2. लग्न, चंद्र लगन एवं सूर्य लग्न में से जो बली हो उसके भाव 10 से व्यवसाय विचार किया जाता है।
3. दशमेश जिस नवांश में हूं उसके नवाज अधिपत्य को व्यवसाय चयन हेतु प्रमुखता दी जाती हैं।

अब व्यवसाय में सफलता के कुछ ग्रहयोग देखें-

1. लग्न, चंद्र लग्न, सूर्य लग्न में से जो भी अत्याधिक बली हो उस लग्न से भाव 10 में यदि हो तो जातक व्यापारी होकर व्यवसाय में सफल होता है।
2. यदि भाव 10 में कई शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो भी जातक व्यापारी होगा।
3. यदि कुंडली में लग्नेश च दशमेश एकसाथ हों, तो व्यापार योग बनता है।
4. यदि भाव 10 में लग्न का स्वामी हो तो भी व्यापारी बनाता है।
5. भाव 10 का स्वामी यदि भाव 1,4,7,10 केन्द्रों या भाव 5,9 या भाव 11 में शुभ ग्रह से दृष्ट होकर बैठा हो, तो सफल व्यापारी बनाता है। यदि दशम में बैठा ग्रह उच्च का हो, तो जातक को अधिक प्रगति कराता है। यदि दशम में बैठा ग्रह नीच का हो, तो कम उन्नति करते हुए उतार-चढ़ाव व्यापार में होता है।
6. चंद्रमा से बुध, शुक्र, गुरु तीनों या कोई भी ग्रह यदि भाव 1,4,7,10 में से किसी में हो तो व्यापारी बनने के योग बनते हैं।
7. बुध, शुक्र, चंद्र यदि एक दूसरे से द्वितीयस्थ या द्वादशस्थ हो, तो भी व्यापारी बनने का योग बनता है।
8. चंद्रमा से यदि गुरु, शुक्र तीसरे या ग्यारहवें बैठे हो, तो भी व्यापारी बनने का योग बनता है।
9. यदि भाव 2 का स्वामी 11 में एवं भाव 11 का स्वामी भाग 2 में हो, तो जातक को बहुत सफल व्यापारी बनाता है।
10. यदि केंद्र में पाप ग्रह हो और उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो, तो जातक मछली व मांस से संबंधित व्यवसाय करता है। यदि भाव 9 में शनि, बुध, शुक्र हो तो जातक कृषि द्वारा धनवान होता है।
11. यदि मंगल और भाव 4 का स्वामी किसी एक केन्द्र में हो या किसी एक त्रिकोण में या फिर भाव 11 में हो तथा भाव 10 का स्वामी चंद्र

शुक्र से यति या दृष्ट हो तो जातक कृषि एवं पशुपालन का व्यवसाय करता है।

12. भाव 10 का स्वामी यदि सूर्य के नवांश में हो तो जातक दवा, ऊन, अन्न सोना, मोती आदि का व्यापार कर लाभ उठाता है।
13. यदि भाव 10 का स्वामी चंद्र के नवांश में हो तो मोती, कृषि, बच्चों के खिलोने, फैन्सी स्टोर, रेडीमेड स्टोर आदि का व्यवसाय करता है।
14. यदि भाव 10 का स्वामी मंगल के नवांश में हो, तो तांबा व पीतल के बर्तन की दुकान व कोयला आदि का व्यापार करता है।
15. यदि भाव 10 का स्वामी बुध के नवांश में हो, तो जातक लकड़ी का कारखाना, फर्नीचर, ज्योतिषशास्त्र या वैद्य का काम करता है।
16. यदि भाव 10 का स्वामी गुरु के नवांश में हो, तो अध्यापक वृत्ति तथा स्टेशनरी आदि का व्यापार करता है।
17. यदि भाव 10 का स्वामी शुक्र के नवांश में हो, तो जानवरों की खरीद फरोखत, चावल, किराना अथवा फैन्सी स्टोर का व्यापार करता है।
18. यदि भाव 10 का स्वामी शनि के नवांश में हो, तो लोहे का व्यापार या तिल, तेल, ऊन आदि का व्यापार करता है।
19. यदि व्यापार का कारक ग्रह बुध भाव 2, 3, 7 या 11 में उच्च या स्वग्रही हो और क्रूर ग्रहों से न देखा जाता हो, तो जातक एक व्यापारी होताहै। इस ग्रह की राशि मिथुन या कन्या उक्त भावों में पड़ी हो और बुध किसी शुभ ग्रह के साथ हो या शुभयोग बना रहा हो, तो भी कुशल व्यापारी होता है।
20. यदि भाव 10 में वायु तत्व की राशि मिथुन, तुला, कुंभ में से हो, तो इलेक्ट्रानिक्स के कार्य, वैज्ञानिक का कार्य करने की संभावना होती है। यदि भाव 10 में अग्नि तत्व की राशि मेष, सिंह या धनु हो तो जातक इंजीनियर या तो या धातु से संबंधित कार्य करता है। यदि भाव 10 में पृथ्वी तत्व राशि वृष, कन्या या मकर हो, तो जातक प्रशासनिक कार्य, आर्थिक कार्य, सिविल कार्य धातु संबंधित कार्य या खेती-बाड़ी या ऐजेन्सी का कार्य करता है। और यदि भाव 10 में जल तत्व की राशि कर्क, वृश्चिक, मीन में से कोई हो, तो तरल पदार्थ रसायन डेरी व्यापार, सामुद्रिक जहाजरानी या ठंडे पेय पदार्थों से संबंधित कार्य करने की संभावना होती है।
21. यदि दशमेश चंद्र पराक्रम में धनु राशि में हो और इस पर धनेश मंगल व. लग्नेश शुक्र की नवम भाव में बैठकर दृष्टि हो, लाभेश सूर्य भाग्येश बुध के साथ लाभ भाव में होकर पंचमेश शनि से दृष्ट हो, तो ऐसा जातक अपना स्वतंत्र व्यवसाय सौन्दर्य प्रसाधन से संबंधित कार्य करता है।
22. यदि कर्मेश शुक्र पर शनि की दृष्टि हो, भाग्येश मंगल-लग्नेश सूर्य-पंचमेश गुरु राहु के साथ युति कर केन्द्र में हों और लाभेश बुध की स्वगृही चंद्रमा पर दृष्टि हो, तो ऐसा जातक बिल्डिंग डिजाइन आदि का स्वतंत्र व्यवसाय करता है।
23. यदि दशमेश मंगल स्वगृही होकर धनेश सूर्य के साथ दशम में हो, भाग्येश गुरु लग्नेश चंद्र के साथ गजकेसरी योग बनाता हो, लाभ भाव में राहु वृषभ का गुरु हो, लाभेश शुक्र कुंडली में उच्चाभिलाषी हो, साथ ही पराक्रम भाव का स्वामी बुध दशम भाव से दशम अर्थात सप्तम के स्वामी शनि के साथ भाग्य भाव में युति करता हो, तो ऐसा जातक कपड़ा व्यापार के क्षेत्र में सफलता अर्जित करता है।
24. कुंडली के धनभाव में स्वगृही चंद्र राहु के साथ स्थित होकर भाग्येश शनि के साथ परस्पर दृष्टि संबंध रखता हो, कर्मेश गुरु भाग्य-स्थानस्थ होकर बैठे आयेश मंगल पर, पराक्रम भाव व उसके स्वामी सूर्य पर, पंचम भाव शुक्र की राशि पर दृष्टि देता हो, इन सबके अतिरिक्त व्यपार का कारक बुध लग्नेश होकर पंचमेश शुक्र के साथ चतुर्थ में बैठकर दशम पर दृष्टि देता हो,ऐसा जातक रेडिमेट कपड़े जैसे व्यवसाय में अति सफल होता है।
25. लग्न कुंडली के अष्टम भाव में लाभेश शनि उच्च राशि का होकर धनेश स्वगृही मंगल से परस्पर दृष्टि संबंध बनाता हो, साथ ही अष्टमेश व पराक्रमेश शुक्र व्यवसाय के कारक बुध के साथ लाभ भाव में स्थित हो और कर्मेश गुरु स्वयं कर्म भाव पर पूर्ण दृष्टि करता हो, तो ऐसा जातक लोहे के व्यवसाय मे सफलता अर्जित करता है।
26. कुंडली के दशम भाव में इंजीनियरिंग का कारक शनि राहु साथ हो, कर्मेश सूर्य लाभेश बुध, धनेश व पंचमेश गुरु, दशम से दशम भाव यानी सप्तम भाव का स्वामी शुक्र के साथ भाग्य भाव में चर्तुग्रही योग बनाकर शनि की पराक्रम भाव की मकर राशि पर दृष्टि देते हों तथा लग्नेश मंगल अष्टम भाव में बैठकर धन भाव में बैठे भाग्येश से दृष्ट हो तो ऐसा जातक बिल्डिंग डिजाइन से संबंधित कार्य का अपना स्वतंत्र व्यवसाय करता है।

इसके अतिरिक्त अन्य कई प्रकार के ग्रहयोग भी स्वतंत्र व्यवसाय या व्यापार करने के होते हैं, परन्तु उन सभी को यहां विषय विशालता स्थानाभाव को ध्यान में रखते हुए दिया जाना संभव नहीं हो पा रहा है। उन ग्रहयोगों को तो जातक स्वयं भी आगे दी जा रही कुछ विभिन्न प्रकार के स्वतंत्र व्यवसायों से संबंधित कुंडलियों के विवेचन में से निकालने का प्रयास कर सकते हैं। आगे हमने विभिन्न व्यवसायों को अलग-अलग विस्तार से उल्लेखित किया है, जिन्हें पाठक देखें। इसके अतिरिक्त उन्हीं विभिन्न व्यवसायी से संबंधित सफल व्यवसायियों की कुंडलियों का विवेचन दे रहे हैं, जिनमें उक्त ग्रहयोगों को स्वतः देखा जा सकता है। क्रमशः

सोलह कलाओं का अर्थ क्या है ?

संकलन आलोक श्रीवास्तव, भोपाल

हमारे भारतीय उपनिषद शास्त्रों में वर्णन है कि भगवान श्रीकृष्ण सभी 16 कलाओं से परिपूर्ण (ज्ञाता) हैं। चंद्रमा की सोलह कलाएं होती हैं। सोलह श्रृंगार के बारे में भी सुना होगा। आखिर ये 16 कलाएं क्या है? इस बारे में विस्तार से विवरण निम्नानुसार है ।

उपनिषदों अनुसार 16 कलाओं से युक्त व्यक्ति ईश्वर तुल्य होता है।

कुमति, सुमति, विक्षित, मूढ़, क्षित, मूर्च्छित, जाग्रत, चैतन्य, अचेत आदि ऐसे शब्दों को जिनका संबंध हमारे मन और मस्तिष्क से होता है, जो व्यक्ति मन और मस्तिष्क से अलग रहकर बोध करने लगता है वहीं 16 कलाओं में रमण कर सकता है।

चन्द्रमा की सोलह कला

अमृत, मनदा, पुष्प, पुष्टि, तुष्टि, ध्रुति, शाशनी, चंद्रिका, कांति, ज्योत्सना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूर्ण और पूर्णामृत। इसी को प्रतिपदा, दूज, एकादशी, पूर्णिमा आदि भी कहा जाता है।

उपरोक्त चंद्रमा के प्रकाश की 16 अवस्थाएं हैं उसी तरह मनुष्य के मन में भी एक प्रकाश है। मन को चंद्रमा के समान ही माना गया है। जिसकी अवस्था घटती और बढ़ती रहती है। चंद्र की इन सोलह अवस्थाओं से 16 कला का चलन हुआ। व्यक्ति का देह को छोड़कर पूर्ण प्रकाश हो जाना ही प्रथम मोक्ष है।

मनुष्य (मन) की तीन अवस्थाएं - प्रत्येक व्यक्ति को अपनी तीन अवस्थाओं का ही बोध होता है-

जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति। क्या आप इन तीन अवस्थाओं के अलावा कोई चौथी अवस्था जानते हैं? जगत तीन स्तरों वाला है-

1. एक स्थूल जगत, जिसकी अनुभूति जाग्रत अवस्था में होती है।
2. दूसरा सूक्ष्म जगत, जिसका स्वप्न में अनुभव करते हैं और
3. तीसरा कारण जगत, जिसकी अनुभूति सुषुप्ति में होती है।

तीन अवस्थाओं से आगे- सोलह कलाओं का अर्थ संपूर्ण बोधपूर्ण ज्ञान से है। मनुष्य ने स्वयं को तीन अवस्थाओं से आगे कुछ नहीं जाना और न समझा। प्रत्येक मनुष्य में ये 16 कलाएं सुप्त अवस्था में होती है। अर्थात इसका संबंध अनुभूत यथार्थ ज्ञान की सोलह अवस्थाओं से है। इन सोलह कलाओं के नाम अलग- अलग ग्रंथों में भिन्न-भिन्न मिलते है।

जानिए 16 कलाओं के नाम। इन सोलह कलाओं के नाम अलग-अलग ग्रंथों में अलग-अलग मिलते हैं।

1.अन्नमया, 2.प्राणमया, 3.मनोमया, 4.विज्ञानमया, 5.आनंदमया, 6.अतिशयिनी, 7.विपरिनाभिमी, 8.संक्रमिनी, 9.प्रभवि, 10.कुंथिनी, 11.विकासिनी, 12.मर्यादिनी, 13.सन्हालादिनी, 14.आह्लादिनी, 15.परिपूर्ण और 16.स्वरुपवस्थित।
अन्यत्र 1.श्री, 2 .भू, 3.कीर्ति, 4 इला, 5.लीला, 6.कांति, 7.विद्या, 8.विमला, 9.उत्कर्शिनी, 10.ज्ञान, 11.क्रिया, 12.योग, 13.प्रहवि, 14.सत्य, 15.इसना और 16.अनुग्रह।
कहीं पर 1.प्राण, 2.श्रधा, 3.आकाश, 4.वायु, 5.तेज, 6.जल, 7.पृथ्वी, 8.इन्द्रिय, 9.मन, 10.अन्न, 11.वीर्य, 12.तप, 13.मन्त्र, 14.कर्म, 15.लोक और 16.नाम।

16 कलाओं का रहस्य जानिए...

16 कलाएं दरअसल बोध प्राप्त योगी की भिन्न-भिन्न स्थितियां हैं। बोध की अवस्था के आधार पर आत्मा के लिए प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक चन्द्रमा के प्रकाश की 15 अवस्थाएं ली गई हैं। अमावास्या अज्ञान का प्रतीक है तो पूर्णिमा पूर्ण ज्ञान का।

19 अवस्थाएं - श्रीमद्भगवदगीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने आत्म तत्व प्राप्त योगी के बोध की उन्नीस स्थितियों को प्रकाश की भिन्न- भिन्न अवस्था से बताया है। इसमें अग्निर्ज्योतिरहः बोध की 3 प्रारंभिक स्थिति हैं और शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम् की 15 कला शुक्ल पक्ष की 01..हैं। इनमें से आत्मा की 16 कलाएं हैं।

आत्मा की सबसे पहली कला ही विलक्षण है। इस पहली अवस्था या उससे पहली की तीन स्थिति होने पर भी योगी अपना जन्म और मृत्यु का दृष्टा हो जाता है और मृत्यु भय से मुक्त हो जाता है।

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः
षण्मासा उत्तरायणम्।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म
ब्रह्मविदो जनाः॥

अर्थात - जिस मार्ग में ज्योतिर्मय अग्नि-अभिमानी देवता हैं, दिन का अभिमानी देवता है, शुक्ल पक्ष का अभिमानी देवता है और उत्तरायण के छः महीनों का अभिमानी देवता है, उस मार्ग में मरकर गए हुए ब्रह्मवेत्ता योगीजन उपयुक्त देवताओं द्वारा क्रम से ले जाए जाकर ब्रह्म को प्राप्त होते हैं।- (8-24)

भावार्थ - श्रीकृष्ण कहते हैं जो योगी अग्नि, ज्योति, दिन, शुक्लपक्ष, उत्तरायण के छह माह में देह त्यागते हैं अर्थात जिन पुरुषों और योगियों में आत्म ज्ञान का प्रकाश हो जाता है, वह ज्ञान के प्रकाश से अग्निमय, ज्योर्तिमय, दिन के सामान, शुक्लपक्ष की चांदनी के समान प्रकाशमय और उत्तरायण के छह माहों के समान परम प्रकाशमय हो जाते हैं। अर्थात जिन्हें आत्मज्ञान हो जाता है। आत्मज्ञान का अर्थ है स्वयं को जानना या देह से अलग स्वयं की स्थिति को पहचानना।

विस्तार से...

1.अग्नि- बुद्धि सतोगुणी हो जाती है दृष्टा एवं साक्षी स्वभाव विकसित होने लगता है।

2.ज्योति- ज्योति के सामान आत्म साक्षात्कार की प्रबल इच्छा बनी रहती है। दृष्टा एवं साक्षी स्वभाव ज्योति के समान गहरा होता जाता है।

3.अहः- दृष्टा एवं साक्षी स्वभाव दिन के प्रकाश की तरह स्थित हो जाता है।

16 कला - 15कला शुक्ल पक्ष + 01 उत्तरायण कला = 16

1.बुद्धि का निश्चयात्मक हो जाना।

2.अनेक जन्मों की सुधि आने लगती है।

3.चित्त वृत्ति नष्ट हो जाती है।

4.अहंकार नष्ट हो जाता है।

5.संकल्प-विकल्प समाप्त हो जाते हैं। स्वयं के स्वरुप का बोध होने लगता है।

6.आकाश तत्व में पूर्ण नियंत्रण हो जाता है। कहा हुआ प्रत्येक शब्द सत्य होता है।

7.वायु तत्व में पूर्ण नियंत्रण हो जाता है। स्पर्श मात्र से रोग मुक्त कर देता है।

8.अग्नि तत्व में पूर्ण नियंत्रण हो जाता है। दृष्टि मात्र से कल्याण करने की शक्ति आ जाती है।

9.जल तत्व में पूर्ण नियंत्रण हो जाता है। जल स्थान दे देता है। नदी, समुद्र आदि कोई बाधा नहीं रहती।

10.पृथ्वी तत्व में पूर्ण नियंत्रण हो जाता है। हर समय देह से सुगंध आने लगती है, नींद, भूख प्यास नहीं लगती।

11.जन्म, मृत्यु, स्थिति अपने आधीन हो जाती है।

12.समस्त भूतों से एक रूपता हो जाती है और सब पर नियंत्रण हो जाता है। जड़ चेतन इच्छानुसार कार्य करते हैं।

13.समय पर नियंत्रण हो जाता है। देह वृद्धि रुक जाती है अथवा अपनी इच्छा से होती है।

14.सर्व व्यापी हो जाता है। एक साथ अनेक रूपों में प्रकट हो सकता है। पूर्णता अनुभव करता है। लोक कल्याण के लिए संकल्प धारण कर सकता है।

15.कारण का भी कारण हो जाता है। यह अव्यक्त अवस्था है।

16. उत्तरायण कला- अपनी इच्छा अनुसार समस्त दिव्यता के साथ अवतार रूप में जन्म लेता है जैसे राम, कृष्ण यहां उत्तरायण के प्रकाश की तरह उसकी दिव्यता फैलती है।

सोलहवीं कला पहले और पन्द्रहवीं को बाद में स्थान दिया है। इससे निर्गुण सगुण स्थिति भी सुस्पष्ट हो जाती है। सोलह कला युक्त पुरुष में व्यक्त अव्यक्त की सभी अवस्थाएं होती हैं। यही दिव्यता है।

मनचाही संतान प्राप्ती के रहस्य और ज्योतिषीय उपाय

पं. के.आर.उपाध्याय, भोपाल

किसी भी स्त्री पुरुष के जीवन के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जीवन के चार प्रमुख पुरूषार्थ हैं, जिस प्रकार जीवन यापन के लिए धन, ईश्वर प्राप्ति अर्थात् मोक्ष आत्म शुद्धि धर्म का प्रमुख लक्ष्य है, ठीक उसी प्रकार सृष्टि विकास के लिए काम (समभोग) भी जीव मात्र की भ्रूण भूत अभिवृति है। प्राणियों केलिए काम (समभोग) के दो मुख्य उद्देश्य हैं प्रथम विषयानंद तथा दूसरा वंश वृद्धि। संतति अर्थात् वंश वृद्धि काम का मुलभूत आवश्यक आधार है। जिसे ज्योतिष शास्त्र जन्म कुंडली के... मूलतः सप्तम भाव, सप्तमेश एवं शुक्र के माध्यम से अभिव्यक्त करता है।

संतान का कारक कुंडली का पंचम भाव, पंचमेश तथा चंद्र, शुक्र, सूर्य, गुरु एवं मंगल है। चंद्र और मंगल स्त्री के मासिक धर्म और अंड निर्माण के कारण बनते हैं तथा गुरु और चंद्रमा पुरूष के वीर्य और शुक्राणुओं के कारक है। स्त्री के अंड (डिंब) एवं पुरुष के शुक्राणु के सहयोग से गर्भ धारण होता है। अतः इनका बलवान एवं ऊर्जावान होना परम आवश्यक है।

भारतीय ज्योतिष में ग्रह और राशियों को भी स्त्री-पुरुष वर्गों में बांटा गया है। मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुंभ को पुरुष राशि और वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन राशियों को स्त्री राशि कहा गया है। इसी प्रकार चंद्रमा और शुक्र जहां स्त्री स्वभाव ग्रह है वहीं सूर्य, मंगल और गुरु पुरुष ग्रह हैं तथा शनी, राहु, बुध व केतु नपुंसक ग्रह माने जाते हैं। स्त्री जातकों में स्त्री राशि और स्त्री ग्रहों का प्रभाव अधिक होने पर स्त्रैण गुण अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में होंगे। ऐसा देखा गया कि जिन मामलों में पुरुष जातकों की तुलना में स्त्री जातकों का विश्लेषण किया जाता है, उनमें स्त्री जातकों के लिए अलग नियम दिए गए हैं। शेष योगों के मामले में स्त्री और पुरुष जातकों को कमोवेश एक ही प्रकार से फलित किए जाते हैं।

ज्योतिष के अनुसार सभी ग्रह शरीर के किसी न किसी अंग का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन्हीं ग्रहों के प्रभाव स्वरुप हमें फल प्राप्त होते हैं और स्वास्थ्य का हाल जाना जा सकता है। जब कोई भी ग्रह पीड़ित होकर लग्न, लग्नेश, षष्ठम भाव अथवा अष्टम भाव से सम्बन्ध बनाता है। तो ग्रह से संबंधित अंग रोग प्रभावित हो सकता है। प्रत्येक ग्रह शरीर के किसी न किसी अंग को प्रभावित अवश्य करता है या उससे संबंधित बिमारी को दर्शाता है। जैसे कि - सूर्य हृदय, पेट, पित्त , दायीं आंख, घाव, जलने का घाव, गिरना, रक्त प्रवाह में बाधा आदि को दिखाता है। उपरोक्त ग्रहों में जो ग्रह छठे भाव का स्वामी हो या छठे भाव के स्वामी से युति सम्बन्ध बनाए उस ग्रह की दशा में रोग होने के योग बनते हैं। छठे भाव के स्वामी का सम्बन्ध लग्न भाव लग्नेश या अष्टमेश से होना स्वास्थ्य के पक्ष से शुभ नहीं माना जाता है। जब छठे भाव का स्वामी एकादश भाव में हो तो रोग अधिक होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। इसी प्रकार छठे भाव का स्वामी अष्टम भाव में हो तो व्यक्ति को लंबी अवधि के रोग होने की अधिक संभावनाएं रहती हैं।

सामान्यतया महिलाओं की दो-तीन समस्याएं ऐसी हैं जो आम है। पहली खून की कमी, दूसरी प्रदर (लीकोरिया) व कमर दर्द और तीसरी है अत्यधिक चिंताग्रस्त रहना। ये समस्याऐं मूलतः मासिकधर्म ही से जुड़ी हुई होती हैं। बहुत सी माता-बहनें इन समस्याओं को सामान्य मानकर नजरअंदाज करती रहती है जिससे आगे चलकर उनकी खुद की जिन्दगी और परिवार भी बुरी तरह प्रभावित होते हैं।

माहवारी चक्र महीने में एक बार होता है, सामान्यतः 28 से 32 दिनों में एक बार। हालांकि अधिकतर मासिक धर्म का समय तीन से पांच दिन रहता है परन्तु दो से सात दिन तक की अवधि को सामान्य माना जाता है। अधिकांश 10 से 15 साल की आयु की लड़की के अंडाशय हर महीने एक

विकसित डिम्ब (अण्डा) उत्पन्न करना शुरु कर देते हैं। वह अण्डा अण्डवाहिका नली (फैलोपियन ट्यूब) के द्वारा नीचे जाता है जो कि अंडाशय को गर्भाशय से जोड़ती है। जब अण्डा गर्भाशय में पहुंचता है, उसका स्तर रक्त और तरल पदार्थ से गाढ़ा हो जाता है। ऐसा इसलिए होता है कि यदि अण्डा उर्वरित हो जाए, तो वह बढ़ सके और शिशु के जन्म के लिए उसके स्तर में विकसित हो सके। यदि उस डिम्ब का पुरुष के शुक्राणु से सम्मिलन न हो तो वह स्राव बन जाता है जो कि योनिमार्ग से निष्कासित हो जाता है। इसी स्राव को मासिक धर्म, रजोधर्म या माहवारी कहते हैं।

ज्योतिष गुरुओं ने मासिक धर्म की समस्याओं का समाधान सिंदूर में बताया है। केवल सिंदूर ही नहीं लाल चूडियां, लाल साड़ी, लाल अंतःवस्त्र, लाल बिंदिया और लाल लिपिस्टिक समस्या का समाधान कर सकते हैं। ज्योतिषी दृष्टिकोण से इसका कारण यह माना जाता है कि मासिक धर्म के दौरान मंगल का ह्रास होता है। इस मंगल की पूर्ति करने के लिए महिलाओं को लाल रंग का अधिक से अधिक इस्तेमाल उन्हें पुनः शक्ति प्राप्त करा सकता है। इसके अलावा स्त्री-पुरुष संबंधों को संतोषप्रद बनाने में भी मदद करता है। मांगलिक स्त्रियों या ऐसी स्त्रियों जिनकी शादी मांगलिक पुरुष से हुई है, यह उपचार करें तो बेहतर है।

इस समस्त प्रक्रिया का उद्देश्य संतान प्राप्ती से जुडा है... जो सभी की प्राकृतिक जिम्मेदारी भी होती है व जीवन का उद्देश्य भी.....।

जन्मकालीन चंद्रमा से जब गोचर का चंद्रमा 3,6,10 एवं 11वें भाव को छोड़कर अर्थात लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, नवम एवं बारहवें भाव से गोचर करता है तथा उसे मंगल देखता है तथा पुरुष की जन्म कुंडली में जन्मकालीन चंद्रमा से गोचर का चंद्रमा 3,6,10,11 में से किसी एक भाव में हो तथा गुरु से चंद्रमा दृष्ट हो तब स्त्री पुरुष के संयोग से गर्भ धारण होता है। यदि पंचम भाव को सूर्य मंगल एवं गुरु देखे तथा पंचम पर किसी ग्रह का दुष्ट प्रभाव न हो तो पुत्रोत्पति होता है। यदि पंचमेश पुरुष ग्रह होकर पाप दृष्ट या युत न हो और जब चंद्र या शुक्र पचम या पंचमेश को देखे तथा पाप प्रभाव में पंचम या पंचमेश न हो तो ऐसी अवस्था में अधिकतर कन्या संतति उत्पन्न होती है।

जो दम्पति मेडिकल जांच में ठीक है किंतु संतान उत्पति में असफल है ऐसे उक्त वर्णित समय का उपयोग कर संतानोत्पति कर सकते हैं। किंतु जो दम्पति मेडिकल जांच में ठीक नहीं किंतु उनकी कुंडलियों में संतान योग के कारण दिखाई दे ऐसे दम्पतियों को उचित चिकित्सा करवाना ही श्रेष्ठ है। यदि लग्नेश, लग्न, द्वितीय या तृतीय भावस्थ हो तो प्रथम संतान पुत्र और लग्नेश चतुर्थ भाव में हो तो द्वितीय संतान पुत्र होती है। यदि पंचमेश एवं पंचम भाव पर गुरु की दृष्टि तथा पंचम एवं पंचमेश पापत्व प्रभाव से रहित हो तो ऐसी स्थिति में अधिकांशतः पुत्रोत्पति होती हैं पंचम भाव शुभ प्रभाव में हो तो संतान योग होता है किंतु शुभ ग्रह का पंचमेश से दृष्ट न होने पर संतान का अभाव रहता है। सप्तम में शुक्र दशम में चंद्रमा तथा चतुर्थ में पापग्रह होने से संतानहीन योग बनता है। पंचमेश जिस भाव में स्थित है वहीं से 5,6,12वें भाव में दुष्ट ग्रह होने पर संतान अभाव रहता है। यदि संतान हो भी जाये तो उसके जीवित या स्वस्थ्य रहने में संदेह है। किसी जातक के जन्मांग में पंचम भाव पर पापी ग्रह शनि, राहु, केतु अथवा नीच ग्रह की दृष्टि या युति, पंचम भाव में पंचमेश नीचस्थ हो, द्वादशेष, अष्टमेश, षष्ठेश से दृष्ट या युत होने पर संतानोत्पति में बाधक है क्योंकि दुष्ट ग्रह के प्रभाव से अंडे के विकास में बाधा आती है तथा प्रोजस्टीरोन हारमोन की कमी हो जाती है। गर्भाशय की मांसपेशियां कमजोर होती है। मंगल की दृष्टि अबार्शन का कारण बनती है। पंचम भाव के उपाधिपति के नक्षत्र के उपनक्षत्र में स्थित ग्रह की दशा, अंतरदशा और प्रत्यंतर में संतान उत्पति होती है।

दूसरी समस्या है छोटी चिंताओं की पहले मैं इसे गंभीरता से नहीं लेता था। क्योंकि मुझे यह स्त्री विशेष या कह दें पर्सनेलिटी विशेष की समस्या लगती थी। जो केवल स्त्री ही नहीं किसी इंडीजुअल पुरुष में भी हो सकती थी। ज्योतिष अध्ययन के अनुसार चिंता करने की समस्या के कारण स्त्रियों और पुरुषों में एक जैसे होते हैं। यानि इसमें फर्क नहीं किया गया है। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि पूर्व में जातक हमेशा पुरुष ही रहे होंगे। ज्योतिष की पुस्तकें पढ़ने के दौरान ही एक पुस्तक हाथ लगी। इसमें स्त्रियों और पुरुषों के सोचने के तरीके के बारे में विस्तार से बताया गया था। तो मेरा भी ध्यान इस ओर गया।

अब सवाल यह है कि छोटी चिंताओं का स्वरूप क्या है और इसका एक साथ समाधान कैसे किया जा सकता है? ज्योतिष की ही पुस्तकों में इसका विस्तृत और सटीक उपाय बताया गया है। जिस तरह एक आदमी को सुखमय वैवाहिक संबंध की दृष्टि से संतुष्टिदायक जिंदगी के लिए शुक्र की आवश्यकता होती है वैसे ही स्त्रियों के लिए इसे गुरु के रूप में देखा गया है। गुरु का नाम गुरु है तो ऐसा लगता है जैसे स्त्रियों को ज्ञान देने वाले की जरूरत है लेकिन वास्तव में गुरु नहीं बल्कि सांसारिकता ज्ञान और सांसारिकता का लाभ देती है। गुरु इसी सांसारिकता को रिप्रजेंट करता है। अब चूंकि गुरु किसी भी स्थिति में नुकसान नहीं करता। हां फल कम या अधिक दे सकता है। ऐसे में अधिकांश स्त्रियों को आँख मूंदकर पुखराज पहनने की सलाह

दे दी जाती है। इससे उनके सोचने का नजरिया वृहद् हो जाता है। इसी के साथ मोती पहनने की सलाह भी दी जाती है। चंद्रमा का उपचार विचार श्रृंखला को थामे रखता है। गुरु और चंद्रमा का कांबिनेशन प्राथमिक स्तर पर ही अधिकांश समस्याओं का समाधान कर देता है। उन विचारों और कारणों को बढ़ने ही नहीं देता जो चिंताओं को हवा दे। इस तरह महिलाओं को फैशन में ही सही पुखराज और मोती पहन लेने चाहिए। भले ही वे ज्योतिष से संबंधित स्टोन हैं, लेकिन खूबसूरत होने के कारण ग्राह्य भी हैं।

बुध का प्रभाव- पुरुष कुण्डली में जहां शनि पीड़ादायी ग्रह है वहीं स्त्री जातक के लिए बुध पीड़ादायी ग्रह सिद्ध होता है। बुध के प्रभाव में एक ही रूटीन में लंबे समय तक बने रहना और एक जैसी क्रियाओं को लगातार दोहराते रहना पुरुष के लिए आसान है, पर स्त्री जातकों के लिए यह पीड़ादायी सिद्ध होता है। ऐसे में महिलाओं को अपनी दिनचर्या, कपड़े, रहने का तौर तरीका लगातार बदलते रहने की सलाह दी जाती है। इससे उनकी जिंदगी में दुख और तकलीफ का असर कम होता है।

मंगल का प्रभाव- सामान्य तौर पर ऋतुस्राव के दौरान स्त्रियों के रक्त की हानि होती है। ज्योतिष में इसे मंगल के ह्रास के रूप में देखा जाता है। मंगल के इस नुकसान की भरपाई के लिए सुहागिनों को लाल बिंदी लगाने, लाल चूड़ियां पहनने, लाल साड़ी एवं लाल रंग का सिंदूर लगाने की सलाह दी जाती है। मंगल की भूमिका अधिकार एवं तेज क रूप में होती है। लाल रंग को धारण करने से मंगल का तेज महिलाओं को फिर से प्राप्त हो सकता है।

चन्द्रमा का प्रभाव- चंद्रमा पीड़ित होने पर शरीर में खनिज तत्वों और कैल्शियम की कमी हो जाती है। राहू, केतू, बुध और शनि के कारण चंद्रमा पीड़ित हो तो स्त्री कर्कशा, रुदन करने वाली या कलहप्रिय होती है। ऐसी स्त्रियों को रोजाना सुबह खाली पेट मिश्री के साथ मक्खन खाने की सलाह दी जाती है। मक्खन में उपलब्ध खनिज तत्व एवं कैल्शियम जातक के केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र को फिर से दुरुस्त करता है और जातक हंसने खिलखिलाने लगता है।

किसी भी रोगी जातक की कुंडली का विश्लेषण करते समय सबसे पहले 3, 6, 8 भावों के ग्रहों की शक्ति का आंकलन करना चाहिए। जन्मकुंडली के अनुसार शरीर का विभिन्न प्रकार के रोगों से बचाव और उनसे मुक्ति प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। लेकिन इसके साथ ही साथ कुण्डली में रोगों का अध्ययन करते समय इन तथ्यों का अध्ययन करते हुए ग्रहों की युति, प्रकृति, दृष्टि, उनका परमोच्च या परम नीच की स्थिति का भी अध्ययन आवश्यक है तभी हम किसी निर्णय पर पहुंच सकते हैं।

आदि काल से ऋषियों ने पहले ही संतान प्राप्ति के नियम और संयम आदि निर्धारित किये थे जिस प्रकार पृथ्वी पर उत्पत्ति और विनाश का क्रम हमेशा से चलता रहा है और ये आगे भी ये नियमित रहेगा उसी प्रकार इस क्रम में जड़-चेतन का जन्म होता है फिर उसका पालन होता है इसके पश्चात विनाश होता है। मनचाही सन्तान लड़का या लड़की उत्पन्न करना हमारे वश की बात है, बशर्ते हमें इस विषय पर पर्याप्त और ठीकठाक जानकारी हो। शास्त्र सम्मत विधी विधान के अनुसार मन पसन्द सन्तान की उत्पत्ती कैसे हो इस पर चर्चा हम यहां करेंगे।

गर्भाधान के समय केंद्र एवम त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, तीसरे छठे ग्यारहवें घरों में पाप ग्रह हों, लग्न पर मंगल गुरू इत्यादि शुभ कारक ग्रहों की दृष्टि हो, विषम चंद्रमा नवमांश कुंडली में हो और मासिक धर्म से सम रात्रि हो, उस समय सात्विक विचार पूर्वक योग्य पुत्र की कामना से यदि रति की जाये तो निश्चित ही योग्य पुत्र की प्राप्ति होती है। इस समय में पुरूष का दायां एवम स्त्री का बांया स्वर ही चलना चाहिये, यह अत्यंत अनुभूत और अचूक उपाय है जो खाली नही जाता। इसमें ध्यान देने वाली बात यह है कि पुरुष का जब दाहिना स्वर चलता है तब उसका दाहिना अंडकोशः अधिक मात्रा में शुक्राणुओं का विसर्जन करता है जिससे कि अधिक मात्रा में पुल्लिंग शुक्राणु निकलते हैं। अतः पुत्र उत्पन्न होता है।

योग्य पुत्र प्राप्त करने के इच्छुक दंपति अगर निम्न नियमों का पालन करें तो अवश्य ही उत्तम पुत्र प्राप्त होगा। स्त्री को हमेशा पुरूष के बायें तरफ़ सोना चाहिये। कुछ देर बांयी करवट लेटने से दायां स्वर और दाहिनी करवट लेटने से बांया स्वर चालू हो जाता है। इस स्थिति में जब पुरूष का दांया स्वर चलने लगे और स्त्री का बांया स्वर चलने लगे तब सहवास करना चाहिये। इस स्थिति में अगर गर्भाधान हो गया तो अवश्य ही पुत्र उत्पन्न होगा। स्वर की जांच के लिये नथुनों पर अंगुली रखकर ज्ञात किया जा सकता है।

योग्य कन्या संतान की प्राप्ति के लिये स्त्री को हमेशा पुरूष के दाहिनी और सोना चाहिये। इस स्थिति में स्त्री का दाहिना स्वर चलने लगेगा और स्त्री के बायीं तरफ़ लेटे पुरूष का बांया स्वर चलने लगेगा। इस स्थिति में अगर गर्भादान होता है तो निश्चित ही सुयोग्य और गुणवती कन्या संतान प्राप्त होगी।

विवाहोपरांत सभी दम्पति की अभिलाषा होती है कि उसकी कम से कम एक संतान अवश्य हो -जिस प्रकार धरती पर समय पर बीज का रोपड किया जाता है तो बीज की उत्पत्ति और उगने वाले पेड़ का विकास सुचारु रूप से होता रहता है और समय आने पर उच्चतम फ़लों की प्राप्ति होती है अगर वर्षा ऋतु वाले बीज को ग्रीष्म ऋतु में रोपड कर दिया जावे तो वह अपनी प्रकृति के अनुसार उसी

प्रकार के मौसम और रख रखाव की आवश्यकता को चाहेगा और नहीं मिल पाया तो वह सूख कर खत्म हो जायेगा।

इसी प्रकार से प्रकृति के अनुसार पुरुष और स्त्री को गर्भाधान का कारण समझ लेना चाहिये जिनका पालन करने से आप तो संतानवान होंगे ही आप की संतान भी आगे कभी दुखों का सामना नहीं करेगी।

इनमे से अधिकांश औषधियों का चयन प्राचीन ग्रंथों से किया गया हैं और वैद्यों एवं प्रयोगकर्ता इन्हें पूर्ण सफल और अनुभव सिद्ध भी मानते हैं और कुछ मंत्रों के विधान से भी और निष्ठापूर्वक किया गया ब्रत भी फलदायी होता है।

कुछ तिथियां ऐसी भी हैं जिनमे सहवास से बचना चाहिए-जैसे अष्टमी, एकादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा और अमावस्या -चन्द्रावती ऋषि का कथन है कि लड़का-लड़की का जन्म गर्भाधान के समय स्त्री-पुरुष के दायां-बायां श्वास क्रिया, पिंगला-तूड़ा नाड़ी, सूर्यस्वर तथा चन्द्रस्वर की स्थिति पर निर्भर करता है गर्भाधान के समय स्त्री का दाहिना श्वास चले तो पुत्री तथा बायां श्वास चले तो पुत्र होगा- यदि आप पुत्र प्राप्त करना चाहते हैं और वह भी गुणवान, तो हम आपकी सुविधा के लिए आगे विस्तार से बताते है। माहवारी के बाद याने -मासिक धर्म शुरू होने के प्रथम पांच दिन हमारी प्राचीन परम्परा है कि वह रसोईघर और पूजा घर से दूर रहती है ।

चार मास का गर्भ हो जाने के पश्चात दंपति को सहवास नहीं करना चाहिये अन्यथा संतान अपंग और रोगी पैदा होने का खतरा बना रहता है- इस काल के बाद माता को पवित्र और सुख शांति के साथ देव आराधना और वीरोचित साहित्य के पठन पाठन में मन लगाना चाहिये इसका गर्भस्थ शिशु पर अत्यंत प्रभावकारी असर पड़ता है।

अगर दंपति की जन्मकुंडली के दोषों से संतान प्राप्त होने में दिक्कत आ रही हो तो बाधा दूर करने के लिये संतान गोपाल स्तोत्र के सवा लाख जप करने चाहिये- यदि संतान मे सूर्य बाधा कारक बन रहा हो तो हरिवंश पुराण का श्रवण करें- राहु बाधक हो तो कन्यादान से- केतु बाधक हो तो गोदान से- शनि या मंगल बाधक बन रहे हों तो रुद्राभिषेक से संतान प्राप्ति में आने वाली बाधायें दूर की जा सकती हैं।

मासिक स्राव रुकने से अंतिम दिन (ऋतुकाल) के बाद 4, 6, 8, 10, 12, 14 एवं 16वीं रात्रि के गर्भाधान से पुत्र तथा 5, 7, 9, 11, 13 एवं 15वीं रात्रि के गर्भ धारण पर कन्या रत्न का जन्म होता है।

छठवीं रात्रि के गर्भ से मध्यम आयु वाला पुत्र जन्म ले आठवीं रात्रि के गर्भ से पैदा पुत्र ऐश्वर्यशाली होता है।

दसवीं रात्रि के गर्भ से चतुर पुत्र का जन्म होता है।

बारहवीं रात्रि के गर्भ से पुरुषोत्तम पुत्र जन्म लेता है।

चौदहवीं रात्रि के गर्भ से उत्तम पुत्र का जन्म होता है।

पंद्रहवीं रात्रि के गर्भ से सौभाग्यवती पुत्री पैदा होती है।

सोलहवीं रात्रि के गर्भ से सर्वगुण संपन्न, पुत्र पैदा होता है।

ज्योतिष तथा वास्तु शास्त्र में कुछ ऐसे प्रमुख दोष बताये गए है जिनके कारण संतान की प्राप्ति नहीं होती या वंश वृद्धि रुक जाती है इस समस्या के पीछे की वास्तविकता-क्या है इसका शास्त्रीय और ज्योतिषीय आधार क्या है ये आप अपनी जन्म कुंडली के द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकते है-इसके लिए आप हरिवंश पुराण का पाठ या संतान गोपाल मंत्र का जाप करें

पति-पत्नी दोनों सुबह स्नान कर पूरी पवित्रता के साथ मंत्र का जप तुलसी की माला से करें- संतान प्राप्ति गोपाल मन्त्र का रोज 108 जप करें और मंत्र जप के बाद भगवान से समर्पित भाव से निरोग, दीर्घजीवी, अच्छे चरित्रवाला, सेहतमंद पुत्र की कामना करें। अपने कमरे में श्री कृष्ण भगवान की बाल रूप की फोटो लगाये या लड्डू गोपाल को रोज माखन मिश्री की भोग अर्पण करें।

कई बार प्रायः देखने में आया है कि विवाह के वर्षों बाद भी गर्भ धारण नहीं हो पाता या बार-बार गर्भपात हो जाता है, ज्योतिष में इस समस्या या दोष का एक प्रमुख कारण पति या पत्नी की कुंडली में संतान दोष अथवा पितृ दोष हो सकता है या घर का वास्तुदोष भी होता है, जिसके कारण गर्भ धारण नहीं हो पाता या बार-बार गर्भपात हो जाता है। श्री गणपति की मूर्ति पर संतान प्राप्ति की इच्छुक महिला प्रतिदिन स्नानादि से निवृत होकर एक माह तक बिल्ब फल चढ़ाकर इस मंत्र की 11 माला प्रतिदिन जपने से संतान प्राप्ति होती है।

ॐ पार्वतीप्रियनंदनाय नमः

माघ शुक्ल षष्ठी को संतानप्राप्ति की कामना से शीतला षष्ठी का व्रत रखा जाता है कहीं-कहीं इसे बासियौरा नाम से भी जाना जाता हैं इस दिन प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर मां शीतला देवी का षोडशोपचार-पूर्वक पूजन करना चाहिये- इस दिन बासी भोजन का भोग लगाकर बासी भोजन ग्रहण किया जाता है। अगर दंपति की जन्मकुंडली के दोषों से संतान प्राप्त होने में दिक्कत आ रही हो तो बाधा दूर करने के लिये संतान गोपाल जप करने चाहिये। यदि संतान मे सूर्य बाधा कारक बन रहा हो तो हरिवंश पुराण का श्रवण करें, राहु बाधक हो तो कन्यादान से, केतु बाधक हो तो गोदान से, शनि या मंगल बाधक बन रहे हों तो ग्रह शांति के साथ साथ रुद्राभिषेक से संतान प्राप्ति में आने वाली बाधायें दूर की जा सकती हैं,जिसके योग्य साधक से कराई जा सकती है।

राशिवार 2023 का वार्षिक भविष्य

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

नूतन वर्ष 2023 में आपका राशिवार भविष्य कैसा रहेगा यह मेष से मीन राशि तक बारहों राशि में जन्में प्रत्येक व्यक्ति की राशि के अनुसार आगामी वर्ष 2023 का भविष्य निम्नानुसार है.

मेष राशि

आपकी राशि में यह वर्ष अनुकूल फल देने वाला होगा राशि से एकादश शनिएक तरफ तो आपको रुकी हुई संपत्ति का लाभ देगा तथा दूसरी ओर आप के मान सम्मान प्रतिष्ठा की वृद्धि भी करेगा।

स्वास्थ्य- इस वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि सेवर्ष का पूर्वार्ध उदर विकार मानसिक तनाव से युक्त रहेगाअनावश्यक तनाव को कम करना चाहिए जिससे कि वायु एवं पित्त विकार ना हो अतःखाद्यान्न के सेवन में ध्यान रखना चाहिए। वर्ष के उत्तरार्ध याने जुलाई से दिसम्बर के बीच के समय में विदेश अथवा लम्बी क्षेत्रीय यात्राओं मे सावधानी रखनी चाहिए स्वास्थ्य अथवा धन का अपव्यय अनावश्यक खर्च हो सकता है। भ्रमण नें स्वास्थ्य पर विपरीत असर नहो इसका ध्यान रख ना चाहिए।

धन सम्पत्ति - आपको बहुत दिनों से स्थाई संपत्ति के विचार रहे हैं जोकि अप्रैल से जुलाई के बीच में इच्छित संपत्ति प्राप्त होने के उत्तम योग हैं पुराना रुका हुआ धन भी वर्ष के उत्तरार्ध सितंबर से नवंबर के बीच प्राप्त होने की संभावना है।

आपका केरियर- यदि आप नौकरी करना चाह रहे हैं तो यह वर्ष आपको सफलता देगा और नौकरी में है तो वर्ष के उत्तरार्ध में पद प्रतिष्ठा प्रमोशन आदि की वृद्धि की संभावना बनती है।

व्यापारी वर्ग के लिए मई से जून जुलाई के बीच कुछ नवीनता के कार्य होने की संभावना हैयदि पुराने कार्य में रुकावट आ रही होगी तो उसे अधिक मन लगाकर करें जिससे कि सफलता प्राप्त हो सके। चालू व्यापार कार्य बदलने का योग नहीं है।

प्रत्येक माह एक नजर में

जनवरी में व्यस्तता अधिक रहेगी स्वास्थ्य पर ध्यान रखें।

फरवरी में मांगलिक और धार्मिक कार्यों में व्यस्तता और खर्च।

मार्च मेंअपने इष्ट मित्रों का सहयोग और कार्य मेंअधिक व्यस्त रहगे आर्थिक खर्च वृद्धि संभव।

अप्रैल-मई में कुछ नए कार्य की योजना बनेगी और उसमें धनिया भी होगा जून सामान्य रहेगा जुलाई-अगस्त में यात्राएं अधिक होगी तथा कुछ नए कारोबार के लिए अथवा स्थाई संपत्ति के लिए खर्च संभव सितंबर सामान्य है पारिवारिक कार्यो में अधिक ध्यान देना होगा स्वास्थ्य पर भी ध्यान दें।

अक्टूबर-नवंबर में सामाजिक कार्य दायित्व तथा रुके हुए कार्यों में अधिक ध्यान दें अन्यथा आर्थिक क्षति संभव।

दिसंबर माह में कुछ पुराने मित्रों से संयोगवश मुलाकात होगी तो था व्यस्तता रहेगी।

नए कार्य कब करें- आपको अपने पारिवारिक कार्य में व्यस्तता के बावजूद नए कार्य करने की यदि इच्छा है तो अप्रैल जून अथवा अगस्त माह में योजना बनाकर आरंभ कर सकते हैं।

शुभ फल वृद्धि के उपाय- प्रतिदिन प्रातःअपने आराध्य देव का पूजन/स्मरण करें तथा लाल फल या गुड का प्रसाद अर्पण करें।

वृषभ राशि

आपकी राशि में यह वर्ष कर्म पक्ष की दृष्टि से बहुत उत्तम माना गया है आपको

कार्य में आने वाली बाधाएं दूर होंगी साथ ही कुछ पारिवारिक कार्य में भी उत्तम समय दे पाएंगे और सामाजिक यश तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि भी वर्ष में होगी।अन्य सामाजिक कार्य दायित्व के कार्य में व्यस्तता के कारण थोड़े धन लाभ में कमी अवश्य रहेगी परंतु मानसिक संतुष्टि रहेगी।

स्वास्थ्य- वर्ष के प्रारंभ के तीन माह आपको शीत विकार से सावधानी रखनी चाहिए। द्वादश राहु और षष्ठम केतु होने से भ्रमण अधिक खर्च तथा अनियमित जीवन के कारण रक्तविकार तथा रक्त शर्करा मधुमेह रोग से बचाव चाहिए। गरिष्ठ तली हुई वस्तु के खाधान्न के सेवन से सावधानी रखनी चाहिये।

धन सम्पत्ति- आपको इस वर्ष अचल संपत्ति से धन प्राप्ति के योग बनते हैं कुछ प्रॉपर्टी को बेचकर कोई अन्य प्रॉपर्टी लेना या उसका द्रव्य का व्यापार में सदुपयोग करना चाह रहे हो तो उसे आपकी इच्छानुसार बेचने या परिवर्तन की संभावना भी बनती है। यदिनौकरी कर रहे हैं तो संभव है कि आपको इच्छा के अनुरूप धन लाभ अथवा वेतन वृद्धि आदि वर्ष के उत्तरार्द्ध अर्थात जून के करीब से समय पर हो सकेगी।

आपका केरियर- आपकी राशि से दशम में शनि होने के तथा एकादश बृहस्पति होने से मनोनुकूल केरियर बनने में सहयोगी रहेगाकिसी तकनीकी कार्य मैं भी सफलता मिल सकती है यदि व्यापार करने की इच्छा है तो मशीनरी कारोबार धातु अथवा लोहे से सम्बधित फैक्ट्री आदि के कार्य के करने से सफलता मिल सकती हैयदि व्यापार में संलग्न है और पिछले समय में बाधाएं आ रही थी तो निश्चित रूप से इस वर्ष नियमितता और कार्य में सफलता के योग बनते हैं यदि नौकरी करना चाह रहे हैं तो यह वर्ष का पूर्वार्ध अच्छी मेहनत और प्रतियोगी कार्य के लिए तैयार हो कर प्रयास करने का समय है सफलत मिलने के उत्तम अवसर मिलेंगे।उसी समय के दौरान यदि आप नौकरी में हैं तो अपने अधिकारियों की प्रसन्नता और पदअवसर भी प्राप्त हो सकते हैं वर्ष के उत्तरार्ध अर्थात सितंबर से दिसंबर में अपने कार्यों में सावधानी बरतनी चाहिए अन्यथा कोई त्रुटि के कारण नुकसान हो सकता है।

प्रत्येक माह एक नजर में

जनवरी में कुछ विगत वर्ष के रुके हुए कार्य पूरे होंगे। फरवरी में अपने पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी लेकिन स्थाई संपत्ति के क्रय विक्रय की योजना बनेगी मार्च मेंआर्थिक कष्ट रहेगा अनावश्यक भ्रमण भी संभव अप्रैल-मई में पारिवारिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों में व्यस्तता तथा स्वास्थ्य पर ध्यान देने की आवश्यकता है।जून में थोड़ी लंबी यात्रा संभव है धन प्राप्ति के योग जुलाई अगस्त में प्रॉपर्टी से संबंधित कार्य करने के हैं इनमें धन लाभ के योग भी बनेंगे सितंबर में कुछ त्रुटि पूर्वक कार्य होने से मन में संशय रहेगा। अक्टूबर में स्वास्थ्य का ध्यान रखें वाहन चलाने में सावधानी रखें।नवंबर में सामान्य रहेगाव्यर्थ का दोषारोपण ना हो इसका ध्यान रखना जरूरी है दिसंबर में कुछ परिचित व्यक्तियों का सहयोग मिलेगा एवं धन लाभ भी अच्छा ही होगा

नए कार्य कब करें- कुछ नए कार्य इस वर्ष करने की इच्छा है तो इस वर्ष के पहले 2 मास अर्थात जनवरी-फरवरी में योजना बनाकर मार्च में या इसे अधिकतम अप्रेल मई में मूर्त रूप दिया जाना चाहिए। ताकि योजना शुभ ग्रहों के शुभ फलसे अच्छी तरह सफल हो सके इस समय के बाद सितम्बर माह भी नए कार्य की योजना क्रियान्वित के लिए उपयुक्त समय होगा शुभ फल वृद्धि के उपाय सफलताधन लाभ की वृद्धि के लिए शक्ति एवं लक्ष्मी आराधना नियमित करे। फलदार वृक्ष बोएं अथवा जल सिचिंत करे।

मिथुन राशि

आपकी राशि में यह वर्ष व्यस्तता का रहेगा कार्य का अधिकता तथा अधिक भ्रमण रह सकता है अप्रैल 23 के पश्चात आपके कार्य का मूल्यांकन उत्तम तरीके से होगा। धन संबंधी जो रुकावटें थी वह दूर होंगी तथा भूमि भवन कृषि कार्य आदि से भीलाभ प्राप्ति हो सकती है। जुलाई से अक्टूबर 23 के बीच अपनी वाणी पर संयत रखें तथा अनावश्यक वाद-विवाद से बचें। पत्नी के स्वास्थ्य का ध्यान रखे व्यर्थ खर्च के योग है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में कोई नए कार्य की योजना बनेगी।

स्वास्थ्य- इस वर्ष स्वास्थ्य के प्रति खाद्यान्नखाद्य पदार्थ के सेवन में ध्यान रखें ताकि उदर विकार अपच की शिकायत आदि नहीं रह सके इसके लिए जून से सितंबर 23के बीच सावधानी रखना जरूरी हैयदि कोई पुरानी स्वास्थ्य विकार है तो फरवरी से अप्रैल 23 के बीच इसका उपचार करा लेना चाहिए।

धन सम्पत्ति- इस वर्ष धन-संपत्ति के लिए खर्च के योग बन रहे हैं संभव हैयदि घर का मकान है तो उसमें कुछ परिवर्तन अथवा अधूरा कार्य पूरा करने के योग बनते हैं यदि स्वयं का मकान नहीं है तो जमीन / अथवा भवन क्रय करने का योग वर्ष के उत्तरार्द्ध जून 23 के पश्चात बनेगा। कुछ वर्षों पुराना रुका हुआ धन का द्रव्य जो कि किसी से प्रात होना था उसकी प्राप्ती भी इस वर्ष में हो सकती है।

आपका केरियर- इस वर्ष नवम शनि आपके भाग्य की वृद्धि करने मैं सहायक रहेगा हो सकता है आर्थिक दृष्टि से उतना लाभ ना मिले लेकिन विगत वर्षों से यह वर्ष अच्छा रहेगा।व्यापारी वर्ग के लिए समय अनुकूल रहेगा यदि नौकरी करते हैं तो अधिकारियों की प्रसन्नता और कार्य से संतुष्टि प्राप्त होगी विद्यार्थी वर्ग के लिए थोड़ी मेहनत अधिक रहने से समय अनुकूल होगा।

प्रत्येक माह एक नजर में

जनवरी में अधिक पारिवारिक कार्य में अधिकता रहेगी खर्च बढ़ेगा। फरवरी में मित्रों का सहयोग मिलेगा धार्मिक यात्राएं होंगी मार्च व्यस्तता का रहेगा थोड़े धन प्राप्ति में कमी रहेगी। अप्रैल-मई में सामाजिक कार्य दायित्व व्यस्तताकिसी स्थाई कार्य के खर्च की योजना बनेगी। जून में मानसिक तनाव रहेगा जिससे

थोड़ा मूड खराब रह सकता है और स्वास्थ्य पर विपरीत रह सकता है जुलाई में संतान की चिंता खर्च की अधिकता रहेगी अगस्त में पत्नी के स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए यात्रा यथासंभव टाले। सितंबर अक्टूबर में कोई भी निर्णय सोच समझ कर लें अनावश्यक व्यय के योग नवम्बर में अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें कही गई बात का परिजन में विरोध हो सकता है। दिसंबर में इच्छित कार्य में सफलता तथा सहयोग प्राप्त होगा।

नए कार्य कब करे- कुछ नए कार्य करने की यदि इच्छा है तो अप्रैल-मई सबसे उत्तम समय है अन्यथा सितंबर में किसी के सहयोग से कार्य कर सकते हैं व्यापारी वर्ग को नए कार्य जोकि स्वास्थ्य / खाद्यान्न कीट्रेडिंग से संबंध रखते हो करना शुभ फल दायक है।

शुभ फलवृद्धि के उपाय- आपका आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा फिर भी अधिक लाभ के लिए श्री गणपति जी को दुर्वा चढ़ाने तथा गणपति जी का स्तोत्र का पाठ करनेसे शुभफल आवश्यकता प्रधान व्यक्ति को हरे फल का दान करना।

कर्क राशि

आपकी राशि पर दशम राहु एवं नवम गुरु शुभ फलदायक है जनवरी से अप्रैल 23 के बीचशुभ फल की वृद्धि करेगा मान सम्मान प्रतिष्ठा वृद्धि योग देगा लेकिन राशि से अष्टम शनि होने से शनि की अढ़ैया है अतः आपकोकार्य करने की जल्दी में कोई गलत कार्य या निर्णय ना हो इसका ध्यान रखना चाहिए। वर्ष में अपना स्वास्थ्य पर ध्यान देवें।

स्वास्थ्य- शनि आपकी राशि से अष्टम होने के कारण संतान और कर्म पक्ष तथा राजकीय कार्यो की अधिक चिंताएं रह सकती हैं आप को स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव हो सकता है अतः स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए। श्वांस रोग, शीतविकार, जोड़ो का दर्द आदि से सावधानी रखे।

धन सम्पत्ति- इस वर्ष में आपकी राशि से नवम गुरु होने के कारण धार्मिक भावनाएं अधिक रहेंगी संपत्ति धार्मिक कार्यों में खर्च होंगी लेकिन स्वैच्छिक अपने नियमित कार्यों से लाभ भी होते रहेंगे। जिससे अतिरिक्त धन को संचय करने की स्थिति नहीं बन सकेगी परंतु सामाजिक कार्य दायित्व मांगलिक खर्च आदि कार्यों मे अतिरिक्त होने से धन संपत्ति को खर्च करने में सावधानी रखनी चाहिए।

आपका केरियर- आपको अपने कार्यों को गतिशीलता देने के लिए जनवरी से अप्रैल 2023 का समय अनुकूल है यदि व्यापार करते हैं तो इस समय में अधिक सजगता से कार्य करेंयदि नौकरी करना चाहते हैं तो यह समय प्रयास के लिए उपयुक्त है यदि नौकरी में हैं तो अपने कार्य की गतिशीलता से अपने वरिष्ठ जनों को अधिक प्रसन्नता देकर प्रगति लाभ ले सकते हैं।जुलाई से अक्टूबर 23 में अपना कार्य करने में विशेष सतर्कता /ध्यान रखें ताकि किसी प्रकार कार्य अवरोधना हो सके।

प्रत्येक माह एक नजर में

जनवरी एवं फरवरी में अपने कार्यों में अधिक गतिशीलता देना चाहिए शुभ समाचारों से मन प्रसन्न रहेगा मार्च पारिवारिक कार्य में अधिक व्यस्तता का है तथा खर्च भी अधिक होगा। अप्रैल मई अवधि के दौरान आप अपनी भावी योजना बनाकर कार्य में गतिशीलता देवे ताकि वर्ष में आर्थिक स्थिति ठीक रहे। जून माह स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। जुलाई अगस्त में खर्च की अधिकता रहेगी लेकिन सोच विचार कर खर्च करने से उसकी भरपाई यथा समय हो सकेगी सितंबर में किसी स्थाई कार्य या संपत्ति के लिएव्यस्तता रहेगी सोच विचार कर कार्य करने से लाभ प्राप्ति संभव। अक्टूबर माह में अनुकूल है इस समय सोचे गए कार्य सफलता की ओर अग्रसर होंगे। नवम्बर यात्रा में सावधानी बरतें स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव हो सकता है। दिसम्बर मास का उत्तरार्ध भ्रमण अधिक रहेगा पूर्वार्ध में इच्छित लाभ प्राप्ति के योग हैं।

नए कार्य कब करें- इस वर्ष 15 जनवरी से 15 अप्रैल के बीच नए कार्य की योजना बनाकर उसे क्रियान्वित करना शुभ है समय किसी कारण योजना क्रियान्वित नहीं कर पाए तो अक्टूबर मास उत्तम फलदायक है।

शुभफल वृद्धि के उपाय- इस वर्ष शनिवार को सुंदरकांड हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए यदि यह संभव ना हो तो उड़द उड़ददाल अथवा तेल शनि मंदिर या आवश्यकता प्रधान व्यक्ति को यथासंभव दान करना चाहिए।

सिंह राशि

वर्ष में कुछ स्थाई संपत्ति के बारे में विचार फलीभूत होंगे उद्यान लगाने या कृषि कार्य की योजना भी बनकर वर्ष मे सफलता प्राप्त करेगी। वर्ष में विरोधी सक्रिय रहेंगे किंतु आप अपनी सूझबूझ के साथ कार्य में सफलता प्राप्त कर सके कुछ धार्मिक खर्च अथवा यात्राएं होने के भी योग बनते हैं।

स्वास्थ्य- स्वास्थ्य की दृष्टि से उदर विकार लीवर से संबंधित विकार नहो इससे सावधानी रखें। नशीले पेय तथा तली हुई भारी चीज का सेवन पर नियंत्रण रखें।वर्ष के उत्तरार्ध में लम्बी दूरकी वाहन यात्रा से सावधानी रखें।कमर हड्डी के दर्द अथवा रक्त चाप पर नियंत्रण रखने का प्रयास करे।

धन सम्पत्ति- वर्ष मे आय के स्रोत सीमित रहेंगे अधिक मेहनत करने पर धन लाभ के योग बनते हैं यदि कोई स्थाई अचल संपत्ति लेना चाह रहे हैं तो वर्ष के प्रथम त्रैमास मे ही प्रयास करे सफलता मिल सकेगी। वर्ष के मध्य अर्थात जुलाई से अक्टूबर के बीच आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा इच्छित धन प्राप्ति अपने कर्म के अनुरूप मिलेगी।मित्रता या

साझेदारी से वर्ष में अधिक लाभ की उम्मीद नहीं है।

आपका केरियर- यदि नौकरी के लिए अपना कैरियर बनाना चाहते हैं तो वर्ष के प्रारंभ में किए गए प्रयास लाभप्रद रहेंगे प्रयास सेवरिष्ठ पद की सेवा से लाभान्वित हो सकेंगे।व्यापार करने वाले व्यक्तियों के लिएअच्छे योग इस वर्ष बन रहे हैं कुछ नवीन योजना के क्रियान्वयन के लिए भी प्रयास करें सफलता मिल सकेगी इसके लिए अनुकूल समय फरवरी अप्रैल एवं जून 2023 है जिसमें प्रयास करने से नवीन योजना क्रियान्वित हो सकती है।

प्रत्येक माह एक नजर में

जनवरी में खर्च की अधिकता रहेगी यात्राएं होंगी। फरवरी में किसी कार्य की नई योजना बनेगी जिसमें सहयोग प्राप्त होगा। मार्च में भ्रमण एवं खर्च अधिक होगा धनलाभ मे कमी संभव है। अप्रैल में कुछ पुराने मित्रों के साथ नए कार्य की शुरुआत की योजना बन सकती है पारिवारिक खर्च की अधिकता रहेगी। मई में राजकीय कार्यों को समय सीमा का ध्यान रखते हुए सम्पादित करे। जून में संतान से संबंधित चिंता रहेगी खर्च की अधिकता और अधिक भ्रमण की संभावना बनती है।जुलाई अगस्त में किए गए कार्य सफल होंगे तथा सामाजिक यश प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी परिवार में कुछ नए मंगल कार्यकी रूपरेखा बनेगी सितम्बर में अनावश्यक विवाद से दूर रहें। वाणी पर नियंत्रण रखें ताकि व्यर्थ की शत्रुता नहीं बड़े। अक्टूबर में पारिवारिक कार्य में व्यस्तता। किसी सदस्य के लिए अधिक समय और धन व्यय हो सकता है। नवम्बर सामान्य है किसी मित्र या रिश्तदार के कार्य में व्यस्तता रहेगी। दिसम्बर में रुके हुए कार्य पूरे होंगे किसी स्थाई कार्य के लिए धन व्यय होगा। दीर्घ यात्रा के योग भी बनेगे।

नए कार्य कब करे- अपने किसी पारिवारिक सम्बध के मंगल कार्य के प्रयास अथवा रोजगार से संबंधित नए कार्य की शुरुआत जनवरी अप्रैल अथवा अगस्त माह में करना चाहिए।

शुभफल वृद्धि के उपाय- प्रतिदिन सूर्य की आराधना प्रातः काल सूर्य के दर्शन और आदित्य ह्रदय स्तोत्र का पाठ करने से शुभ फल की वृद्धि हो सकती है यदि लाल अनाज दालें अथवा लाल फल आवश्यकता प्रधान व्यक्तियो को रविवार को दान करेंगे तो शुभ ग्रहों के शुभत्व की वृद्धि होगी।

कन्या राशि

2023 का वर्ष आपको समाज मे मान सम्मान तथा प्रतिष्ठावर्द्धक रहेगा। पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। यह वर्ष आपको अपने कार्य में सुखद परिवर्तन दायक रहेगा। कुछ प्रतियोगी कार्यों मे आपको सफलता मिलेगी दाम्पत्य सुख उत्तम रहेगा। भ्रमण अथवा दीर्घ यात्रा नुकसान देय रह सकती है इसमें ध्यान रखना चाहिए। इस वर्ष स्थाईत्व के योग बनेगे। प्रापर्टी योग है और रोजगार में संतोष मिलेगा।

स्वास्थ्य- वर्ष में स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। रक्तचाप मधुमेह अथवा जोड़ों के दर्द का प्रकोप नही हो ध्यान रखें। रिड की हड्डी अथवा पाचन संस्थान के विकार रह सकते है। नशीले पदार्थ के सेवन से दूर रहें। नियमित व्यायाम और सूर्य को अर्घ्य देना लाभप्रद रहेगा। धन सम्पत्ति धन सम्पदा की वर्ष में वृद्धि होगी। लेकिन अपने कार्यों में लाभ के अंश को नियोजित करने से आर्थिक कठिनाईयां रहेगी। पारिवारिक कार्यों में खर्च की अधिकता रहेगी। स्थाई सम्पत्ति के कार्य के लिए योजना बनेगी लेकिन इसे मूर्त रूप देने में अनावश्यक बाधाएं रहेगी।

आपका केरियर- आपको अपने कैरियर के लिए अधिक प्रयास करना होगा वर्ष के आरंभ के त्रैमास में निर्णय लेकर अपनी योजना बनाना चाहिए। यदि व्यापार करने की इच्छा है तो मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा एवं शुभ संयोग बनता जाएगा पारिवारिक दृष्टि से भी केरियर के लिए सहयोग बनेगा। यदि नौकरी करने की योजना बनाकर कार्य कर रहे हैं तो अप्रैल से अगस्त के बीच प्रतियोगी परीक्षा आदि में प्रयास करने से सफलता मिलेगी। अक्टूबर माह भी केरियर के लिए उत्तम समय है।

प्रत्येक माह एक नजर में

जनवरी में स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। यात्रा में धन हानि के बारेमे सावधानी बरते फरवरी मार्च ब किसी भावी कार्य में योजना क्रियान्वित होगी संतान सुख वृद्धि। अप्रैल में राजकीय कार्य मे सफलता तथा मांगलिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। मई जून में धार्मिक भ्रमण, मित्रों से लाभ तथा व्यापार के नए सम्बन्ध जुडेंगे। जुलाई पत्नी अथवा पारिवार के वरिष्ठ सदस्य के स्वास्थ्य की चिता रहेगी। अगस्त सामान्य रहेगा। विरोधियो के षड्यंत्र से अपने कार्यो मेसावधानी रखें। सितम्बर आर्थिक क्षति से अपने अगम बुद्धि से बचाव करने का प्रयास करे। अक्टोबर मास में भ्रमण और खर्च की अधिकता रहेगी। नवम्बर किसी नएकार्य की शुरुवात व्यापारी वर्ग को होगी नौकरी वर्ग को कार्य/ स्थानमें परिवर्तन। दिसम्बर माह में धन के अपव्यय से सावधानी रखें।

नए कार्य कब करें- नए कार्य करने के लिए अप्रैल जुलाई अक्टूबर मास अनुकूल रहेंगे ।पारिवारिक सहयोग से भी कार्य के योग बन सकते हैं यथासंभव पार्टनरशिप में किए गए कार्य अनुकूल नहीं रहेंगे अथवा अधिक ध्यान देना होगा।

शुभ वृद्धि के उपाय- इस वर्ष में शुभ फल प्राप्ति के लिए पूर्णिमा व्रत करना चाहिए। लक्ष्मीनारायण भगवान की आराधना।

गणेश चालिसा या गणपति अथर्वशीर्ष का नियमित पाठकरना शुभ फल में वृद्धि करेगा।

बच्चों को ज्ञानवर्द्धक पुस्तकों का दान करना भी शुभ फल और सफलता में वृद्धि करेगा।

तुला राशि

आपकी राशि वाले व्यक्ति प्रत्येक क्षेत्र में बैलेंस बनाकर चलने वाले होते हैं तथा न्याय प्रिय एवं समयबद्ध कार्य करने वाले भी होते हैं इस वर्ष आपको सामाजिक यश एवं कर्म संबंधी सफलता तथा धन लाभ के अच्छे अवसर प्राप्त होंगे लेकिन किन्ही कार्यों में तुला राशि में केतु होने के कारण जिद्दी पन और आलस्य की बाधाए उपस्थित होगी वर्ष में धन लाभ के अवसर को छोड़ना नहीं चाहिए वैसे संतान पक्ष की तरफ से सुख और संतुष्ट रहेंगे।

स्वास्थ्य - मानसिक चिंताएं और अनियमित जीवन से उदर विकार तथा अपच की शिकायत वर्ष में रहेगी जोड़ों के दर्द तथा वात विकार से भी जुलाई से अक्टो 23 मे सावधानी रखना चाहिए। वर्ष के अंत मे यात्रा करते समय अथवा वाहन चलाने में भी सावधानी बरते अन्यथा पीठ अथवा पैर में कष्ट होसकता है।

धन सम्पत्ति- वर्ष में धन संपत्ति के योग जमीन जायदाद के क्रय विक्रय से संभव है। मई-जून अथवा नवंबर माह में रुका हुआ धन प्राप्त हो सकता है यदि किसी को उधार दिया है तो इस समय प्राप्त करने का प्रयास करें।वर्ष में थोड़ा असावधानी के कारणमार्च 5 अक्टूबर में धन का व्यर्थ व्यय हो सकता है अथवा लाभ प्राप्ति में रुकावट आ सकती है इसलिए सावधानी रखें।

आपका केरियर- आपको इसवर्ष केआरंभ में थोड़ी कठिनाइयां तथा कार्य की सफलता में रुकावट बाधाएं आ सकती है लेकिन 22 अप्रैल से बृहस्पति ग्रह देव आपको शुभ रहेंगे धन-संपत्ति के कार्यों से संलग्न रखेगा जो रुकावटें रही हैं उन्हें दूर करके मान सम्मान की वृद्धि करेगा अपने कैरियर के उचित वृद्धि के लिए 22 अप्रैल से 15 जून में प्रयास करना चाहिए इस समय रोजगार / नौकरी के लिए किए गए प्रयास का अनुकूल लाभ मिलेगा। जो कार्य रत है उन्हें कार्य में परिवर्तन के योग बन सकते है व्यापारी वर्ग के लिए भी यह समय अनुकूल है इस समय के बीच कोई नए कार्य की योजना बनेगी और सहयोग भी प्राप्त होगा।नौकरी करने वालों को 30 अक्टूबर से दिसंबर के बीच सावधानी से कार्य करना चाहिए ताकि किसी त्रुटि के कारण वरिष्ठ अधिकारियों की अप्रसन्नता ना रहे। कार्य में परिवर्तन अथवा पदोन्नति के अवसर भी बन सकते हैं।

प्रत्येक माह एक नजर में

वर्ष 2023 के प्रत्येक माह में क्या संभावित फलित रहेगा यह निम्नानुसार है। जनवरी में वर्ष भर के कार्य की रूपरेखा पारिवारिक व्यवस्थाओं के बावजूद भी तैयार कर सकेंगे तथा मित्रों अथवा कार्यरत कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा फरवरी में अपने संतान पक्ष की चिंताओं पर व्यस्त रहेगी शैक्षणिक परिवर्तन में खर्च के योग भी बनेंगे मार्च मे छोटेभाई चाचा अथवा ननिहाल पक्ष के कार्यक्रमों में अधिक व्यस्तता रहेगीअपने स्वयं के राजकीय कार्यों में समय देकर पूर्ण करने का प्रयास करें। अप्रैल माह सामान्य रहेगा किसी मांगलिक कार्य में व्यस्तता तथा यात्रा करने के अवसर अधिक। मई जून माह में अपने कुछ पुराने रुके हुए कार्यों को पूरे करने के प्रयास करना चाहिए। समय पर सफलता मिल सकेगी और धन लाभ भी प्राप्त हो सकेगा। जुलाई स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए शत्रुता और अकारण विरोध के कारण मन में अप्रसन्नता रहेगी। अगस्त मेंअपने कार्य में व्यवधान उपस्थित होने के विरोधियो के अप्रत्यक्ष प्रयास होंगे आवेशित नही हो शांति से निराकरण करें। सितम्बर में पत्नी अथवा माता पिता के स्वास्थ्य की चिंता।थोड़ी व्यस्तता भी इसी कारण रहेगी। अक्टूबर माह सामान्य रहेगा लेकिनअनावश्यक चिंताएं कम होगी। नवम्बर षष्टम राहु तथा बारहवां केतु आजाने से भ्रमण अधिक लेकिन रोग एवं शत्रुओं का प्रभाव कम होगा। दिसम्बर इस माह में अपने कार्य के प्रदर्शन का सबसे उत्तम समय है इस कारण समय पर कार्य करने का ध्यान रखें यश और धन दोनों प्राप्त होगा।

नए कार्य कब करे- नव वर्ष आपके लिए बहुत उत्तम है इस कारण नए कार्यों की योजना वर्ष के प्रारंभ में अर्थात 15 जनवरी से 2 6 फरवरी मे अथवा अप्रैल या अगस्त में बनाना चाहिए और उसे इन्हीं माहों में क्रियान्वित करने का प्रयास करना चाहिए। अपने पुराने कार्यों मेंध्यान रखेंगे उनमें नवीनता लाते हुए करें तो उपरोक्त समय में सफलता प्राप्त हो सकती है।

शुभफल में वृद्धि के उपाय- आपका राशि का स्वामी शुक्र है इस वर्ष पंचम शनि होने के कारण आराधना में देवी उपासना मे प्रति दिन घी का दीपक लगा कर करना चाहिए। दुधारू जानवर को आहार शुक्रवार को देना। सफेद अनाज का दान आवश्यकता प्रधान व्यक्ति को देना चाहिए।

वृश्चिक राशि

आपकी राशि से चतुर्थ शनि याने शनि का अढ़ैया वर्ष भर और पंचम गुरु केतु योग वर्ष के प्रारंभ त्रैमास में रहेगा। यह त्रैमास अपनी भावी योजनाओं के लिए महत्व पूर्ण रहेगा जिससे कि धनसम्पति रोजगार और पारिवारिक दायित्व के निर्णय लेना चाहिए। लेकिन शनि की अढ़ैया होने के कारण विवेक पूर्ण निर्णय लेवे, ध्यान रहे निर्णय लेने में कोई त्रुटी नही रह जाए जिससे आर्थिक नुकसान के साथ ही मानसिक तनाव रहें। जुलाई से अक्टूबर 23 के बीच कुछ रुके हुए पुराने कार्य में सफलता मिलेगी यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य- इस वर्ष अप्रैल से जून के बीच स्वास्थ्य की दृष्टि से कमजोर है यात्राओं में खाद्य पदार्थ के सेवन में तथा वाहन से सावधानी रखें। अम्लपित अथवा लीव्हर, पेनक्रिया के विकार , मधुमेह रोग के प्रति सजगता जरूरी है। फरवरी अगस्त और अक्टोबर में रोग के आक्रमण से बचने के लिए निदान करना लाभप्रद है।

धनसम्पत्ति- इस वर्ष धन-संपत्ति के योग सामान्य है किसी जोखिम भरे कार्य में हाथ ना डालें तथा अपने व्यापार जो वर्तमान में संचालित है उसे ही सुव्यवस्थित संचालन करने का प्रयास करें। वर्ष में संचालित कार्यक्रमों के लिए थोड़ा धन बचा कर रखें ताकि आवश्यकतानुसार आर्थिक कठिनाइयां महसूस ना हो अनावश्यक खर्च पर नियंत्रण रखना भी इस वर्ष जरूरी है अचलसंपत्ति कृषि अथवा पैतृक कार्य सेहोने वाले लाभ जरूर धन संपत्ति में वृद्धि करेंगे जून से सितंबर के बीच अनावश्यक व्यय पर नियंत्रण रखें।

आपका केरियर- इस वर्ष यदि आपको अपने कैरियर के बारे में निर्णय लेने का सही समय फरवरी से अप्रैल 23 है व्यापार में जाने के लिए इस समय में योजना बनाकर क्रियान्वित कर लेना चाहिए जिससे कि वर्ष में समुचित लाभ होता रहे नौकरी करने वालों के लिए इस समय अपने कार्य क्षेत्र का चयन तथा प्रयास करना लाभप्रद रहेगा अगर किसी कारण इस समय निर्णय नहीं ले सके तो सितंबर अक्टूबर 23 मेंअपनी योजनाएं क्रियान्वित होकर नौकरी मे स्थाईत्व, कार्य मे या पद में परिवर्तन ,प्रतिष्ठा प्राप्ति हो सकती है। चतुर्थशनि की अढ़ैया होने से कार्य परिवर्तन में सोच विचार करनिर्णय लेना ही चिंताओ और तनाव से मुक्त रख सकेगा इसका ध्यान रखना जरूरी है।

प्रत्येक माह एक नजर में

जनवरी में इच्छित कार्यों में सफलता तथा धन लाभ के उत्तम अवसर रहेंगे । फरवरी में किसी कार्य की योजना बनाकर उसे क्रियान्वित करना सफलता दायक है। मार्च में पारिवारिक कार्यों अथवा मांगलिक कार्यों के बारे में व्यस्तता और निर्णय लेने का उपयुक्त समय। अप्रैल में स्थाई संपत्ति धन लाभ कुछ पुराने रुके हुए कार्यों में सफलता एवं अनावश्यक खर्च से थोड़ा मानसिक तनाव। मई में स्वास्थ्य पर ध्यान रखें यथासंभव जोखिम भरे कार्य से दूर रहें। जून महीने में पत्नी के कार्य अथवा स्वास्थ्य पर खर्च होने की संभावना है। जुलाई एवं अगस्त मेंअपने कार्यों में सावधानी से निर्णय लें अनावश्यक विवाद या विरोध से सतर्कता जरूरी है सितम्बर में लिए गए पूर्व निर्णय मे त्रुटी होकर सुधार करने से व्यर्थ खर्च के योग हो सकते है। ध्यान रखें।

अक्टोबर में आर्थिक दृष्टि से अनुकूल रहेगा कुछ पुरानी समस्याए दूर होगी। नवम्बर में खर्च और भ्रमण की अधिकता रहेगी। राजकीय कार्यों में त्रुटी या असावधानी के कारण चिंता रह सकती है। दिसंबर में समय अनुकूल है अपनी पुरानी परिस्थितियों को सुधार लाते हुए मानसिक संतुष्टि रहेगी।

नए कार्य कब करें- इस वर्ष नए कार्य करने के लिए उपयुक्त समय 15 जनवरी से 15 मार्च अथवा जुलाई एवं अगस्त माह अनुकूल रहेगा इनमें अपने स्थायित्व अथवा रोजगार संबंधी महत्वपूर्ण निर्णय लेना शुभ रहेगा। किसी साझेदारी में कार्य करने से पहले सोच विचार कर निर्णय लेना ही अनुकूल रहसकता है।

शुभ फल में वृद्धिके उपाय- आपका इस वर्ष शनि की ढैया होने के कारण शनि मंदिर/ हनुमान जी के मंदिर में तेल का दीपक लगा कर दर्शन करना शुभ रहेगा। प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ भी करना वर्ष में अशुभ परिस्थितियों को दूर कर सकता है अथवा अशुभ परिस्थितियों में उचितनिर्णय लेने का मार्गदर्शक और साहस प्रदान करेगा।

धनु राशि

आपकी राशि पर यह वर्ष शुभ रहेगा सामाजिक कार्यक्रमों में व्यस्तता सम्मान और पद प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। वर्ष के पूर्वार्ध में संतान की चिंताएं रहेगी। जुलाई से सितंबर के बीच राजकीय कार्यों अथवा कोर्ट कचहरी के कार्यों में अधिक समय देना पड़ेगा। लम्बी या विदेश यात्रा वर्ष केउत्तरार्ध में संभव है।वर्ष के अंतिम त्रैमास में साझेदारी के कार्य अथवा मित्रों के भरोसे छोड़े गए कार्य मेंअनावश्यक व्यय या कार्य में रुकावट संभव है। ग्रहों की योग से देखा जाए तो आपका यह वर्ष आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से शुभ रहेगा।

स्वास्थ्य- स्वास्थ्य की दृष्टि से इस वर्ष मेंसमय अनुकूल है फिर भी अखाद्य पदार्थ के सेवन से उदर विकार औरवात विकार संभव है ध्यान देना चाहिए अपने कार्य स्वयं करना तथा प्रातः कालीन टहलना योग आदि करना आपके स्वास्थ्य को बेहतर रख सकेगा।यदि रक्तचाप या मधुमेह की शिकायत पहले से है तो उसका उचित निदान की औषधि आदि का प्रयास करने पर स्वास्थ्य लाभ हो सकता है।

धन सम्पत्ति- यह वर्ष धन संपत्ति के लिए अनुकूल है लेकिन अपने कुछ कारोबार में धन का उपयोग किए जाने के कारण वर्ष के मध्य अर्थात मई से सितम्बर 23 के बीच रोजमर्रा कीआर्थिक समस्याएं रहेंगी। यदि व्यापारी वर्ग हैं तो अनावश्यक व्यय पर कटौती करना चाहिए नौकरी वर्ग के लिए यह वर्ष लाभप्रद रहेगा पद प्रतिष्ठा की वृद्धि और आर्थिक लाभ भी समय पर होता रहेगाकुछ धन प्राप्ति की योजनाओं भूमि भवन से भी आय प्राप्त हो सकेगी।

आपका केरियर- आपको जनवरी उत्तरार्द्ध से 20 फरवरी, 16 मई से जून

के बीच अथवा सितंबर में अपने कैरियर के लिए प्रयास करना चाहिए। यदि व्यापार मे संलग्न है अथवा करना हैं तो नए कार्य की शुरुआत की योजना भी इससमय में कर सकते है उसके पश्चात शुभ मुहूर्त में उसे क्रियान्वित करने का प्रयास करना शुभ रह सकता है। यदि नौकरी करते हैं तोअपने कार्य की गति उत्तम रखने से आपके प्रगति के अवसर प्राप्त हो सकेंगे। विद्यार्थी वर्ग के लिए भी यह समय शुभ है यदि नौकरी के लिए प्रयासरत हैं तोभी अधिक अध्ययन करें जिससे उक्त समय में प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त हो सकती है। विदेश यात्रा अथवा विदेश में भी केरियर के लिए किए जाने वाले प्रयास सफलता दायक रह सकते है।

प्रत्येक माह एक नजर में

इस वर्ष जनवरी माह मेंनवीन योजना बनेगी धन लाभ के योग भी बनेगे। फरवरी 23 में अपने पैतृक स्थान से अन्यत्रयात्रा के योग भी बन सकते हैं जो लाभप्रद रहेंगे। मार्च माह में पारिवारिक खर्च अधिक तथा संतान की प्रगति / स्वास्थ्य के लिए चिंता रहेगी। अप्रेल में प्रगति के अवसर प्राप्त होंगे कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के सहयोग से धन लाभ तथा कार्य की वृद्धि में सफलता। मई में राजकीय कार्यों में व्यस्तता तथा चिताएं रहेगी। जून में अपने कार्यों में वांछित सफलताएं और राजकीय कार्य की चिंताएं कम होंगी। जुलाई अगस्त में यदि कोई स्थाई कार्य करने की इच्छा अथवा भूमि भवन क्रय करने की प्रयास करेंगे तो सफलता प्राप्त हो सकेगी। सितम्बर मास कमजोर है इसमें कोई भी निर्णय लेने में सावधानी बरतें आर्थिक क्षति संभव है। अक्टोबर 23 माह आपके लिए शुभ है धन लाभ और नए कार्यों से मानसिक संतुष्टि प्राप्त होगी। नवम्बर माह आपको स्वास्थ्य दृष्टि से कमजोर रहेगा अपनेकार्यों में ध्यान दें लेकिन नियमितता बनाए रखें। दिसम्बर में सामाजिक कार्य मान सम्मान आदि में वृद्धि होगी तथा सुखद यात्राएं भी संभव है।

नए कार्य कब करें- आपके योजनाबद्ध कार्य करने की आदत है इस कारण बसंत पंचमी फरवरी में कार्य की योजना बनाकर 15 अप्रैल से मई के बीचअथवा अगस्त 23 मे नए कार्य करने के लिए उत्तम निर्णय ले सकते है। यदि उत्पादन से संबंधित कार्य करना है तो फरवरी माह में योजना जरूर बनाना चाहिए।शिक्षा भूमि अथवा स्वास्थ्य से संबंधित कार्य की लिए भी प्रयास उपरोक्त समय में कर सकते हैं।

शुभफल में वृद्धि के उपाय- इस वर्ष विशेष रुप से बृहस्पति वार को पीपल को जल चढ़ाए। यथासंभव फलदार वृक्ष को उद्यान में बोएं। विष्णुसहस्त्र नाम का प्रति गुरुवार को पाठ करे अथवा मंदिर पर दर्शन करके पीला फल अर्पण करें शुभ फल की वृद्धि होगी।

मकर राशि

आपकी राशि में यह वर्ष मिश्रित फल देने वाला है राशि से दूसरा शनिअर्थात शनि की साढ़ेसाती का अंतिम चरण कुछ पुराने समस्याओं को हल करते हुए नई योजनाएं बनवाएगा।अप्रैल माह तक तीसरा गुरु मान सम्मान धन लाभ के लिए अनुकूलता देगा इसके पश्चात 22 अप्रैल से चतुर्थ गुरु होने से कुछ साझेदारी केकार्यों में अवरोध मित्रों से गलत फहमी होगी लेकिन राजकीय कार्यों में सफलता दायक रहेगा। जुलाई से सितंबर के बीच शुक्र का वक्री होकर कर्क राशि में आने से कुछ विरोधियों का शमन लेकिन पत्नी के स्वास्थ्य में थोड़ा विकार रहने की संभावना बनती है अक्टूबर से दिसंबर अनुकूलता दायक है जिसमें धन लाभ और पराक्रम प्रतिष्ठा वृद्धि सामाजिक कार्य दायित्व प्राप्ति के योग बनते हैं।

स्वास्थ्य- मिश्रित फलदायक वर्ष होने के कारण प्रसन्नता और मानसिक तनाव दोनों के रहते रक्त (विकार) चाप अथवा मधुमेह की बीमारी ना हो इसकी सावधानी रखें। खाद्य पदार्थ के सेवन में सतर्कता तथा जीवन को नियमित रखते हुए पथ्य का ध्यान रखें।घुटने अथवा कमर के दर्द की थोड़ी आशंका इस वर्ष रह सकती है।

धन सम्पत्ति- यह वर्ष आर्थिक दृष्टि से सामान्य रहेगा वांछित आवश्यकता की पूर्ति होती रहेगी यदि किसी स्थाई संपत्ति को बेचना चाहे तो अभी अनुकूल समय नहीं है। साझेदारी के कार्य में अनावश्यक धन व्यय न हो सावधानी बरतें। पैतृक संपत्ति और पूर्व अर्जित संपत्ति से धन लाभ के योग अच्छे हैं अपने कारोबार में भी थोड़ा उतार-चढ़ाव रहेगा परंतु धन लाभ के योग बनते रहेंगे। आर्थिक दृष्टि से कोई बड़ी जोखिम नहीं लें।

आपका केरियर- आप व्यापार कर रहे हैं और कोई ऐजेंसी कार्य है या मशीनरी कारोबार है अथवा वाहन या भूमि से संबंधित कार्यों में है तो वर्ष मे यह कार्य नियमित करते रहे. नही करे।साढ़ेसाती का अंतिम चरण होने के कारण आर्थिक दृष्टि से जो भी कार्य. संतुलित बुद्धि और सोच विचार कर निर्णय लेकर ही धन व्यय करें।वर्ष मेंअपने पुरानी मेहनत का अनुकूल फल मिलने की उम्मीद है अतः अपने कार्य की निरंतरता रखना ईंधन लाभ की विधि कर सकेगा। नौकरी करने वालों को अपने कार्य में विशेष ध्यान देकर कार्य मेअच्छे परिणाम देने से सफलता में वृद्धि होगी।नए कार्य या नई नौकरी के लिए प्रयास अप्रैल से जून के बीच में सफलता दे सकते हैं।

प्रत्येक माह एक नजर में

जनवरी माह शुभ फल में वृद्धि दायक है पुराने रुके हुए कार्य हल होगें। फरवरी में पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। भ्रमण अधिक होगा। मित्रो या साझेदारो से अनावश्यक विवाद नही हो शांत और बाणी पर नियंत्रण रखे। मार्च सामान्य हैं आर्थिक कठिनाईया रहेगी। अप्रेल में किन्ही पुराने परिचित के माध्यम से नई योजना बनेगी और सफलता दायक रहेगी। मई जून में अपने कार्यो में थोड़ी अड़चने रहेगी आर्थिक कठिनाई संभव है व्यर्थ की जोखिम नही ले। जुलाई में कोर्ट कचहरी के विवाद से दूर रहने का

प्रयास करें राजकीय कार्य समयसीमा में पूरे करे। अगस्त में पत्नी को स्वास्थ्य बाधा रहसकती है। संतान सुख की संभावना है। सितम्बर में अनावश्यक भ्रमण मांगलिक या धार्मिक कार्य की योजना बनेगी सफलता मिलेगी। अक्टोबर में अपने कार्य का समुचित यश मिलेगा अच्छे समाचार से मन प्रसन्न रहेगा नवम्बर में कार्य में रुकावट तथा वरिष्ट लोगो से मतभेद संभव है। व्यर्थ खर्च। दिसम्बर में इच्छित कार्य समय पर पूरे होगें धन तथा समाज में यश मिलेगा।

नए कार्य कब करें- इस वर्ष शनि की साढ़ेसाती का अंतिम चरण है लेकिन शनि आपका राशि का स्वामी भी है जन्म कुंडली में शुभ भाव का स्वामीहोकर अपने प्रिय मित्र के नक्षत्र में हो और इस वर्ष यदि कोई नया कार्य करना चाहे तो अप्रैल में योजना बना सकते हैं जिसका क्रियान्वयन सितंबर अक्टूबर अथवा दिसंबर 23 में कर सकते हैं। अपने पैतृक व्यवसाय इलेक्ट्रॉनिक से संबंधित अथवा वाहन जमीन के अंदर खदान पेट्रोलियम आदि के कार्य की तरफ प्रेरित होसकते है।नौकरी करने वालों को अपने उचित स्थान में परिवर्तन अथवा इच्छित कार्य के लिए नौकरी परिवर्तन करने के लिए भी प्रयास कर सकते है।

शुभफल वृद्धिके उपाय - शनि राशि स्वामी होने के कारण शनि के और हनुमान जी के मंदिर में शनिवार को तेल का दीपक लगाने से शुभ फल में वृद्धि हो सकती है। शनिवार को हनुमान चालीसा अथवा सुंदरकांड का पाठ करना भी लाभप्रद रहेगा।

कुंभ राशि

आपकी राशि में इस वर्ष जनवरी माह सेशनि का आगमन हो रहा हैशनि की साढ़ेसाती का यह दूसरा चरण आरंभ हुआ हैविगत वर्ष में द्वादश शनि होने के कारण खर्च पारिवारिक तनाव अपनी कही गई बात का गलत अर्थ निकलना आदि हुआ है लेकिन इस वर्ष मैं समस्याएं दूर होगी साथ ही कुछ धन संपत्ति के योग भी बनेंगे आत्मबल बढ़ेगा और अपने कार्य करने की धनात्मक और शुभ प्रेरणा प्राप्त होगी। अप्रैल 23 और अगस्त 23 तथा अक्टोबर 23 का समय धन तथा कर्म पक्ष के लिए अनुकूल प्रतीत होगा। यहवर्ष विगत 2 वर्षों की तुलना में बेहतर होगा।

स्वास्थ्य- इस वर्ष राशि स्वामी अपनी राशि में ही रहेगा अतः स्वास्थ्य संबंधी कोई विपरीत परिस्थितियों नहीं रहे स्वस्थ रहेंगे लेकिन कुंभ के शनि के आरंभिक अवधि अर्थात जनवरी से अप्रेल 23 के बीच कोई पुराना स्वास्थ्य विकार है तोनिदान करना चाहिए जैसे रक्तचाप वायु विकार, हड्डियो के दर्दअथवा जोड़ों के दर्द के विकार रह सकते हैं।के उत्तरार्ध के तीन मास में यात्रा वाहन चालक आदि में सावधानी रखें उत्तम स्वास्थ्य के लिए शनि मंदिर में जाकर दर्शन करना चाहिए

धन सम्पत्ति -धन-संपत्ति की दृष्टि से इस वर्ष फरवरी से अप्रैल के बीच समय अनुकूल है स्थाई अचल संपत्ति तथा कृषि योग्य जमीन सेलाभ होने के योग हैं व्यवसाय की दृष्टि से कोई ऐसे भवन आदिकार्य जिससे नियमित लाभ होते रहे ऐसे कार्य की योजना की बना सकते हैं। धन के इन्वेस्टमेंट के योग इस वर्ष उत्तम है यथासंभव ऋण से बचना चाहिए।

आपका केरियर- वर्ष मेंव्यापारी वर्ग के लिए उत्पादन से अधिक लाभ विक्रय में होने की संभावना है अतः वर्ष में अधिक ध्यान देना चाहिए व्यापारी वर्ग अधिक राशि खर्च करने वाले व्यापार की बजाए कम लागत वाले छोटे कुटीर उद्योग पर अधिक ध्यान देने से लाभप्रद स्थिति रहेगी नौकरी करने वालों को अपने कार्य में तनाव रह सकता है जिसके कारण परिवर्तन की प्रयास ना करते हुए उसी कार्य को शांतिपूर्ण तरीकेसे करते रहें जिससेकि समय औरअनावश्यक तनाव से बचा जा सके। वर्ष मेफरवरी अप्रैल जुलाई और अक्टूबर माह केरियर निर्माण के लिए अनुकूल हैं।

प्रत्येक माह एक नजर में

जनवरी माह खर्चीला रहेगा पत्नी अस्थमा संतान के कार्यों में खर्च हो सकता है। फरवरी में अपने वर्ष की कार्य सम्बध के योजना बना सकते हैं जो शुभ रहेगी। मार्च में कुछ कर्म पक्ष क विरोधियों से अनुकूल कंप्रोमाइज हो सकता है खर्चभी नियंत्रित रहेगा। अप्रेल में कुछ स्थान परिवर्तन या नवीन कार्य के अनुकूल योग बन सकते हैं सम्मानित लोगों से अच्छे संबंध स्थापित होंगे मई मास में यात्रा और जोखिम भरे कार्यों से सतर्क रहें। जून में मांगलिक अथवा धार्मिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी सामाजिक यश भी प्राप्त होगा। जुलाई में धन आगमन तथा पुराने रुके हुए राजकीय अथवा अथवा कोर्ट कचहरी के कार्य में सफलता मिलेगी। अगस्त 23 में कुछ स्थाई संपत्ति के योग बनते हैं भवन अथवा जमीन में खर्च भी संभव है। सितम्बर में अपने निकटतम रिश्तेदारों के कार्य में व्यस्तता रहेगी तथा कुछ नए संबंध भी बन सकेंगे। अक्टोबर मास में अधिक खर्च सेअनावश्यक तनाव रह सकता है। विवाद से दूर रहें नवम्बर मास में कुछ निर्णय मे त्रुटि अथवागलत हो सकते हैं पुनर्विचारकरने का प्रयास करें। दिसम्बर अनुकूल है तथा नए कार्य के सहयोग बनेंगे मन में प्रसन्नता रहेगी।

नए कार्य कब करें- वर्ष में कार्य करने के लिए फरवरी, अप्रैल तथा अगस्त में अनुकूल समय है अपने पूर्व कार्य को योजनाबद्ध तरीके से पुनः नवीनता से कर सकते हैं अथवा यदि कोई भ्रमण पर्यटन अथवा भूमि /खनिज के कार्य के योग स्वतःबनते हो तो निश्चित उक्त कार्यो में निर्णय लेना शुभ ।

शुभफल वृद्धि के उपाय- वर्ष में शुभ फल की वृद्धि के लिए हनुमान जी और शनि मंदिर पर दीपक लगाना शुभ रहेगा। घर या मंदिर पर देवी आराधना नियमित रूपसे करना भी कार्यों में रुकावटें दूर करने में सहायक होगी।

मीन राशि

आपकी राशि से द्वादश शनि होने के कारण आपकी राशि पर शनि की साढ़ेसाती का आरंभ वर्ष में हुआ है इस कारण अनावश्यक अपव्यय तथा पारिवारिक कार्यो में विवाद ,वाणी में सतर्कता, व्यर्थ शत्रुता नही हों। वर्ष में मांगलिक कार्य अथवा धार्मिक कार्यों में खर्च के योग बनते हैं अनावश्यक साझेदारी और बिना निर्णय किए हुए व्यापार-व्यवसाय में जाने में भी सावधानी बरतना चाहिए।

स्वास्थ्य- अप्रेल से अपने कार्य में व्यस्तता अधिक रहेगी इस कारण दैनिक जीवन की नियमितता आवश्यक है अन्यथा स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव संभव है अपच अम्लपित्त वायुविकार संभव है वर्ष अंत त्रैमास में उदर रोग संभव है इस वर्ष मे अखाद्य एव नशीलेपेय पदार्थ के सेवन करने वालों पर रोगो के आक्रमण की संभावना है

धन सम्पत्ति- वर्ष में धन संपत्ति का मिश्रित प्रभाव रहेगा अप्रैल 23 से कार्य की अधिकता एवं उसके अनुरूप में धन प्राप्ति के योग हैं मई-जून में किसी साझेदार के कहने से धन का अफसाना हो नए व्यापार में बहुत सोच समझकर निर्णय करें नौकरी करने वालों के लिए समय सामान्य हैं आवश्यकता की पूर्ति होती रहेगी ।

आपका केरियर- नौकरी वर्ग को अपने अधिकारी वर्ग की प्रसन्नता रहेगी लेकिन व्यक्तिगत कार्यमें रूकावट संभव है। मई जून 23 अथवा वर्ष केअंतिम त्रैमास में पद/ कार्य परिवर्तन हो सकेगा।। यदि व्यापार यह स्वतंत्र कार्य करने वाले हैं तो इस वर्ष विगत वर्षों के कार्य को ही निरंतर तथा नियमित रखें। तथा कार्यकुशल व्यक्ति को ही नए कर्मचारी के रूपमे जोडना चाहिए। वर्ष मे यदि नवीन कार्य करना चाहते हैं तो साझेदारी तथा विक्रय व्यवस्था का थोड़ा मंथन करने के पश्चात ही कार्य आरंभ करें ताकि आर्थिक क्षति से बच सके। वर्ष सामान्य है।

प्रत्येक माह एक नजर में

जनवरी एवं फरवरीएक लाभ की दृष्टि से अच्छे समय की शुरुआत करेंगे सामाजिक प्रतिष्ठा भी अच्छी रहेगी। मार्च में व्यस्तता अधिक रहेगी तथा खर्चकी अधिकता रहेगी। अप्रैल मास अनुकूल है तथा किसी राजनीतिक कार्य में सफलता मिलेगी। मई में मांगलिक एवं धार्मिक खर्चों में व्यस्तता पूर्ण रहेगा किसी सामाजिक कार्य का दायित्व वहन करना पड़ेगा। जून में अपने पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता तथा सामाजिक कार्य में यश वृद्धि के योग हैं। जुलाई में आर्थिक हानि ना हो इसका ध्यान रखेंकिसी नए कार्य में सोच विचार कर निर्णय लें। अगस्त अनुकूल रहेगा कुछ पुराने मित्रों का सहयोग और राजकीय कार्य में सफलता प्राप्त होगी। सितम्बर में स्थाई संपत्ति या किसी मांगलिक कार्यके लिए योजना बनेगी खर्च भी संभव। अक्टोबर आकस्मिक भ्रमण तथा नए विशिष्ट लोगों से संबंध स्थापित होगा जो कि अपनेकार्य में सफलता दायक रहेगा। नवम्बर आर्थिक दृष्टि से कमजोर है नएकार्य में खर्च संभव है। दिसम्बर मिश्रित फलदायक है प्रारंभ अनुकूल लेकिन माह के उत्तरार्द्ध में कार्य अधूरे रहेंगें व्यर्थ खर्च एवं भ्रमण संभव है।

नए कार्य कब करें- आपकी राशि में पूर्व कार्य को ही निरंतर करना चाहिए फिर भी यदि आवश्यकता प्रतीत हो तो जनवरी 23 मे योजना (रूपरेखा) बनाई जाए जिसका कियान्वयन 22अप्रेल से मई 2023 में करना शुभ रह सकता है। साझेदारी के कार्यों में वांछित परिवर्तन जुलाई या अक्टूबर में करना चाहिए।

शुभफल में वृद्धि के उपाय- इस वर्ष शनि की साढ़ेसाती आरंभ होने के कारण शनि मंदिर तथा हनुमान जी के मंदिर में शनिवार को दीपक लगाए तथा हनुमान चालिसा का नियमित पाठ करना चाहिए।वर्ष में आवश्यकता प्रधान अपंग / निराश्रित व्यक्तियों को अन्न / वस्त्र का दान भी शुभफल में वृद्धि करेगा।

अनुभव का अमृत

आयुर्वेद चिकित्सा के कुशल वैद्य श्री सोहनलाल जी शर्मा, महाजन, बीकानेर (राजस्थान) के द्वारा प्रकृति से प्राप्त विभिन्न फलों से स्वास्थ्य के बारे में जानकारी देते हुए फलों के नियमित सेवन पर ध्यान देने की सलाह दी है ताकि हमें अपने जीवन में शारीरिक रूप से सक्षमता प्राप्त हो सके तथा स्वस्थ रह सकें। –

(संपादक)

नींबू – नींबू का सेवन हर मौसम में किया जा सकता है। यह बदलते मौसम के अनुरूप ही अपने गुणों

का समायोजन कर मौसमी दोषों से बचाता है। नींबू का मुय काम शरीर के विष को नष्ट कर उन्हें बाहर निकालना है।

नारंगी – नारंगी या संतरा ठण्डा, तन-मन को प्रसन्नता देने वाला है। उपवास और सभी रोगों में नारंगी

दी जा सकती है। जिनकी पाचन शक्ति कमजोर हो व खराब हो, उनको नारंगी का रस तीन गुने पानी में मिलाकर देना चाहिए।

मौसबी – मौसबी निरापद आहार है। सभी प्रकृतिवालों को और सभी अवस्थाओं में इसका सेवन लाभदायक है। भूख की स्थिति में इसका सेवन अमृत तुल्य है और भरपेट में भोजन का पाचन करती है। मौसबी का रस पाचन, मस्तिष्क और यकृत को शक्ति तथा स्फूर्ति देता है।

आंवला – आंवले में सारे रोगों को दूर करने की शक्ति है। आंवला युवकों

को यौवन प्रदान करता है और बूढ़ों को युवा जैसी शक्ति प्रदान करता है। गर्मियों में चक्कर आते हों, जी घबराता हो तो आंवले का शर्बत पीना चाहिए, इससे शीघ्र लाभ होता है। आंवला दाँतों व मसूड़ों को मजबूत बनाता है। वायु विकार को दूर करता है।

किशमिश – यह अण्डकोष वृद्धि व अण्डकोश में पानी भरकर फूल जायें तो नित्य किशमिश खाने से अच्छा लाभ होता है।

केला – केला भूखे पेट नहीं खाना चाहिए। भोजन के बाद केला खाने

से ताकत देता है। मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं। केला वीर्यवर्द्धक, शुक्रवर्द्धक है। नेत्र रोगों में लाभदायक है। केला शक्तिदायक खाद्य है। केला केवल फल नहीं इसको रोटी की जगह खाना चाहिए अर्थात् केला अपने में संपूर्ण आहार है। छोटे बच्चों को इसे दूध में मिलाकर देवें। केला कफ व पित्तनाशक औषधि है।

जामुन – जामुन प्रयोग करने से जिन बच्चों को बिस्तर में पेशाब करने की आदत हो गई हो तो चाहे लड़का हो या लड़की, जामुन की गुठली को पीसकर एक चमच पानी के साथ लेने से यह रोग दूर हो जाता है। इसका चूर्ण सुबह-शाम पानी के साथ लेने से स्वप्नदोष ठीक हो जाता है। खूनी दस्त आते हो तो भी इसका चूर्ण फायदा करता है।

अनार – अनार सब फलों में उत्तम है।

अनार हर प्रकार के रोगों में दिया जा सकता है। अनार के छिलके को सुखाकर बारीक पाउडर (चूर्ण) बनाकर गुलाबजल के साथ मिलाकर उबटन करने से शरीर के दाग चेहरे की झाईयाँ भी नष्ट हो जाती हैं। अनार खट्टी-मीठी होने से पाचनशक्ति बढ़ाता है। मूत्र लाती है। महिलाओं के मासिक स्राव अधिक होता है तो छिलके का चूर्ण बनाकर

1-1 चमच ठण्डे पानी में देने से रक्तस्राव बन्द हो जाता है।

पपीता – पपीता भोजन के बाद खाना चाहिए। पाचन संस्थान के रोगों में पपीता खाना बहुत उपयोगी है।

माताओं को कच्चे पपीते की सब्जी खिलाने से स्तनों में दूध की वृद्धि होती है। पका हुआ फल भी लाभदायक है। पपीते का दूध दाद पर लगाने से लाभ होता है। पपीता पेट साफ करता है, लीवर का ताकत देता है। छोटे बच्चों के लीवर खराब हों तो उन बच्चों को पपीता खिलाने से अच्छा लाभ होता है।

इमली – इमली के पके हुए गूदे को हाथ और पैरों के तलवों पर मलने

से लू का असर मिटता है। एक गिलास पानी में 25 ग्राम इमली को भिगोकर इसका पानी पीने से गर्मी में लू नहीं लगती तथा फोड़े-फुन्सी होने पर इमली को एक गिलास पानी में मथकर मिलाकर पीने से भी लाभ होता है। एक गिलास पानी में स्वाद के अनुसार इमली और शक्कर भिगोकर 1 घण्टे बाद पीने से यह उत्तम पेय है।

नारियल – नारियल का पानी पीने से व कच्चा नारियल खाने से कृमि

(कीड़े) निकल जाते हैं। जिन लोगों के बाल गिरते हों, नारियल का तेल सिर से बाल गिरना बंद होकर बाल लंबे हो जाते हैं। नारियल का तेल व नींबू का रस मिलाकर मालिश करने से खुजली बंद हो जाती है। नारियल की गिरी को रात में कोरी माटी की कुलड़िया में चटक भिगो दें, सुबह खाली पेट खाने से नकसीर छुटना बन्द हो जाती है।

गाजर – गाजर में शरीर के लिए पोषक तत्त्व होता है। इसमें कोशिकाएं व धमनियों को संजीवन करने की क्षमता होती है। गाजर के रस में जीवनदायिनी शक्ति है। गाजर के बनिस्पत इसका रस अधिक लाभदायक है। सदा काम करते रहने से शरीर क्षीण होता रहता है, इस क्षीणता की पूर्ति हेतु गाजर में ऐसे तत्त्व है जो रोग दूर करते हैं। गाजर का रस पीने से पाचन संस्थान मजबूत होता है। मल में दुर्गन्ध व विषैले कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

खीरा – खीरा कब्ज दूर करता है।

पीलिया, प्यास, ज्वर, शरीर की जलन, गर्मी के सारे दोष व चर्म रोगों में भी लाभदायक है। खीरा का रस पथरी में लाभ करता है तथा पेशाब की जलन, रुकावट और मधुमेह में लाभ करता है।

खरबूजा – खरबूजा तृप्तिकारक व बलवर्धक है। यह पसीना लाता है, पेशाब को साफ करता है। यह पेट की गर्मी और खराबी निकालता है। गुर्दे के रोगों को मिटाता है। पथरी को निकाल देता है। गले की जलन दूर करता है। इसकी बीजों का चेहरे पर लेप करने से कान्ति बढ़ती है।

प्याज – प्याज गरीबों की कस्तूरी है। अगर मनुष्य को नींद नहीं आती तो

कच्चा लाल प्याज या पकाया हुआ प्याज या राख में पकाया गया प्याज का रस दिन में 4 चमच भरकर पीने से नींद अच्छी आती है। प्याज का नियमित प्रयोग करने से नेत्रों की दृष्टि बढ़ जाती है। इसके रस को भी आँख में डालते रहने से नेत्र ज्योति बढ़ती है। यह अत्यन्त अनुभूत औषधि है। भोजन के साथ कच्चे प्याज का सेवन अधिक मात्रा में करे से माताओं के दूध बढ़ता है। प्याज का रस मस्सों पर लगाने से मस्सा ठीक हो जाता है। गर्मी के दिनों में प्याज हर व्यक्ति अपने पास रखे तो लू नहीं लगती है और एक कच्चा प्याज नित्य भोजन के साथ खाने से कब्ज ठीक हो जाती है।

उपरोक्त सभी फलादि रुचिकर एवं स्वास्थ्यवर्द्धक हैं एवं सरलतापूर्वक प्राप्य हैं हमें इन्हें ही अमृततुल्य समझकर सेवन करना चाहिए।

'इंटरनेशनल एस्ट्रो कॉन्फ्रेंस थाईलैंड-2022' सम्पन्न हुआ

'आर.जे.आर.ए.एस. ट्रस्ट' की सहयोगी संस्था 'अंतरराष्ट्रीय ज्योतिष महासंघ' तथा 'बामी ट्रिप इंटरनेशनल ट्रेवल कम्पनी' के संयुक्त तत्वावधान में दिनाँक 28 अक्टूबर से 1 नवम्बर तक, 5 दिवसीय ज्योतिषीय कार्यक्रम थाईलैंड देश के पट्टाया व बैंकाक नगर के पांच सितारा होटल ग्रैंड प्लाजो व अम्बेसडर में निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

थाईलैंड देश की धरती पर विशुद्ध सनातन परंपरा व भारतीय संस्कारों को दृष्टिगत रखते हुए ट्रस्ट के सदस्यों ने इस कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन, श्री गणेश वंदना तथा स्वस्ति वाचन से किया, सम्पूर्ण कार्यक्रम में हर हर महादेव, जय जगन्नाथ तथा भारत माता की जय का जयघोष होता रहा। विदेशी धरा पर किसी भारतीय संस्था द्वारा सम्पन्न होने वाला अबतक का यह सबसे भव्य, सफल, मर्यादित व सबसे अधिक व्यवस्थित-अनुशासित ज्योतिषीय आयोजन रहा।

इस कार्यक्रम में आयोजक संस्था के राष्ट्रीय महासचिव आचार्य डॉ. दलीप कुमार जी, यूरोप प्रभारी सुरेन्द्र जी, संगठन मंत्री भाविन देसाई जी, हरियाणा प्रभारी राज एम लूथरा जी, राजकुमार अग्रवाल जी, अनूप राघव जी तथा संस्था के मुखपत्र दैवचिंतन पत्रिका के सलाहकार संपादक डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय जी की विशेष उपस्थिति रही।

सभी सम्मानित प्रतिभागी अतिथियों को उत्तरीय भेंटकर व तिलक लगाकर परम्परानुसार स्वागत संस्था के वेस्ट बंगाल प्रभारी सुरजीत मुखर्जी व इंदौर से आई दीपाली तिवारी जी ने किया।

कार्यक्रम की व्यवस्था का दायित्व संस्था के दिल्ली प्रभारी सुरेश शर्मा जी, श्याम कुमार ताम्रकार जी, पं. दिनेश शर्मा जी, पं. मुकेश पेटवाल जी, डॉ. अवनीश सोनी जी व पं. सुरेश गौड़ जी ने विधिवत पूर्ण किया। मंच संचालन में सहयोग सुश्री अर्शी जी ने किया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अंतरराष्ट्रीय स्तर की ट्रेवल कम्पनी "BalmyTrip.com" के अमित कदम जी, गिरिप्रसाद रवीन्द्रन जी, अम्बुज त्रिवेदी जी व सुश्री अर्शिया गफर जी का योगदान अविस्मरणीय रहा, सम्पूर्ण व्यवस्थाएं बनाने हेतु ट्रेवल कम्पनी की टीम कार्यक्रम के 2 दिन पूर्व से 1 दिन बाद तक थाईलैंड में बनी रही।

कॉन्फ्रेंस के विद्वान वक्ताओं में श्री दलीप जी, श्री संदीप बजाज जी, श्री डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय जी, श्री आई पी ई सिंह जी, श्री रवि कुमार जी, श्रीमती शिवानी प्रधान जी, श्री मणि दत्त शर्मा जी व श्री सुरेन्द्र जी ने अपने अपने उद्बोधन द्वारा अपना अमूल्य ज्ञान साझा कर सभी को लाभान्वित किया। श्रीदलिप जी ने जन्म कुण्डली के अवलोकन पर रोग के बारेमे बनने वाले योग पर अपना अन्वेषणात्मक अनुभव साझा किया।

जीवन वैभव के सम्पादक तथा दैव चिन्तन के सलाहकार सम्पादक डॉ. पाण्डेय ने जन्म पत्रिका पर आधारित धर्म त्रिकोण और अर्थ त्रिकोण के ग्रहों का परस्पर धनात्मक योगो के द्वारा धनात्मक सोच रखने से स्वास्थ्य में विपरीत प्रभाव को रोका जाना तथा समाज में परस्पर अपस मे अपनी धनात्मक सोच धारण करने से विकास और आत्मियभाव निर्मित करने से

वसुधैव कुटुम्बकम् की सार्थकता प्रतिपादित की जा सकती है। ऐसे आयोजन देश के बाहर आयोजित करने से भारतीय परम्परा और संस्कृति का अन्यदेशो में परिचय कराया जाना एक बड़ा उत्तम संकल्प है जिसके लिए आयोजक संस्था के संस्थापक अध्यक्ष श्री आचार्य पंकज त्रिवेदी उपमन्यु जी की प्रशंसा करते हुए उनके आत्मिय व्यवहार की सराहना की।

भारत के मध्यप्रदेश भोपाल से प्रकाशित जीवन वैभव का दीपावली विशेषांक 22 तथा ज्योतिष की प्रारंभिक ज्ञान प्रदान करने वाली अनुपम ज्ञानवर्द्धक पुस्तक **ज्योतिष मित्र** का विमोचन उपस्थित विद्वानों द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में आये हुए सभी सम्मानित प्रतिभागियों को स्मृति चिन्ह तथा सम्मान पत्र देकर व राजस्थानी पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया गया, साथ ही 'अंतरराष्ट्रीय सनातन धर्म परिषद न्यास' की आजीवन सदस्यता भी प्रदान की गई।

'ज्योतिष मित्र' नामक पुस्तक का विमोचन भी इस कार्यक्रम का मुख्य हिस्सा रहा। विगत 36 वर्षों से ज्योतिष स्वास्थ्य नैतिकता तथा भारतीय प्राचीन परम्परा की जानकारी पर आधारित त्रैमासिक जीवन वैभव पत्रिका की प्रबन्ध सम्पादक प्रेमलता पाण्डेय को अन्तर्राष्ट्रीय सनातन धर्म परिषद न्यास की आजीवन सदस्यता तथा अवध गौरव सम्मान से सम्मानित भी किया गया।

मेरी व्यक्तिगत दृष्टि में इस आयोजन की सबसे बड़ी उपलब्धि यही थी कि सभी प्रतिभागी एक परिवार की तरह पूरे समय घनिष्ठता के साथ एक दूसरे से जुड़े रहे, जिसकी अविस्मरणीय यादें हम सभी के साथ सदैव बनी रहेंगी।

मैं आप सभी द्वारा दिए गए अपनत्व, स्नेह व सहयोग के समक्ष नतमस्तक तथा करबद्ध होकर पुनः इस कार्यक्रम में आये हुए सम्मानित अतिथियों, विद्वान वक्ताओं, संस्था के व्यवस्थापकों, सहयोग कर्ताओं तथा संस्था के सभी आजीवन सदस्यों का हृदय तल से आभार व्यक्त करता हूँ। यह जानकारी संस्था आर जे आर ए एस ट्रस्ट के अध्यक्ष आचार्य पंकज त्रिवेदी उपमन्यु ने अपने उदबोधन में व्यक्त की। अंत में सम्मलेन समाप्ति की घोषणा संस्था के अध्यक्ष द्वारा की गई और ऐतिहासिक स्थलों के भ्रमण के पश्चात् सभी विद्वान अपने-अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान किए।

डॉ. बलवीर शास्त्री, हिसार तथा
सहायक सम्पादक, जीवन वैभव

फलित करने में ग्रहगोचर के सम्बन्धित महत्वपूर्ण बिन्दु

अरविंद पाण्डेय

गोचर के ग्रहों के बारे में फलित हेतु अपने अनुभव के आधारित मुख्यतः जो बिंदु विचारणीय होते हैं वे निम्नानुसार होना चाहिए -

1) जन्म कुण्डली के फलित करते समय गोचरस्थ ग्रहों के शुभाशुभ फल को प्रभावित करने वाले ग्रहयोग/दशाएं और भाव कारक भी फलित को प्रभावित करते हैं उन को सर्वप्रथम देखना जरूरी होता है।

2) गोचरस्थ ग्रहों का प्रभाव होने का एक विशेष समय जोकि दशा अंतर प्रत्यंतर सूक्ष्म अथवा प्राण दशा का भी होता है, उस समय ग्रहो का परिभ्रमण लाभान्वित करने वाले भावो से परिभ्रमण कर रहे है अथवा अशुभ फलदायक भावों से परिभ्रमण होरहा है तथा जन्मस्थ ग्रहों के साथ गोचर ग्रहों का क्या अंशात्मक संम्बध हो रहा है। इस में लग्न /लग्नेश /चन्द्र राशिस्थ अथवा सम्बधित भाव के स्वामी के साथ गोचर वश क्या स्थिति बन रही है विचार करनी जरूरी है ।

3) शनि की स्वयं के और चन्द्र सेअंशात्मक साढ़ेसाती और ढैय्या का भी विचार फलित करते समय होना चाहिए।

4) गोचर भ्रमण मे ग्रहों के वक्री, मार्गी अतिचारी आदि के प्रभाव यदि जातक के जन्माग में सम्बधित ग्रह जिसभाव में वक्रीय है अथवा अतिचारी है तो दशा अन्तरा आदि के समय क्या प्रभाव करेगा यह भी गणना जरूरी है।

5) ग्रहों के गोचर फल पर वेध एवं प्रति वेध को दशा अन्तरा आदि के दृष्टिगत होने वाले प्रभाव को भी देखना आवश्यक है।

6) बाधक ग्रहों की नक्षत्रीय स्थिति का गोचर ग्रहों का भाव विशेष पर क्या फल या प्रभाव पड़ रहा है, इसकी गणना भी आवश्यक है ।

7) भावेश एवं कारक तथा अकारक ग्रह के सिद्धांत का गोचर पर प्रभाव को देखना फलित के लिए महत्वपूर्ण है ऐसे भी और भी महत्वपूर्ण बिंदु हैं जिन्हे आगामी अंक में प्रस्तुत किया जा सकेगा ।

8) ग्रह गोचर द्वारा शुभ फल मंत्रेश्वर महाराज ने 'फलदीपिका' में लिखा है। **यद भागवो गोचरतो विलग्नात्देशश्वरः सर्वोच्च सुहृदय ग्रहस्थः तद् भाववृद्धि कुरुते तदानीं बलान्वितश्चेत प्रजननेऽपि तस्य'** अर्थात् यदि कोई ग्रह जन्म कुंडली में बली होकर गोचर में भी अपनी उच्च राशि, अपनी राशि अथवा मित्र राशि में गोचर कर रहा हो,तो लग्न से जिस भाव में गोचर करेगा, उसी भाव के शुभ फल को बढ़ायेगा।

9) ग्रहगोचर में अशुभ फल के लिए फलदीपिका कार लिखते हैं। **बलोनितो जन्मनि पाकनाथौ मौढ्यं स्वनीचं रिपुमंदिरं वा। प्राप्तश्च यद भावमुपैति चारात् तदभाव नाशकुरुते तदानीम्।।** अर्थात् यदि कुंडली में कोई ग्रह जिसकी दशा चल रही हो, निर्बल है, अस्त है, नीच राशि में अथवा शत्रु राशि में स्थित है तो वह ग्रह गोचर में लग्न के जिस भाव को देखेगा या गोचर करेगा उस भाव का नाश करेगा।

घोषणा-पत्र

जीवन वैभव त्रैमासिक पत्रिका के स्वामित्व तथा अन्य बातों का ब्यौरा जो प्रतिवर्ष फरवरी के अंतिम दिन के बाद वाले अंक में प्रकाशित होता है।

प्रपत्र-चतुर्थ (देखें नियम-8)

1. प्रकाशन	– जीवन-वैभव 15-ए, महाराणा प्रताप नगर,जोन-1, प्रेस कॉम्पलेक्स, भोपाल।
2. प्रकाशन की अवधि	– त्रैमासिक
3. मुद्रक का नाम	– मेश प्रिन्ट्स
नागरिकता	– भारतीय
पता	– 105-ए, सेक्टर-एफ-गोविंदपुरा भोपाल-462023 (म.प्र.)
4. प्रकाशक का नाम	– प्रेमलता पाण्डेय स्वत्वाधिकारी, जीवन वैभव त्रैमासिकी
नागरिकता	– भारतीय
पता	– 15-ए, महाराणा प्रताप नगर, जोन–1, एम.पी. नगर, भोपाल
5. प्रधान संपादक का नाम	– श्रीमती प्रेमलता पाण्डेय
नागरिकता	– भारतीय
पता	– 15-ए, महाराणा प्रताप नगर, जोन–1, एम.पी. नगर, भोपाल
6. पत्र का स्वामित्व	– श्रीमती प्रेमलता पाण्डेय
नागरिकता	– भारतीय
निवास स्थान	– बी-14, सुरेन्द्र गार्डन, होशंगाबाद रोड, भोपाल

मैं प्रेमलता पाण्डेय, घोषणा करती हूँ, कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सही हैं।

प्रेमलता पाण्डेय

दिनाँकः 01-03-2023 **प्रकाशक के हस्ताक्षर**

घरेलु नुस्खों के अनुभूत प्रयोग

घरेलु नुस्खों के अनुभूत प्रयोग जीवन में रोग आदि को दूर रखने के पहले करे। साधारण छोटे-छोटे प्रयोग जिनको आप अवश्य अपनाए कुछ प्रयोग नीचे दिए गए है जो आपके घर में ही उपलब्ध है अजमाए और लाभ ले-

अजवायन का साप्ताहिक प्रयोग

सुबह खाली पेट सप्ताह में एक बार एक चाय का चम्मच अजवायन मुँह में रखें और पानी से निगल लें। चबाएँ नहीं। यह सर्दी, खाँसी, जुकाम, बदन दर्द, कमर-दर्द, पेट दर्द, कब्जियत और घुटनों के दर्द से दूर रखेगा। 10 साल से ऊपर सभी को एक चम्मच यानी 5 ग्राम लेना चाहिए !

मौसमी खाँसी के लिये सेंधा नमक

सेंधा नमक की लगभग 5 ग्राम डली को चिमटे से पकड़कर आग पर, गैस पर या तवे पर अच्छी तरह गर्म कर लें। जब लाल होने लगे तब गर्म डली को तुरंत आधा कप पानी में डुबो कर निकाल लें और नमकीन गर्म पानी को एक ही बार में पी जाएँ। ऐसा नमकीन पानी सोते समय लगातार दो-तीन दिन पीने से खाँसी, विशेषकर बलगमी खाँसी से आराम मिलता है। नमक की डली को सुखाकर रख लें एक ही डली का बार बार प्रयोग किया जा सकता है।

बैठे हुए गले के लिये मुलेठी का चूर्ण

मुलेठी के चूर्ण को पान के पत्ते में रखकर खाने से बैठा हुआ गला ठीक हो जाता है या सोते समय एक ग्राम मुलेठी के चूर्ण को मुख में रख कर कुछ देर चबाते रहे। फिर वैसे ही मुँह में रख कर जाएँ। प्रातः काल तक गला साफ हो जायेगा। गले के दर्द और सूजन में भी आराम आ जाता है।

मुँह और गले के कष्टों के लिये सौंफ और मिश्री

भोजन के बाद दोनों समय आधा चम्मच सौंफ चबाने से मुख की अनेक बीमारियाँ और सूखी खाँसी दूर होती है, बैठी हुई आवाज़ खुल जाती है,गले की खुश्की ठीक होती है और आवाज मधुर हो जाती है।

खराश या सूखी खाँसी के लिये अदरक और गुड़

गले में खराश या सूखी खाँसी होने पर पिसी हुई अदरक में गुड़ और घी मिलाकर खाएँ। गुड़ और घी के स्थान पर शहद का प्रयोग भी किया जा सकता है। आराम मिलेगा।

पेट में कीड़ों के लिये अजवायन और नमक

आधा ग्राम अजवायन चूर्ण में स्वादानुसार काला नमक मिलाकर रात्रि के समय रोजाना गर्म जल से देने से बच्चों के पेट के कीडे नष्ट होते हैं। बडों के लिये- चार भाग अजवायन के चूर्ण में एक भाग काला नमक मिलाना चाहिये और दो ग्राम की मात्रा में सोने से पहले गर्म पानी के साथ लेना चाहिये।

अरुचि के लिये मुनक्का हरड़ और चीनी

भूख न लगती हो तो बराबर मात्रा में मुनक्का (बीज निकाल दें), हरड़ और चीनी को पीसकर चटनी बना लें। इसे पाँच छह ग्राम की मात्रा में (एक छोटा चम्मच), थोड़ा शहद मिला कर खाने से पहले दिन में दो बार चाटें।

बदन के दर्द में कपूर और सरसों का तेल

10 ग्राम कपूर, 200 ग्राम सरसों का तेल- दोनों को शीशी में भरकर मजबूत ढक्कन लगा दें तथा शीशी धूप में रख दें। जब दोनों वस्तुएँ मिलकर एक रस होकर घुल जाए तब इस तेल की मालिश से नसों का दर्द, पीठ और कमर का दर्द और, मॉसपेशियों के दर्द शीघ्र ही ठीक हो जाते हैं।

जोड़ों के दर्द के लिये बथुए का रस

बथुआ के ताजा पत्तों का रस पन्द्रह ग्राम प्रतिदिन पीने से गठिया दूर होता है। इस रस में नमक-चीनी आदि कुछ न मिलाएँ। नित्य प्रातः खाली पेट लें या फिर शाम चार बजे। इसके लेने के आगे पीछे दो-दो घंटे कुछ न लें। दो तीन माह तक लें।

पेट में वायु-गैस के लिये ताजी छाछ और अजवायन

पेट में वायु बनने की अवस्था में भोजन के बाद 125 ग्राम दही के मट्ठे में दो ग्राम अजवायन और आधा ग्राम काला नमक मिलाकर खाने से वायु-गैस मिटती है। एक से दो सप्ताह तक आवश्यकतानुसार दिन के भोजन के पश्चात लें।

फटे हाथ पैरों के लिये सरसों या जैतून का तेल

नाभि में प्रतिदिन सरसों का तेल लगाने से होंठ नहीं फटते व फटे हुए होंठ मुलायम और सुन्दर हो जाते है। साथ ही नेत्रों की खुजली और खुश्की दूर हो जाती है।

सर्दी बुखार और साँस के पुराने रोगों के लिये तुलसी

तुलसी की 21 पत्तियाँ स्वच्छ खरल या सिल बट्टे (जिस पर मसाला न पीसा गया हो) पर चटनी की भाँति पीस लें और 10 से 30 ग्राम मीठे दही में मिलाकर नित्य प्रातः खाली पेट तीन मास तक खाएँ। दही खट्टा न हो । औषधि प्रातः खाली पेट लें। आधा एक घंटे पश्चात नाश्ता ले सकते हैं।

अधिक क्रोध के लिये आँवले का मुरब्बा और गुलकंद

बहुत क्रोध आता हो तो सुबह आँवले का मुरब्बा एक नग प्रतिदिन खाएँ और शाम को गुलकंद एक चम्मच खाकर ऊपर से दूध पी लें। क्रोध आना शांत हो जाएगा।

घुटनों में दर्द के लिये अखरोट सेवन करें

सवेरे खाली पेट तीन या चार अखरोट की गिरियाँ खाने से घुटनों का दर्द में आराम हो जाता है।

काले धब्बों के लिये नीबू और नारियल का तेल

चेहरे व कोहनी पर काले धब्बे दूर करने के लिये आधा चम्मच नारियल के तेल में आधे नीबू का रस निचोड़ें और त्वचा पर रगड़ें, फिर गुनगुने पानी से धो लें।

मसूढ़ों की सूजन के लिये अजवायन

मसूढ़ों में सूजन होने पर अजवाइन के तेल की कुछ बूँदें पानी में मिला कर कुल्ला करने से सूजन में आराम आ जाता है।

स्वास्थ्यवर्द्धक में आँवले का मुरब्बा

आँवले का मुरब्बा दिन में तीन बार सेवन करने से यह दिल की कम जोरी, धड़कन का असामान्य होना तथा दिल के रोग में अत्यंत लाभ होता है, साथ ही पित्त,ज्वर,उल्टी, जलन आदि में भी आराम मिलता है।

शारीरिक दुर्बलता के लिये दूध व दालचीनी

दो ग्राम दालचीनी का चूर्ण सुबह शाम दूध के साथ लेने से शारीरिक दुर्बलता दूर होती है और शरीर स्वस्थ हो जाता है। दो ग्राम दाल चीनी के स्थान पर एक ग्राम जायफल का चूर्ण भी लिया जा सकता है।

अच्छी नींद के लिये मलाई और गुड़

रात में नींद न आती हो तो मलाई में गुड़ मिला कर खाएँ और पानी पी लें। थोड़ी देर में नींद आ जाएगी।

कमजोरी को दूर करने का सरल उपाय

एक-एक चम्मच अदरक व आंवले के रस को दो कप पानी में उबाल कर छान लें। इसे दिन में तीन बार पियें। स्वाद के लिये काला नमक या शहद मिलाये

उदर रोग दूर करने के लिये ताजी छाछ

ताजी छाछ में काला नमक और भुना जीरा मिलाएँ और हींग का तड़का लगा दें। ऐसा मट्ठा पीने से हर प्रकार के पेट के रोग में लाभ मिलता है। यह बासी या खट्टा नहीं होना चाहिये।

बंद नाक खोलने के लिये अजवायन की भाप

एक चम्मच अजवायन पीस कर गरम पानी के साथ उबालें और उसकी भाप में साँस लें। कुछ ही मिनटों में आराम मालूम होगा।

माइग्रेन के लिये काली मिर्च, हल्दी और दूध उपयोगी

एक बड़ा चम्मच काली मिर्च का चूर्ण एक चुटकी हल्दी के साथ एक प्याले दूध में उबालें। दो तीन दिन तक लगातार रहें। माइग्रेन के दर्द में आराम मिलेगा।

गले में खराश के लिये जीरा

एक गिलास उबलते पानी में एक चम्मच जीरा और एक टुकड़ा अदरक डालें 5 मिनट तक उबलने दें। इसे ठंडा होने दें। हल्का गुनगुना दिन में दो बार पियें। गले की खराश और सर्दी दोनों में लाभ होगा।

सर्दी जुकाम के लिये दालचीनी और शहद

एक ग्राम पिसी दाल चीनी में एक चाय का चम्मच शहद मिलाकर खाने से सर्दी जुकाम में आराम मिलता है।

मधुमेह के लिये आँवला और करेला

एक प्याला करेले के रस में एक बड़ा चम्मच आँवले का रस मिला कर रोज पीने से दो महीने में मधुमेह के कष्टों से आराम मिल जाता है।

मधुमेह के लिये काली चाय

मधुमेह में सुबह खाली पेट एक प्याला काली चाय स्वास्थ्यवर्धक होती है। चाय में चीनी दूध या नीबू नहीं मिलाना चाहिये। यह गुर्दे की कार्यप्रणाली को लाभ पहुँचाती है जिससे मधुमेह में भी लाभ पहुँचता है।

माइग्रेन और सिरदर्द के लिये सेब का उपयोग

सिरदर्द और माइग्रेन से परेशान हों तो सुबह खाली पेट एक सेब नमक लगाकर खाएँ इससे आराम आ जाएगा।

स्वस्थ त्वचा का घरेलू नुस्खा

नमक, हल्दी और मेथी तीनों को बराबर मात्रा में लेकर पीस लें, नहाने से पाँच मिनट पहले पानी मिलाकर इनका उबटन बना लें। इसे साबुन की तरह पूरे शरीर में लगाएँ और 5 मिनट बाद नहा लें। सप्ताह में एक बार प्रयोग करने से घमौरियों, फुंसियों तथा त्वचा की सभी बीमारियों से मुक्ति मिलती है। साथ ही त्वचा मुलायम और चमकदार भी हो जाती है।

पेट साफ रखे अमरूद

कब्ज से परेशान हों तो शाम को चार बजे कम से कम 200 ग्राम अमरुद नमक लगाकर खा जाएँ, फायदा अगली सुबह से ही नज़र आने लगेगा। 10 दिन लगातार खाने से पुराने कब्ज में लाभ होगा। बाद में जब आवश्यकता महसूस हो तब खाएँ।

पपीते के बीज के स्वास्थ्य हमारा

पके पपीते के बीजों को खूब चबा-चबा कर खाने से आँखों की रोशनी बढ़ती है। इन बीजों को सुखा कर पावडर बना कर भी रखा जा सकता है। सप्ताह में एक बार एक चम्मच पावडर पानी से फाँक लेन पर अनेक प्रकार के रोगाणुओं से रक्षा होती है।

मुलेठी पेप्टिक अलसर के लिये

मुलेठी के बारे में तो सभी जानते हैं। यह आसानी से बाजार में भी मिल जाती है। पेप्टिक अल्सर में मुलेठी का चूर्ण अमृत की तरह काम करता है। बस सुबह शाम आधा चाय का चम्मच पानी से निगल जाएँ। यह मुलेठी का चूर्ण आँखों की शक्ति भी बढ़ाता है। आँखों के लिये इसे सुबह आधे चम्मच से थोड़ा सा अधिक पानी के साथ लेना चाहिये।

सरसों का तेल केवल पाँच दिन

रात में सोते समय दोनों नाक में दो दो बूँद सरसों का तेल पाँच दिनों तक लगातार डालें तो खाँसी -सर्दी और साँस की बीमारियाँ दूर हो जाएँगी। सर्दियों में नाक बंद हो जाने के दुख से मुक्ति मिलेगी और शरीर में हल्कापन मालूम होगा।

भोजन से पहले अदरक

भोजन करने से दस मिनट पहले अदरक के छोटे से टुकडे को सेंधा नमक में लपेट कर [थोड़ा ज्यादा मात्रा में] अच्छी तरह से चबा लें। दिन में दो बार इसे अपने भोजन का आवश्यक अंग बना लें, इससे हृदय मजबूत और स्वस्थ बना रहेगा, दिल से सम्बंधित कोई बीमारी नहीं होगी और निराशा व अवसाद से भी मुक्ति मिल जाएगी

(संकलित जानकारी)

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
जनवरी से मार्च 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मेष
चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

जनवरी 2023

मास का आरंभ मानसिक चिंताओं की कमी से होगा, अपने स्वभाव में परिवर्तन लाएं, उग्रता को कम करें, सेहत कमजोर रह सकती है, पारिवारिक चिंताएं तथा तनाव रह सकता है। संतान की चिंताओं को कम करने का प्रयास करें। यदि विद्याध्ययनरत हैं तो उसे योग्य वातावरण उपलब्ध कराएं। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय पर कार्य/अध्ययन नहीं होने से चिंताएं रहेगी। कृषक वर्ग को लाभप्रद समय रहेगा। व्यापारी वर्ग को आर्थिक चिंताएं तथा भ्रमण अधिकता रहेगी। मास के 7, 8, 15, 17, 19 एवं 23 अशुभ हैं।

फरवरी 2023

मास के पूर्वार्द्ध में दौड़-धूप अधिक रहेगी। मान-समान में वृद्धि होगी किसी विशिष्ट व्यक्ति का सहयोग मिलेगा। चिंताएँ कम होने लगेंगी। स्वास्थ्य में अनुकूलता रहेगी, पत्नी के स्वास्थ्य में कमजोरी रह सकती है। व्यापारी वर्ग को आर्थिक रुकावटें रहेंगी। कृषक वर्ग को विगत माह से कुछ राहत मिलेगी। नौकरी वर्ग को चिताएं अधिक, विद्यार्थी वर्ग को सहयोग मिलेगा। दिनाँक 1, 4, 7, 10, 13, 17, 23 कमजोर हैं यात्राएँ टालें।

मार्च 2023

मास का आरंभ व्यस्तताओं तथा आर्थिक खर्च से परिपूर्ण रहेगा। अधिक परिश्रम से तरक्की संभव है, आय के नए साधन बढ़ने के अवसर मास के उत्तरार्द्ध में मिलेंगे। स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए, पत्नी को वैचारिक तनाव रह सकता है। राजपक्ष में समय पर सफलता मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग को अनुकूलता, कृषक वर्ग को समय पर कार्य से संतोष, व्यापारी वर्ग को आर्थिक समस्याएं रहेंगी। सर्विस वालों को अधिकारियों की ओर से तनाव रहेगा। मास के 2, 4, 6, 8, 10, 11, 18, 21 तारीखें शुभ हैं।

वृषभ
ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

जनवरी 2023

विगत माह की कठिनाईयों से कार्य इस माह के अंत तक सफलता दायक रहेंगे। साझेदारों अथवा विश्वसनीय मित्र के भरोसे छोड़े गए कार्य की पुनः पुनरावृत्ति करनी पड़ेगी। कोर्ट, कचहरी के विवादों में असफलता नहीं हो इसका ध्यान रखें। व्यापारी वर्ग को आर्थिक हानि प्रद। नौकरी वर्ग वालों को सजगता से कार्य करना चाहिए। कृषक वर्ग को ऋणग्रस्तता में कमी करना हितकारक होगा। विद्यार्थी वर्ग का व्यर्थ भ्रमण संभव। मास की 1,3,6,9,11,19,27,29 शुभ है।

फरवरी 2023

यह माह आपको मांगलिक एवं धार्मिक कार्यों में व्यस्तताओं का रहेगा। आप की यात्राएं भी आनन्दायक रहेगी। सामाजिक दायित्वों का निर्वहन उत्तम तरीके से करें अन्यथा अपकीर्ति का भजन बनना पड़ेगा। मास के उत्तरार्द्ध में विरोधी वर्ग से शांति रहेगी। पारिवारिक सुख अच्छा रहेगा। व्यापारी वर्ग को राजभय रहेगा। कृषक वर्ग को अपनी गलती से धन लाभ में कमी होगी। नौकरी वालों को संतोषप्रद। विद्यार्थियों को कष्ट प्रद। (मास की 5, 6, 13, 14, 21, 24 शुभ हैं)

मार्च 2023

मास का पूर्वार्द्ध अनुकूल परिस्थिति वाला रहेगा। सफलता, सामजिक यश और पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। माता-पिता के स्वास्थ्य का ध्यान देना होगा। कार्य बोझ बढ़ा रहेगा लेकिन आपकी मनोशक्ति इसे समय पर पूरा करेगी। मास के उत्तरार्द्ध में व्यर्थ भ्रमण होगा। व्यापारी वर्ग को उत्तम लाभप्रद मास। नौकरी वर्ग वालों कार्य के प्रति सजगता रखना चाहिए। कृषक वर्ग को उत्तम लाभ, विद्यार्थी वर्ग को आर्थिक कठिनाईयां रहेंगी। मास की 3,6,9,12,18,21,27 तारीख शुभ है।

मिथुन
का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा

जनवरी 2023

मास के पूर्वार्द्ध में अपने प्रयास लाभदायक रहेंगे। कुछ रूके हुए कार्यपूर्ण होंगे। धनलाभ भी यथासंभव होगा। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। कुछ नजदीकी मित्रों से वैचारिक विवाद संभव है। व्यर्थ भ्रमण नहीं हो इसका ध्यान रखें। राजपक्ष के कार्यों को यथासमय निपटाएं। विद्यार्थी वर्ग को समय के दुरुपयोग से बचना चाहिए। कृषक वर्ग को समय पर सफलता तथा धनलाभ मिलेगा। व्यापारी वर्ग समस्याग्रस्त रहेगा, कर्मचारी वर्ग के लिए अपने कार्य से सफलता मिलेगी। मास की 3, 6, 9, 10, 13, 19, 22 एवं 26 शुभ हैं।

फरवरी 2023

मास का आरंभ व्यर्थ की चिंताओं में कमी करेगी। लेकिन आर्थिक पक्ष से माह कमजोर रहेगा। आय में रुकावटें संभव है, यह भी संभव है कि आय की अपेक्षा व्यय अधिक हो। व्यापारी वर्ग को अधिक सजगता आवश्यक। नौकरी वालों को समय से कर्म होने से संतोष, कृषक वर्ग का समय अनुकूल नहीं। खर्च वृद्धि और लाभ में कमी रहेगी। विद्यार्थी वर्ग को अपने श्रम का फल मिलेगा। मास की 3,5,9,12,13,21,22,28 शुभ है।

मार्च 2023

विगत माह के अधूरे कार्य इस माह में प्रयास करने पर सफल हो सकेंगे। उत्साह में कमी और स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। धन लाभ अच्छा रहेगा। संतान पक्ष के लिए प्रगति के द्वार खुलेंगे। किसी कार्य की रूपरेखा बनेगी जो पूरे परिवार के लिए हितकर होगी। व्यापारी वर्ग को अधिक प्रवास, नौकरी वालों को खर्चकारक अधिक, कृषक वर्ग के लिए अपने कार्य से संतोष, विद्यार्थी वर्ग को अधिक यश में लाभ। (मास की 1,3,6,9,14,16,19,21,26 शुभ हैं)

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
जनवरी से मार्च 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

कर्क
ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

जनवरी 2023

विगत माह के अधूरे कार्य इस माह में प्रयास करने पर सफल हो सकेंगे। उत्साह में कमी और स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। धन लाभ अच्छा रहेगा। संतान पक्ष के लिए प्रगति के द्वार खुलेंगे। किसी कार्य की रूपरेखा बनेगी जो पूरे परिवार के लिए हितकर होगी। व्यापारी वर्ग को अधिक प्रवास, नौकरी वालों को खर्चकारक अधिक, कृषक वर्ग के लिए अपने कार्य से संतोष, विद्यार्थी वर्ग को अधिक यश में लाभ। (मास की 1,3,6,9,14,16,19,21,26 शुभ हैं)

फरवरी 2023

मास में स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। अपने कार्य के प्रति भी सजगता रखें आर्थिक कठिनाईयाँ आ सकती हैं, पारिवारिक सदस्यों से वैचारिक विषमता रह सकती है, अपने स्वभाव में सामान्य परिवर्तन लाएं अपने दैनिक कार्यों को समय पर निपटाएं अन्यथा व्यवधान आ सकता है। यात्राएं अधिक हो सकती हैं, अपने नजदीकी मित्रों से विरोध नहीं हो, इसका भी ध्यान रखें। विद्यार्थी वर्ग के लिए माह कमजोर है। कृषक वर्ग को अधिक मेहनत से लाभ होगा। व्यापारी वर्ग को ऋणग्रस्तता संभव है। सर्विस वालों को समय अनुकूल रहेगा। मास में 1, 3, 9, 12, 18, 21, 27 शुभ रहेगा।

मार्च 2023

मास का आरंभ व्यय एवं व्यर्थ के भ्रमण कारक। व्यर्थ के आलस्य से दूर रहें, समय पर कार्य करें। संयुक्त परिवार एवं संतान की चिंताएं मास में रहेगी। नवीन मित्रों से अच्छे संबंध बनकर लाभ प्राप्त की योग बनेंगे। व्यापारी वर्ग से अच्छे संबंध बनकर लाभ प्राप्ति के योग बनेंगे। व्यापारी वर्ग को अच्छा लाभ कृषक वर्ग को खर्च की अधिकता, नौकरी वालों को अच्छा यश मिलेगा। (मास की 3,4,8,10,12,16,18,20,24,26 शुभ है)

सिंह
मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, ढू, रे

जनवरी 2023

मास का आरंभ व्यस्तताओं तथा आर्थिक खर्च से परिपूर्ण रहेगा। अधिक परिश्रम से तरक्की संभव है, आय के नए साधन बढ़ने के अवसर मास के उत्तरार्द्ध में मिलेंगे। स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए, पत्नी को वैचारिक तनाव रह सकता है। राजपक्ष में समय पर सफलता मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग को अनुकूलता, कृषक वर्ग को समय पर कार्य से संतोष, व्यापारी वर्ग को आर्थिक समस्याएं रहेंगी। सर्विस वालों को अधिकारियों की ओर से तनाव रहेगा। मास के 2, 4, 6, 8, 10, 11, 18, 21 तारीखें शुभ हैं।

फरवरी 2023

अपने कार्यदायित्वों में व्यस्तता रहेगी। कड़ी मेहनत से सफलता के नजदीक रहेंगे। अपने कार्यदायित्वों को किसी अन्य को सौंपने से आर्थिक कष्ट संभव है। अपने प्रिय व्यक्तियों के स्वभाव से मन में क्षोभ अर्थात् दुःख हो सकता है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। नौकरी वर्ग वालों को राहत रहेगी। व्यापारी वर्ग के लिए लाभप्रद समय है, कृषक वर्ग को समय पर लाभ मिलने में संदेह रहेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए अनुकूलता रहेगी। लेकिन दि. 5, 12, 13, 15, 22, 23, 25 अशुभ हैं।

मार्च 2023

शुभ समाचारों से प्रसन्नता। स्थाई संपत्ति लाभ। योजनाएँ पूर्ण होने के अवसर। मित्रों से वैचारिक विवाद। उत्तरार्द्ध सामान्य, स्वास्थ्य का ध्यान रखें। पारिवारिक सुख की वृद्धि। संतान सुख उत्तम। प्रगति की संभावना बनेगी। व्यापारी वर्ग को अपने किए गए कार्यों का यश और द्रव्य मिलेगा। कृषक वर्ग को खर्च की अधिकता तथा आर्थिक लाभ में रुकावटें। नौकरी वर्ग को भ्रमण अधिक विद्यार्थी वर्ग का उचित सहयोग। मास में 2, 4, 6, 8, 12, 18, 24 तारीखें उत्तम रहेंगी।

कन्या
टे, टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

जनवरी 2023

मास के प्रारंभ में शत्रु पक्ष पराजित होगा अपने कार्यों में गति मिलेगी किंतु पत्नी के स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए पारिवारिक चिंताएं रहेगी। मास के उत्तरार्ध में भ्रमण में सावधानी रखना चाहिए व्यर्थ खर्च पर नियंत्रण रखें व्यापारी वर्ग के लिए समय कमजोर कृषक वर्ग के लिए अनुकूलता नौकरी करने वालों के लिए सामान्य तथा विद्यार्थियों के लिए समय का सदुपयोग करने करना चाहिए माह की 5,7 ,13 ,18 ,21 एवं 29 शुभ फलदायक है।

फरवरी 2023

यह मास आपको धार्मिक खर्च तथा यात्रा के लिए व्यस्तता पूर्ण रहेगा अपनी कही गई बात को यश मिलेगा तथा कुछ सामाजिक दायित्व भी निर्वहन करना होगा मास का पूर्वार्ध उत्तम है व्यापारी वर्ग के लिए द्रव्य प्राप्ति कृषक वर्ग के लिए सामान्य तथा नौकरी करने वालों के लिए अनुकूल समय है विद्यार्थी वर्ग को समय का सदुपयोग करके लाभ उठाना चाहिए मास की दो 4 12 16 20 26 और 28 तारीख शुभ है।

मार्च 2023

यह माह आपके लिए किसी नवीन योजना को क्रियांवित करने का उत्तम अवसर उपलब्ध कराएगा। आपके निर्णय पर यह निर्भर करेगा कि आप उसका समय पर लाभ उठा सकते है या नही।व्यापारी वर्ग को समय का लाभ मिल सकेगा।कर्षिक वर्ग अपनी व्यस्तता अथवा आलस्य नहीहोतो लाभ प्रदरहेगा।नौकरी वर्ग को असंतोष और अनावश्यक तनाव रहेगा। विद्यार्थि वर्ग को समय की प्रतिकूलता के कारण लाभ में कमी। मास की 6, 9, 11, 14, 16,24,30 अनुकूल और शुभ रहेगा।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
जनवरी से मार्च 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

तुला
रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

जनवरी 2023

मास के आरंभ के 2 सप्ताह सफलता दायक सिद्ध होंगे कुछ पारिवारिक जिम्मेदारियां अधिक रहेगी मास के अंतिम 2 सप्ताह सावधानी से कार्य करने चाहिए , जिससे कि कार्य को दोबारा न करना पड़े और सफलता भी प्राप्त हो सके ।व्यापारी वर्ग को अधिक प्रयास से सफलता मिल सकेगी कृषक वर्ग को अपने कार्य में समय पर लाभ मिलेगा नौकरी करने वालों को सफलता और यश दोनों मिलेगा विद्यार्थी वर्ग अधिक ही अपना करने से ही सफल हो सकेगी। मास की 3 6 नो 12 ,15 ,18, 21एवं 27 तारीख में शुभ है ।

फरवरी 2023

मास की शुरुआत सफलता. एवं यशवर्धक है। अपने रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे तथा वांछित सहयोग भी मि मिलेगा तथा राजकीय कार्य में सफलता प्राप्ति के योग हैं पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी अनुकूल समय होने से समाज में भी प्रतिष्ठा और कार्य दायित्व मिलते रहेंगे मास के उत्तरार्ध में व्यापारी वर्ग को फायदा कृषक वर्ग को समुचित लाभ नौकरी करने वालों को कार्य की व्यस्तता अधिक विद्यार्थी वर्ग को अधिक सजगता से अध्ययन करने की आवश्यकता है मांस की 1,5,7,9 ,11, 21 ,23 एवं 26 तारीख शुभ है।

मार्च 2023

यह मास आपके लिए सामान्य फल दायक है। अपने किए हुए कार्यों को पुनः करना पड़ सकता है मास का द्वितीय सप्ताह आर्थिक लाभदायक है तीसरा एवं चौथा सप्ताह अपने कार्यों के लिए अनुकूल है स्थायित्व संबंधी कार्य से मन संतुष्ट रहेगा व्यापारी वर्ग को लाभअच्छा। कृषक वर्ग को अनुकूल समय।कर्मचारी वर्ग को अनावश्यक भ्रमण। तथा विद्यार्थी वर्ग को अपेक्षा अनुरूप सफलता मिलेगी।

वृश्चिक
तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

जनवरी 2023

यह माह आपको लाभप्रद सिद्ध होगा। पारिवारिक सुख संतोष तथा अपने कार्यों में धन लाभ प्राप्त होगा राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी मास के उत्तरार्ध में अपने किसी निकटतम व्यक्ति से विवाद ना हो इसका ध्यान रखें व्यर्थ भ्रमण से भी बचे व्यापारी वर्ग को यह मास शुभ है कृषक वर्ग को मास में अधिक खर्च नौकरी वर्ग को अपने कार्यों से संतुष्टि मिलेगी विद्यार्थी वर्ग को अपने अध्ययन में संतुष्टि मिलेगी। इस माह की 3,6, 9, 12, 16, 21, 24 तथा 29 तारीख शुभ है।

फरवरी 2023

इस माह स्वास्थ्य में ध्यान रखना चाहिए अपनी मान प्रतिष्ठा के अनुरूप ही कार्य करेंगे तो मन में प्रसन्नता रहेगी कुछ विरोध होने से मन दुखी रहेगा। परिवार में नई रिश्तेदारी होने के संयोग बनते हैं व्यापारी वर्ग के लिए समय अनुकूल कृषक वर्ग के लिए सफलता और यश तत्काल नौकरी करने वालों के लिए अपने वरिष्ठ की प्रसन्नता रहने के योग बनेंगे विद्यार्थी अपने कार्यों में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकेंगे इस माह की 4 , 8 ,12 ,16, 24, 26 तारीख शुभ है।

मार्च 2023

आपके राशि में दो सप्ताह का समय अपनी प्रतिष्ठा तथा पराक्रम को बढ़ाने का है,। परन्तु इसके लिए अनावश्यक शत्रुता रह सकती है ।मास के तीसरे एवं चौथे सप्ताह में अपने कार्यों के प्रति सजगता रखें अन्यथा नुकसान होना संभव है। व्यापारी तथा कृषक वर्ग को समय कमजोर कर्मचारी वर्ग को समय पर लाभ विद्यार्थी वर्ग के लिए मास उत्तम रहेगा ।

धनु
ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भ

जनवरी 2023

यह मास आप के लिए अनुकूल परिस्थितियों वाला रहेगा भाग्य के कुछ नए द्वार खुलने के योग हैं अच्छे मित्रों से संबंध बनेंगे व्यापारी वर्ग के लिए कुछ नए कार्य करने की इच्छाएं बनेगी कृषक वर्ग को थोड़ी कठिनाइयां रहेंगे नौकरी वर्ग को अधिक कार्य से संतोष मिलेगा विद्यार्थी वर्ग को सफलता के योग बनेंगे। मास की 2, 4, 8, 12, 18, 22, 26 और 30 शुभ है।

फरवरी 2023

मास का प्रारंभ आपके लिए अपने मन और मस्तिष्क को संतुलित रखकर कार्य करने के लिए है कुछ निर्णय से लाभ में कमी रह सकती है संतान की चिंता अधिक रहेगी। मास के अंतिम 2 सप्ताह विशेष सावधानी के हैं व्यापारी वर्ग अपने कार्य में सावधानी रखें कृषक वर्ग को समुचित लाभ प्राप्त होगा नौकरी करने वालों को अधिक दौड़ धूप रहेगी विद्यार्थी वर्ग को अधिक सजगता से अध्ययन करने से लाभ मिलेगा मास की एक 4 59 12 14 16 20 24 एवं 26 तारीख शुभ रहेगी।

मार्च 2023

मास में स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। अपने कार्य के प्रति भी सजगता रखें आर्थिक कठिनाईयाँ आ सकती हैं, पारिवारिक सदस्यों से वैचारिक विषमता रह सकती है, अपने स्वभाव में सामान्य परिवर्तन लाएं अपने दैनिक कार्यों को समय पर निपटाएं अन्यथा व्यवधान आ सकता है। यात्राएं अधिक हो सकती हैं, अपने नजदीकी मित्रों से विरोध नहीं हो, इसका भी ध्यान रखें। विद्यार्थी वर्ग के लिए माह कमजोर है। कृषक वर्ग को अधिक मेहनत से लाभ होगा। व्यापारी वर्ग को ऋणग्रस्तता संभव है। सर्विस वालों को समय अनुकूल रहेगा। मास में 1, 3, 9, 12, 18, 21, 27 शुभ रहेगा।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
जनवरी से मार्च 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मकर
भो, जा, जी, खी, खू, खे, खोग, गा,गी

जनवरी 2023

यह मास आपके लिए संतुलित दिमाग से काम करते हुए सफलता प्राप्त करने का है। मास का प्रारंभ कुछ चिंताएं देता है लेकिन उत्तरार्द्ध में लाभप्रद रहेगा। पारिवारिक चितांएं मास में रहेंगी। उनका निराकरण करने में अधिक य करना पड़ेगा। ऋणग्रस्तता को अधिक नहीं बढ़ने दें। विद्यार्थी वर्ग को माह सामान्य, कृषकों के लिए अपने कार्य के अनुपात में सफलतादायक रहेगा। व्यापारी वर्ग को समुचित लाभ के योग, कर्मचारी वर्ग को अधिक संतुष्टिप्रद मास में 4, 5, 9, 12, 13, 17 एवं 18 दिवस शुभ हैं।

फरवरी 2023

मास में अधिक य से सफलता मिलेगी। विशेषकर कामकाजी महिलाओं को सावधानी बरतनी होगी। पारिवारिक सुख अनुकूल रहेगा। भ्रमण की अधिकता रहेगी। अधिक जोख़िम भरे कार्यों में सावधानी रखें। स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव रह सकता है। विद्यार्थी वर्ग को सुविधाओं में कमी कृषक वर्ग को इच्छित कार्यों में रुकावटें, व्यापारी वर्ग को इस माह अधिक सजग रहकर कार्य करना चाहिए। कर्मचारी वर्ग के लिए समय अनुकूल है। इस मास 2, 5, 7, 12, 13, 20, 22 शुभ हैं।

मार्च 2023

मास का प्रारंभ खर्चकारक एवं भ्रमणकारक अनुकूल अधिकार एवं दायित्व दृष्टि, अपने कार्य की चिंताओं में कमी, व्यर्थ के विवाद में कमी। संतान की चिताएं रहेंगी। पारिवारिक सुख की वृद्धि होगी। किसी नए कार्य की योजना बनाएंगे। व्यापारी वर्ग को लाभ प्रद, नौकरी वालों को अधिक भ्रमण, कृषक वर्ग को समय पर धन लाभ, विद्याथी वर्ग को अपने प्रयास पर सफलता। (मास की तारीख 2,4,8,12,16,26,30 शुभ है)

कुंभ
गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

जनवरी 2023

व्यापार करने में तथा अपने स्वतंत्र कार्यो में यह मास उत्।म रहेगा। आपके अपने परिचय क्षेत्र से भी लाभ मिलने की संभावना बनेगी। आर्थिक दृष्टि से यह मास अनुकूल रहेगा संतान की तरफ से संतोष रहेगा। व्यापारी वर्ग को मैं आया मिलेंगे कृषक वर्ग को सफलता और यश मिले सर्विस वालों को विशेषकर अधिक कि अपनों से सफलता मिलेगी ।विद्यार्थी वर्ग को अपने समय का सदुपयोग नहीं करने से चिंता रहेगी। मास की 11, 13, 16, 19, 20, 23, 24 अनुकूल रहेगी।

फरवरी 2023

मास के प्रथम पक्ष में रोजगार के सुखद अवसर मिलेंगे। अधिकारियों की प्रसन्नता रहेगी। मान-समान बढ़ेगा। अपने नजदीकी मित्रों से सतर्क रहें। व्यर्थ के आरोप लगेंगे। मन में किसी बात को लेकर असंतोष रहेगा। उत्तरार्द्ध में पारिवारिक क्लेश अथवा पत्नी से वैचारिक विषमता रह सकती है, शांत रहें। व्यापारी वर्ग को अपने कार्यों में व्यवधान के साथ ही सफलता के अवसर, कृषक वर्ग को कठिनाईयाँ अधिक, नौकरी वर्ग को अपनी बुद्धिमत्ता एवं वाक्चातुर्य से लाभ, विद्यार्थी वर्ग को अप्रसन्नता दिनाँक 4, 6, 9, 13, 17 अशुभ हैं।

मार्च 2023

मास के प्रारंभ में आर्थिक रुकावटें दूर होंगी। अपने पारिवारिक उत्तरदायित्व को सफलता से निर्वहन कर सकेंगे। दापत्य सुख उत्तम रहेगा। किसी राजकीय कार्य के लिए प्रयास में सफलता मिलेगी। व्यर्थ भ्रमण एवं खर्च की संभावना मास के उत्तरार्द्ध में रहेगी। व्यापारी वर्ग को अपने कार्य से लाभ। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक रहेगी। विद्यार्थी वर्ग को समय पर सहयोग मिलेगा। मास की 2, 4, 6, 8, 10, 13, एवं 21 तारीखों में सावधानी बरतें।

मीन
दी, दु, थ, क्ष, ज, दे, दो, चा, ची

जनवरी 2023

यह माह आपके लिए लाभ प्रद रहेगा ।किसी अनजान व्यक्ति से कार्यों में सावधानी रखें। पारिवारिक आयु में व्यस्त रहेंगे संतान की ओर से चिंता कम होगी राज की कार्यों को अधुरा ना छोड़ें अन्यथा रुकावटें आएगी व्यापारी वर्ग को समय प्रतिकूल है । कृषक वर्ग को कार्यों में सफलता ।नौकरी वर्ग वालों को अधिक सजगता से कार्य करना चाहिए विद्यार्थी वर्ग को समस्याएं अधिक रहेंगी।मास के 9,11,13,16, 19, 24,एवं30शुभ है।

फरवरी 2023

इस माह में आपको कार्य में सफलता के लिए अपने आत्मविश्वास को प्रबल करना होगा। पहले से तय शुदा कार्यों को यथावत निवर्तित करने का उत्तम समय है। पत्नी के स्वास्थ्यका ध्यान रखें।संतान की ओर से सुख,संतोष। व्यापारी वर्ग को अपने कार्य सीमित समय में करना चाहिए। कृषक वर्ग को समय पर लाभ मिलेगा। नौकरी करने वालों को समय पर कार्य निष्पादन नहीं होने से तनाव हेगा विद्यार्थी वर्ग का उत्तम समय। मास की 12, 14, 18, 24, 28 शुभ है।

मार्च 2023

यह मास आपको रचनात्मक कार्य क्रमों में अधिक व्यस्त रखेगा। मित्रों से संबंध में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। अधिकारी वर्ग की प्रसन्नता रहेगी। सामाजिक यस अच्छा मिलेगा। पारिवारिक चिंता भी इस माह अधिक रहेगी। व्यापारी वर्ग को अपने कार्यों में सामान्य व्यवधान रहेगा। कृषक वर्ग को समय पर लाभ मिलेगा। नौकरी करने वालों को यह मास सामान्य रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को अपने कार्य दायित्व पर अधिक ध्यान देना होगा।मास की5,7,10,16,19,22,29 शुभ है।

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
जनवरी से मार्च 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

जनवरी 2023 के व्रत पर्व

1 जनवरी, रविवार - ईस्वी नववर्ष 2023

2 जनवरी, सोमवार - पुत्रदा एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)

4 जनवरी, बुधवार - बुध प्रदोष व्रत

6 जनवरी, शुक्रवार - पूर्णिमा, शाकंभरीव्रत

8 जनवरी, रविवार - रविपुष्य योग

10 जनवरी, मंगलवार - संकष्टी चतुर्थी व्रत

12 जनवरी, गुरूवार - स्वामी विवेकानन्द जयन्ती

13 जनवरी, शुक्रवार - लोहिणी उत्सव (पंजाब)

14 जनवरी, शनिवार - मकरराशि में सूय रात्री 8/5

15 जनवरी, रविवार - मकर संक्रान्ति पुण्य स्नान
(सूर्योदय से सूर्यास्त तक)

18 जनवरी, बुधवार - षडतिला एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)

19 जनवरी, गुरुवार - गुरू प्रदोष व्रत

21 जनवरी, शनिवार - मौनी अमावस्या/शनिश्चरी अमावस्या

22 जनवरी, रविवार - गुप्त नवरात्री प्रारंभ

23 जनवरी, सोमवार - नेताजी सुभाषचन्द्र जयंती

25 जनवरी, बुधवार - वैनायकी चतुर्थी व्रत/वरदा चतुर्थी व्रत

26 जनवरी, गुरूवार - बसंत पंचमी

27 जनवरी, शुक्रवार - मन्दार षष्ठी

28 जनवरी, शनिवार - नर्मदा जयन्ती पर्व/भानुसप्तमी

30 जनवरी, सोमवार - महानन्दनवमी

शुभ मुहूर्त जनवरी 2023

1 जनवरी, रविवार - वाहन क्रय, अन्नप्राशन, अक्षारंभ, प्रसूति का स्नान सवेरे 9.00 से 12.15

3 जनवरी, मंगलवार - प्रसूति का स्नान सवेरे 11.15 से दिन में 13.30

4 जनवरी, बुधवार - वाहन क्रय 10.30 से 12.15 दिन में

5 जनवरी, गुरूवार - प्रसूति का स्नान सवेरे 9.15 से 12.30

6 जनवरी, शुक्रवार - वाहन क्रय, भूमिपूजन, सम्पत्ति क्रय, प्रसूति का स्नान सूर्योदय से 10.30 सवेरे

7 जनवरी, शनिवार - पूंजीनिवेश दिन में 13.30 से 15.30

8 जनवरी, रविवार - नलकूप, कुंआ, वाहन क्रय, अक्षरारंभ, प्रसूति का स्नान सवेरे 9.30 से 12.15 दिन में

9 जनवरी, सोमवार - नलकूप, कुंआ खोदना सवेरे 9.15 से 10.25

12 जनवरी, गुरूवार - भूमि/भवन क्रय, प्रसूति का स्नान, वाटिका रोपण, कृषि कार्य, धानरोपण दोपहर 12.05 से 13.30

13 जनवरी, शुक्रवार - वाहन क्रय, खेत जोतना, बीज बोना, आभूषण क्रय सवेरे 8.00 से 10.30, दिन में 12 से 13.10

15 जनवरी, रविवार - वाहन क्रय, प्रसूति का स्नान, खेत जोतना, बीज बोना, वाटिकारोपण सवेरे 9.30 से 12.15 दिन में

16 जनवरी, सोमवार - पूंजीनिवेश सांय 16.30 से 19.30

18 जनवरी, बुधवार - गृहप्रवेश, पूंजीनिवेश, धनसंग्रह, बीज बोना सवेरे 10.30 से 12.15 दिन

22 जनवरी, रविवार - वाहन क्रय सवेरे 9.15 से दिन में 12.20

23 जनवरी, सोमवार - नामकरण, अन्नप्राशन सवेरे 9.00 से 10.15 सायं 16.30 से 19.30

25 जनवरी, बुधवार - उपनयन, गृहप्रवेश, नलकूप कुंआ, नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना सायं 16.30 से 18.15

26 जनवरी, गुरूवार - उपनयन, गृहप्रवेश, नवीन व्यापार, भूमि/भवन क्रय, प्रसूति का स्नान सवेरे 10.30 से 12.15 दिन

27 जनवरी, शुक्रवार - मुण्डन, गृहप्रवेश, वाहन क्रय, नवीन व्यापार, भूमि भवन क्रय सूर्योदय से सवेरे 10.15

30 जनवरी, सोमवार - गृहप्रवेश, नवीन व्यापार, देवप्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण सवेरे 9.15 से 10.30

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
जनवरी से मार्च 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

फरवरी 2023 के व्रत पर्व

1 फरवरी, बुधवार - जयाएकादशी व्रत स्मार्त एवं वैष्णव

2 फरवरी, गुरूवार - गुरू प्रदोष व्रत/तिल द्वादशी/भीष्म द्वादशी

5 फरवरी, रविवार - माघी पूर्णिमा/संत रविदासजी जयन्ती

9 फरवरी, गुरूवार - संकष्टी चतुर्थी व्रत

13 फरवरी, सोमवार - श्रीनाथजीपाओत्सव

14 फरवरी, मंगलवार - सीताष्टमी

16 फरवरी, गुरूवार - विजया एकादशी व्रत (स्मार्त)

17 फरवरी, शुक्रवार - विजया एकादशी व्रत (वैष्णव)

18 फरवरी, शनिवार - शनि प्रदोष व्रत

19 फरवरी, रविवार - छत्रपति शिवाजी जयन्ती

20 फरवरी, सोमवार - सोमवती अमावस्या पर्व

22 फरवरी, बुधवार - मधुक तृतीया

23 फरवरी, गुरूवार - वैनायकी चतुर्थी व्रत

26 फरवरी, शनिवार - होलाष्टक प्रारंभ

शुभ मुहूर्त फरवरी 2023

2 फरवरी, गुरूवार - उपनयन सवेरे 6.30 से 7.30 प्रारंभ या दिन में 12.05 से 13.30

3 फरवरी, शुक्रवार - मुण्डन, वाहन क्रय सूर्योदय से सवेरे 10.5, दिन में 12.5 से 13.35

5 फरवरी, रविवार - उपनयन, वाहन क्रय सवेरे 9.15 से दिन में 12.10

6 फरवरी, सोमवार - नलकूप, कुंआ खोदना सवेरे 9.00 से 10.15/ सायं 16.15 से 17.40

8 फरवरी, बुधवार - उपनयन, विद्यारंभ, बीज बोना सूर्योदय से 9.15/ सवेरे 10.30 से 12.10 दिन में

10 फरवरी, शुक्रवार - मुण्डन, गृहारंभ, भूमिपूजन, गृहप्रवेश, वाहन क्रय, नवीन व्यापार, प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध सूर्योदय से सवेरे 10.15 दिन में 12.00 से 13.15

12 फरवरी, रविवार - वाहन क्रय, विद्यारंभ, अन्नप्राशन सवेरे 9.15 से 10.29

14 फरवरी, मंगलवार - प्रसूति का स्नान, पूंजीनिवेश दिन में 10.40 से 13.15

15 फरवरी, बुधवार - मुण्डन सवेरे 10.40 से 12.15 दिन में

16 फरवरी, गुरूवार - भूमि/भवन क्रय, प्रसूति का स्नान, धानरोपण, बीज बोना, खेत जोतना दिन में 12.05 से 13.30

17 फरवरी, शुक्रवार - गृहप्रवेश, नवीन व्यापार, विद्यारंभ सूर्योदय से सवेरे 10.15

22 फरवरी, बुधवार - गृहप्रवेश, नवीन व्यापार, अन्नप्राशन, नामकरण, जातकर्म सूर्योदय से सवेरे 11.30

23 फरवरी, गुरूवार - गृहप्रवेश, नवीन व्यापार, भूमिभवन क्रय/पूंजी निवेश सम्पत्ति क्रय सवेरे 10.30 से 12.15

24 फरवरी, शुक्रवार - उपनयन, मुण्डन, वाहन क्रय, नवीन व्यापार, धान्य संग्रह सूर्योदय से दिन में 10.15

25 फरवरी, शनिवार - कणवेध, जातकर्म, खेत जोतना, बीज बोना, नामकरण 12.15 से 13.30 दिन में

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
जनवरी से मार्च 2023

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मार्च 2023 के व्रत पर्व

2 मार्च, बुधवार - आमलकी एकादशी व्रत (स्मार्त)

3 मार्च, शुक्रवार - आमलकी एकादशी व्रत (वैष्णव)

4 मार्च, शनिवार - शनि प्रदोष व्रत

5 मार्च, रविवार - नन्दत्रयोदशी

6 मार्च, सोमवार - होलिका दहन (प्रदोष वेला) 7 मार्च सूर्योदय के पहले

7 मार्च, मंगलवार - होलिका (धुलेण्डी पर्व)

8 मार्च, बुधवार - महिला दिवस

11 मार्च, शनिवार - संकष्टी चतुर्थी व्रत

12 मार्च, रविवार - रंगपंचमी पर्व

13 मार्च, सोमवार - एकनाथ षष्ठी

14 मार्च, मंगलवार - शीतला सप्तमी

16 मार्च, गुरूवार - मीन संक्रान्ति/खरमास

17 मार्च, शुक्रवार - दशामाता व्रत

18 मार्च, शनिवार - पापमोचनी एकादशी (स्मार्त एवं वैष्णव)

19 मार्च, रविवार - रवि प्रदोष व्रत

21 मार्च, मंगलवार - अमावस्या/देव पितृकार्य भौमवती अमावस्या

22 मार्च, बुधवार - गुड़ी पड़वा/नवरात्री पर्व/
घटस्थापना/ज्योतिष दिवस

23 मार्च, गुरूवार - बालेन्दुव्रत/श्री झूलेलाल जयन्ती

24 मार्च, शुक्रवार - अनक संवत्सर के बाद पिंगल प्रारंभ

25 मार्च, शनिवार - वैनायकी चतुर्थी व्रत

26 मार्च, रविवार - कल्पादितिथि/श्री लक्ष्मी व्रत

27 मार्च, सोमवार - स्कन्दषष्ठी

28 मार्च, मंगलवार - कमला सप्तमी

29 मार्च, बुधवार - दुर्गाष्टमी व्रत

30 मार्च, गुरूवार - श्रीराम नवमी पर्व

(14 मार्च से सूर्य मीन राशि में होने से मल मास)

शुभ मुहूर्त मार्च 2023

1 मार्च, बुधवार - वाहन क्रय सवेरे 10.30 से 12.15

2 मार्च, गुरूवार - भूमि/भवन क्रय, वाहन क्रय दिन में 12.05 से 13.30
सायं 16.30 से 18.10

3 मार्च, शुक्रवार - वाहन क्रय दिन में 12.00 से 13.30

8 मार्च, बुधवार - नवीन व्यापार, देव प्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण, वाटिका रोपण, अन्नप्राशन, नामकरण सवेरे 10.30 से 12.05

9 मार्च, गुरूवार - नवीन व्यापार, वाहन क्रय, प्रसूति का स्नान, जातकर्म देवप्रतिष्ठा, अन्नप्राशन, नामकरण दिन में 12.05 से 13.30

10 मार्च, शुक्रवार - नवीन व्यापार, वाहन क्रय, जातकर्म, अन्नप्राशन, देवप्रतिष्ठा, पूंजी निवेश, नामकरण सूर्योदय से 10.30 दिन में 12.05 से 13.30

12 मार्च, रविवार - वाहन क्रय, प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, पूंजी निवेश सवेरे 9.15 से दिन में 12.30

13 मार्च, सोमवार - देव प्रतिष्ठा
सवेरे 9.00 से 10.15/दिन में 16.30 से 18.10

16 मार्च, गुरूवार - भूमि/भवन क्रय दिन में 12.15 से 13.30

22 मार्च, बुधवार - नव दुर्गा घटस्थापना सवेरे 6.10 से 7.40, 11.19 से 12.05, दिन में 15.57 से 18.05

27 मार्च, सोमवार - वाहन क्रय सायं 16.30 से 18.15

29 मार्च, बुधवार - दुर्गाष्टमी पूजन, वाहन क्रय सवेरे 10.30 से 12.50 दिन में, सायं 16.30 से 18.15

30 मार्च, गुरूवार - दुर्गा नवमी, हवन पूजन, वाहन क्रय सवेरे 7.15 से 12.15 दिन में, सायं 16.15 से 18.30

31 मार्च, शुक्रवार - वाहन क्रय दिन में 12.00 से 13.30

(सूर्य मीन राशि में होने से मलमास में मुहूत नहीं है)

(गुरू अस्त 30 मार्च से)

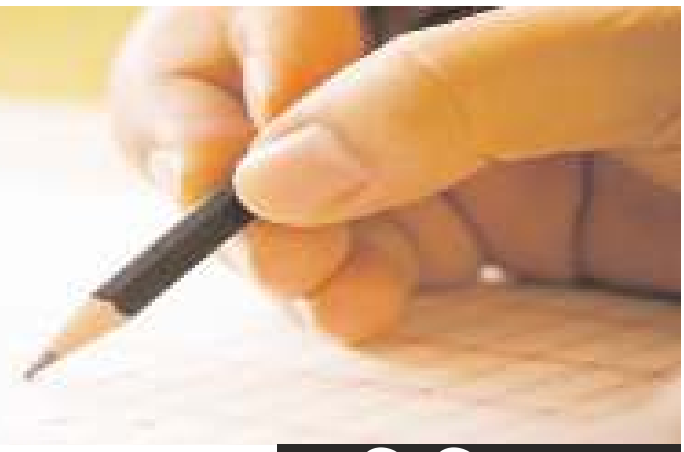

आपके पत्र

प्रतिक्रियाएं

आदरणीय सम्पादक महोदय

मेरे एक मित्र के यहां जीवन में हो पत्रिका देखने को मिली उसके अंदर पठनीय सामग्री को देखकर ऐसा लगा कि पूरे परिवार की एक समग्र पत्रिका है जिसमें ज्योतिष मार्गदर्शन और भारतीय परंपराओं का उद्देश्य में प्रभावित होकर जीवन वैभव की आजीवन सदस्यता प्राप्त कर रहा हूं कृपया नियमित भेजते रहें।

विनोद कुमार सिंघल, विजय नगर इंदौर मध्य प्रदेश

श्री सिंघल जी आपके द्वारा पत्रिका को पढ़कर पूरे परिवार के लिए उत्तम माना यह पढ़कर प्रसन्नता हुई तथा आपको आजीवन सदस्यता की सूची में सूचीबद्ध कर लिया है नियमित रूप से पत्रिका प्राप्त होती रहेगी आपसे अनुरोध है कि इसी प्रकार हमारे भारतीय परंपरा एवं ज्ञान के विकास और विस्तार के लिए अपने मित्रों को भी इस ओर कोई करें ताकि यह ज्ञान यज्ञ में आपकी भी सहयोग के रूप में आहूति मिल सके ।

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
सम्पादक

आदरणीय श्री हेमचंद्र जी पांडेजी नमस्कार

जीवन वैभव पत्रिका में विषय का चयन और सुंदर कलेवर को देखकर पत्रिका बहुत ही आकर्षक प्रतीत हुई यह पत्रिका पूरे परिवार के लिए पठनीय उत्तमप्रकाशन है अत्यंत लाभकारी तथा समाज के कल्याणकारी विषय की पत्रिका प्रकाशन के लिए आपको बहुत-बहुत हार्दिक धन्यवाद । पत्रिका का त्रैवार्षिक सदस्यता शुल्क भेजी है तदनुसार सदस्यता बनाने का कष्ट करे ।

सन्दीप सिंह सोंधी, जलवायु टावर्स कलकत्ता

सम्माननीय श्री पांडे जी

आपके रतलाम प्रवास के समय आपसे भेंट हुई तथा आपके माध्यम से ही जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त हुई वैसे मैं अपने मित्रों के यहां पत्रिका पढ़ लेता हूं परंतु इच्छा हुई कि इसका क्रय वार्षिक सदस्य बना जाए पत्रिका बहुत ही ज्ञानवर्धक और मार्गदर्शक प्रतीत हुई कृपया मुझे त्रै वार्षिक सदस्य बनाने का कष्ट करें। पत्रिका में प्रकाशित आवेदन पत्र शुल्क के साथ प्रदाय कर रहा हूं।

जीएस जोशी सुयोग्य परिसर रतलाम मध्य प्रदेश

सम्मानीय श्री संदीप सिहजी कलकत्ता एवं जीएस जोशी जी रतलामआपकों त्रैवार्षिक सदस्य बनने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद आपको जीवन वैभव पत्रिका स्वास्थ्य की दृष्टि से ज्ञानवर्धक तथा भविष्य की दृष्टि से मार्गदर्शक प्रतीत हुई वास्तव में इसमें उत्तम आलेख प्रकाशित करने एवं पूरे परिवार के लिए पठनीय होसके इस के लिए संपादक मंडल पूरा ध्यान रखता है। उत्तम सामग्री का संपादक मण्डल द्वारा चयन होने के पश्चात ही प्रकाशन के लिए योग्य पायी जाकर जीवन वैभव में प्रकाशन हेतु प्रस्तुत की जाती है । इस प्रकाशन के त्रैवार्षिक सदस्य के रुपमे जीवन वैभव परिवार में सम्मिलित होने के लिए आपका आभार तथा आपसे अनुरोध है कि अपने मित्रों को भी इस ओर प्रेरित करें ताकि जीवन वैभव परिवार को आर्थिक रूपसे सशक्त बनाया जा सके।

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
सम्पादक

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु क्या करें?

जीवन वैभव पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है, इसे आप जैसे प्रबुद्ध पाठकों ने सराहा और इसकी प्रगति के लिए मार्गदर्शन दिया है। आपसे निवेदन है कि वार्षिक/त्रैवार्षिक/आजीवन सदस्यता की वृद्धि कर प्रचार-प्रसार संख्या बढ़ाने में सहयोग करें। सद्ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने से समाज में धनात्मक ऊर्जा का संचार होगा जो कि एक पुण्य कार्य है। अतः पुण्यकार्य में सहयोगी बनें।

अपने संस्थान का विज्ञापन दें

आप अपने संस्थान का विज्ञापन यदि इस त्रैमासिक एवं संग्रहणीय जीवन वैभव में देंगे तो लगातार तीन माह ही नहीं जब तक यह पत्रिका पाठक के पास सुरक्षित रहेगी, आपके संस्थान का स्मरण होता रहेगा। अतः शीघ्रता करें अपनी विज्ञापन निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

अपने घर बैठे जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करें

जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करने के लिये आपको जीवन वैभव पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन पत्र पत्रिका में से निकालकर अपना नाम पता स्पष्ट रूप से उल्लेख कर वार्षिक/त्रैवार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता का निर्धारित शुल्क जीवन वैभव नाम से इलाहाबाद बैंक जोकि वर्तमान में इण्डियन बैंक है इसमें जीवन वैभव पत्रिका का

खाता नंबर 50159870448

खाते का नाम – जीवन वैभव

आय एफ एस सी कोड – IDIB000B796

ब्रांच कोड – 4197

MICR code – 462019018

के अनुसार खाते में राशि जमा कराकर उसकी स्लीप तथा अपना पता वाट्सएप कर देवें ताकि पत्रिका नियमित भेजी जा सके।

जीवन वैभव के सदस्यों से आग्रह

जिन सदस्यों के सदस्यता शुल्क राशि समाप्त हो गई है उनसे अनुरोध है कि उपरोक्त दर्शाए अनुसार जीवन वैभव के खाते में राशि जमाकर सदस्यता नियमित कर लें।

संपादक

जीवन वैभव

15-ए,महाराणा प्रताप नगर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल

संपर्क: 9425008662; **ईमेल:** hcp2002@gmail.com

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु आवेदन

नाम .....

डाक का पूरा पता .....

.....

.....

दूरभाष/मोबाईल .....

सदस्यता ..... आजीवन/ त्रैवार्षिक/ वार्षिक

सदस्यता शुल्क का विवरण **5000/- 500/- 200/-**

बैंक ड्राफ्ट क्रमांक ..... दिनाँक .....

चैक क्रमांक ..... दिनाँक .....

जीवन वैभव के नाम से इंडियन बैंक अरेरा कॉलोनी शाखा भोपाल के खाता नं. 50159870448 में जमा की गई राशि की बैंक स्लिप की फोटो प्रति।

त्रैमासिक पत्रिका ''जीवन वैभव'' के बारे में आपकी राय:-

.....

.....

.....

.....

.....

पाठक के हस्ताक्षर

पता:

जीवन वैभव

15-ए,महाराणा प्रताप नगर

प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल

संपर्क: 9425008662

ईमेल: hcp2002@gmail.com

नोट: उपरोक्त जानकारी डाक/कोरियर/ई-मेल द्वारा प्रेषित करें। ताकि जीवन वैभव की सदस्यता देते हुए आगामी अंक की प्रति प्रेषित की जा सके।

ज्योतिष प्रश्नोत्तरी कूपन

नाम : .....

पता : .....

जन्म तारीख : .....

जन्म समय : .....

जन्म स्थान : .....

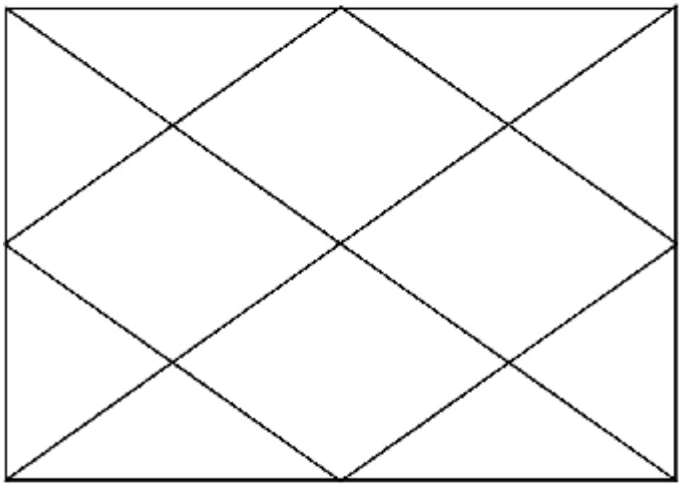

कोई एक प्रश्न .....

.....

.....

भवदीय

.....

नोटः- जीवन वैभव के विद्वान लेखकों और पाठकों के द्वारा ज्योतिष परामर्श पत्रिका के माध्यम से चाहा है हमारे द्वारा ज्योतिष परामर्श कूपन उपरोक्तानुसार दिया गया है इसकी पूर्ति करते हुए हमें प्राप्त होने पर ज्योतिष विद्वानों का एक मण्डल विचार-विमर्श उपरांत परामर्श उत्तर नाम प्रकाशित नहीं करते प्रदाय करेगा।

ज्योतिष प्रश्नोत्तरी
जीवन वैभव
15-ए, महाराणा प्रताप नगर
प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल

परिवार के सभी सदस्यों के लिए उपयोगी एवं मार्गदर्शक पुस्तक

सुप्रभात की अमृतवाणी

मूल्य : 50/- केवल

शिक्षाप्रद-जीवनोपयोगी सदुपदेशों पर आधारित पुस्तक डाक/ कोरियर से जीवन वैभव कार्यालय से प्राप्त करें।

ज्योतिष मित्र

ज्योतिष के प्रारंभिक ज्ञान के लिए ज्ञानवर्द्धक पुस्तक है।

एक प्रति 150 रुपये + वी. पी. डाक/ कोरियर 50 रुपये इस प्रकार 200 रुपये भेजकर अपनी प्रति आज ही प्राप्त करें।

लेखक - डॉ. पं. हेमचन्द्र पाण्डेय

व्यवस्थापक :
जीवन वैभव
15 ए, जोन- I, प्रेस कॉम्पलेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल

संपर्क : 9425008662
ईमेल : hcp2002@gmail.com

जीवन वैभव प्रकाशन की ओर से
ईस्वी नववर्ष 2023 की शुभकामनाओं सहित

JANUARY

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

FEBRUARY

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28				

MARCH

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

APRIL

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

MAY

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

JUNE

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

JULY

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

AUGUST

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

SEPTEMBER

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

OCTOBER

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

NOVEMBER

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

DECEMBER

S	M	T	W	T	F	S
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

Holidays

• 01 Jan-New year's, • 14 Makar Sankranti, • 26 Jan-Republic Day, • 8 Mar-Holi, • 30 Apr-Rama Navami,
• 07 Apr-Good Friday, • 05 May-Buddha Purnima, • 15 Aug-Independence Day, • 30 August-Raksha Bandhan
• 07 Sep-Janmashtmi, • 29 July-Muharram, • 2 Oct-Gandhi Jayanti, • 24 Oct-Dussehra,
• 12 Nov-Diwali, • 27 Nov-Guru Nanak Jaynti

जीवन वैभव ज्योतिष त्रैमासिक पत्रिका जो कि जीवन की समृद्धि के लिए गागर में सागर है–

प्रत्येक अंक में देश के सम्मानित एवं मूर्धन्य विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेख समाविष्ट रहते है। इस पत्रिका की सदस्यता निम्नानुसार ले सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता रू.100/–, त्रैवार्षिक रू. 300/–, आजीवन सदस्यता रू. 1800/–

विगत तीन वर्ष के एक साथ सजिल्द अंक 350 रू.।

उपरोक्तानुसार सदस्यता "**जीवन वैभव**" के नाम से अरेरा कॉलोनी की इण्डियन बैंक के
खाता क्र. 50159870448, आईएफएससी कोड IDIB000B796
के अनुसार जमा कर रसीद की प्रति कार्यालय को प्रेषित करें।

- जीवन वैभव पत्रिका में विविध विषय जो कि परिवार एवं समाज के लिये उपयोगी है, इन विषयों पर सामग्री प्रकाशित की जाती है, ज्योतिष, चरित्र–निर्माण, योग, होम्योपैथी, आहार चिकित्सा, धर्म, अध्यात्म आदि। जीवन वैभव में स्थाई स्तंभ प्रत्येक अंकों में प्रकाशित होते हैं जो कि संग्रहणीय हैं।
- वंदना', अमृतवाणी , वैभवदर्शन , गीता माता , उचितआहार, चिकित्सा , धर्मिक शिक्षाप्रद जानकारी, ज्योतिष एवं स्वास्थ्य, व्रत पर्व, विविध मुहूर्त, त्रैमासिक भविष्यफल आदि जानकारी प्रत्येक अंक में उपब्ध रहती है।
- महापुरूषों द्वारा दिए गए आर्शीर्वचन एवं सुखी जीवन के लिए अनमोल सुझाव पृथक से बाक्स के रूप में दिये जाते हैं जो पाठकों को लाभप्रद एवं रोचक लगते हैं।
- **जीवन वैभव का प्रत्येक अंक संग्रहणीय है, तथा जीवन वैभव के उपरोक्त पुराने उपलब्ध अंक कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।**

कार्यालय का पता **व्यवस्थापक जीवन वैभव**

15 ए. प्रेस काम्प्लेक्स, जोन–1 महाराणा प्रताप नगर, भोपाल म.प्र.
संपर्क : 9425008662, ईमेल : *hcp2002@gmail.com*